

❦ प्रार्थना ❦

प्राप्त पुरुषो' मे आपमे भविष्य निवेदन करता
 हूँ कि यह परम पवित्र जीवन चरित्र रूप पुस्तक
 श्रीमान् परम प० उपाध्यायजी महागजने लख
 कर मुद्राशुल्लकचैनना को मशोधन करने के
 लिये प्रदान किया अतः मेने आपकी आज्ञानुकूल
 इस पुस्तक को स्वयं द्वयनुसार सशोधन किया
 है यदि अब भी प्रेम तथा मेरे प्रसाद से कोई
 अशुद्धिरद्गड होता सरयावान् पुरुष क्षमा करें।
 धन्योक्ति रहा भा है कि - अक्षरमातरस्वर हान
 व्यञ्जनमन्त्रि। विवर्जित रंफम्, साधुभिरुग्र
 समञ्जनैर्य। कोविमह्यनि शास्त्रममृते॥१॥ इति
 अपिनुदत पुस्तक को आयुन लालो मिट्टीमल्ल,
 वायुगम, लुधियाना निवासी तथा ला० हरभग
 वान्दाम, गकरदाम कपूर्य ठावाले भावडा डडवी
 याजा लाहौर वा लाला कृशराम, यमनामल,
 सैकट्री जैनमभा जैनपर और धारुकुन्दनलाल
 सन आचरमीयर, सदानंद, लुधियाना निवासी,
 इन धर्म प्रेमी महाशयों ने व्यवयमे प्रकाशित
 कराया है जिसके प्रभाव से उक्त महाशयों ने एवं
 मे भी अतीव सुप्रसन्नता की प्राप्ति की है ॥
 जैनमुनि पण्डित ज्ञानचन्द

प्रस्तावना ।

विदित होये सर्व सृष्टिकर्तों को इस सत्कार षष्ठ में प्राणी मात्र का एक धर्म ही का आधार है ॥

धर्म के ही प्रभाव से आत्मा सद्गति को प्राप्त होता है । सा मानुष भव जाने का सारपदार्थ धर्म का नियम करना ही है अर्थात् धर्म निर्णय से सम्यक्त्व रत्न की प्राप्ति हो जाती है ॥

किन्तु इस अनादि प्रवादक सत्कार षष्ठ में मनेक प्रकार के धर्म प्रकटित हो रहे हैं जोकि (सब सय पससता गहतापरवय) इससूत्रके कथनानुसार बताव कर रहे हैं अर्थात् स्व भवकी प्रगता परमन को निंदा करते हैं ॥

किन्तु विद्वानों का यह पक्ष नहीं है कि पर सत्यपदार्थ की भी अपनी कृतियों द्वारा कटकित करना । विद्वानों का यही धर्म है कि सायासत्य का निर्णय करके सत्य को ग्रहण असत्य का परित्याग करना भवितु इस भारत भूमि में मनेक प्रकारके मन प्रवृत्त हो रहे हैं जैसे कि-

स्वामी व्यासन्द सरस्वती ओ न वेद वा एव इदं को ही सृष्टि कर्ता माना है ॥

इन्द्राचार्य ने एक शिव का ही सर्वोत्तम बनवाया है ॥

क्यासकृपिने एक वेदातद्गन का ही मुख्य रक्षक है ॥

कपिलदेश ने साकपद्गन में पञ्चविंशति ग्रन्थियों से ही सत्यकृत् मान लिया है इस प्रकार क्यादमुनि गौतमाचार्य ने भी मिन २ पदार्थ माने हैं ॥

किन्तु मनुमादि ऋषियोंने पञ्चक्रम या सृष्टिउत्पन्न विषय भइकादि से माना है पूर्व मीमांसको ने वेदविदिन हिंसा को गहिंसा ही करके लिखा है ॥

जीवन चरित्र सुनना न चाहे तथा ऐसा कौन है जो येमे महात्मा के गुणानुवाद न करे या ऐसा कौन है जो परम शांति मुद्राधारी सत्योपदेष्टा सद्गुरुलङ्घन भाचार्यपद के धारक श्रीमान् पूज्य महाराज के गुणों में रक्त न हो । अर्थात् भव्यगुण गुणादि में सदैव ही रक्त है ॥

भव्य जीवों के हृदयकपी कमल में उक्त महाकवि के गुण सदैव ही विराजमान रहते हैं ॥

भव्यजीव अपने तरने के वास्ते उक्त भाचार्यमहाराज जी के सदैव ही गुण की स्तुति करते रहते हैं क्योंकि जिन्होंने सूर्य समान जिनमग का इसलोक में प्रकाश किया अर्थात् स्यादवादवापी के द्वारा जीवकर्म को मिन्नर करके दिखाया तथा जिनके सदर भक्तकृतमत के व्याख्यान में अनेक ही सद्गुरुद्वय उपस्थित होते थे एस महामुनि का यह जीवन चरित्र है ॥

इस चरित्र ग्रन्थमें श्रीमान् परमपंडित भाचार्य स्वयं सदैवही नव विजय करने वाले जैनधम्म में सूर्य समान श्री १०८ पूज्यसोहनलाल जी महाराज जी ने मुसकय बहुत ही सहायता दी है साथ में बहुत से जीण पत्र भी प्रदान किये हैं जोकि यथास्थान इस ग्रन्थ में लिखे जावेंगे ॥

और श्री श्री १०८ गंगा घण्टेद्वयपाधि विभूषित आस्वामी गणपतिराय जी महाराज जी ने भी बहुत से पत्र इतिहास सुनाये हैं जो कि यथास्थान में दिए जावेंगे ॥

और श्रीमान् लाला यसीलाल सोताराम झलेरी नामा वाले ने भी इस पुस्तक के लिखते समय बहुत से पुस्तकों की सहायता दी है ॥

और बहुत से भव्यजीवों की सम्मति से यह ग्रन्थ लिखा गया है । भगवान् श्री भव्यजीवों के लिये यह ग्रन्थ अवश्यमेव ही हितकारी होवेगा ॥

उपाध्याय जैनमुनि श्री आत्मारामजी ।

भीर रत्न छत्ररामजी के पुत्र रत्न जगदरमल—लाला बस
तानाउ जो कि समुद्रमर जैनपना के मत्री हैं । भीर हसराम, मुल
राम बाबुराम ॥

यह भी रत्न विमानरुद्र धर्म में रक्त हैं भीर भगवानदेवी जिसका
लाला हेमराम जी के साथ विवाह हुआ था उस के एक बच्चा देवी
बम्बा उग्रराम हुए उसका विवाह निर्दोश में हुआ ॥

किन्तु तिमरे गौरी दुर्गादेवी नाम की दो पत्नियें फकीरराम
नामक एक पुत्र का जन्म हुआ । सो गौरी देवी का विवाह भगुनसर
में छात्रा घनराम के साथ हुआ और दुर्गादेवी का विवाह सुजानपुर में
विवाह गया ॥

विविध वना देविये धोपूय मगराम केने विशाल वन में
उग्रराम हुए भीर केने विष्णोर्ण कीर्ति पुनहुए कथोकि
पुनरुवाभममें सदाचारी मद्र अरजमठनि पदय थे
न ही मरिचक ॥

जब अमरसिंह जी पुनः धर्मतत्त्व में भाग्य तो दिनों दिन
पैराग्य भाग बढ़ने लगा धृति भुवि मार्ग में प्रवेश होगर् जो कुछ
सत्कारो पदाय थे वे अनियता दिखाने लगे मन निर्ममत्त्व में लग
गया धृति भाव धारण को आकाशा बढ़ती गई भी जिनवाणी ने
धर्म या जीव के स्वरूप को निम्न २ बार के दिखा दिया ॥

तब फिर चित्त में यह निदोष दिवा कि किसी मुनिराज के
निमित्तने पर होला धारण करूंगा ॥

फिर जितनेही समय के पदधान् भीमान् परम पद्धित श्रीस्थामी
रामलाल जी महाराज भी मगवान धर्ममान स्वामी के ८५वें पटो
परि विराजमान अपने अमृत करी कृतवाणी व द्वारा इस प्रांत में
मिष्टा पद का काट करत थे तब अमरसिंहजी में चित्त में निदोष
दिवा कि मैं भीमहाराज का दिव्य हाथर भीमगवत का भाग
मकाट बढ़ जिस करके बहुत स मध्य जीव मिष्टा पद को त्याग
कर सुगति के अधिकारी बने क्योंकि मनुष्य जन्म पानका यही स्तर
है कि धर्म के द्वारा परोपकार करना तब अमरसिंह जी में अपनी
बुद्धि पर पक्ष दुष्ट गृहस्थ (दास) करके बड़ लाये सब काम
उनका समर्पण कर दिया घर का भी नियम पूर्वक कार्य उन का हा
थ बढ़ा गया जितने काम यह हैं ॥

हाला घभीटावन्त १, मर्यामस्त २, श्रीहनुमन्त ३ घनैवा
मन्त ४ बेटु मन्त हाथी ५ जब भाग सब काम कर घर फिर पदा
देर योग्य धन मारुधिनी को भी देकर होला के करने धर्ममर में बड़
पट्टे पान् उस का में परम पद्धित भी स्थानी रामलाल जी महाराज
हा दिन्नी (हनुमन्त) में विराजमान थे तब भी अमरसिंहजी दिन्नी
को ही बड़े स्थान रहे उस समय में देव गण्डी का मबार न हाथ के
कारण से बहुत होगा हनुमन्त में जाने वाले मन्तर्दि मन्त
कारों से होने हुए दिन्नी में पहुँचने थे ॥

उप मनरसिंह जी पुनः अमृतसर में गए तो दिनों दिन
पैराग्य मात्र बढ़ने लगा अति मुक्ति भाग में प्रदेश हो गई जो कुछ
सत्तारो पड़ाय थे वे अनियन्ता दिखाने लगे मन निर्ममत्व में ला
गया मुनि मात्र धारणे को भावना बढ़ती गई थी जिनगणी ने
कम या जीव के स्वरूप को निम्न २ कर के दिखा दिया ॥

तब फिर विचार में यह निश्चय किया कि किसी मुनिराज के
मिलने पर दोहा धारण करूँ ॥

फिर कितनेक समय के पढ़ावात् भीमान परम पंडित श्रीस्वामी
रामलाल जी महाराज श्री नावान वर्तमान स्वामी के ८५वें पट्टे
पर विराजमान अपने अमृत रूपी भावधानों के द्वारा इस बात में
निष्ठा पथ का नाश करत थे तब मनरसिंहजी ने विचार में निश्चय
किया कि मैं आमहाराज का शिष्य हाकर धीमावत का भाग
प्रकाश कर जिस करके बहुत स मध्य अव मिष्टा पथ को त्याग
कर सुगति के अधिकारी बने क्योंकि मनुष्य जन्म पान का यही सार
है कि धर्म के द्वारा परोपकार करना तब मनरसिंह जी ने अपनी
बुद्धि पर पाव पुनः गुमारने (हास) करके बड़ लाये सब काम
उनका समर्पण कर दिया घर का भी निरम पूर्वक कार्य उन का हा
थ कहा गया जिनका नाम यह है ॥

छाटा घसीटमल्ल १, मर्यामल्ल २, सोहनलाल ३, घनैया
मल्ल ४ काटू मल्ल क्षत्री ५, जब आप सब काम कर चुके फिर यथा
योग्य घन सम्बन्धियों को भी देकर दीक्षा के करने अनन्तर से चल
पट्टे परन्तु उस काल में परम पंडित श्री स्वामी रामलाल आ महाराज
दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) में विराजमान थे तब श्री मनरसिंहजी दिल्ली
में भी हो चले गए रह उस समय में रेल गाड़ी का प्रचार न होने के
कारण से बहुधा लोग इन्द्रप्रस्थ में आने वाले सम्बन्धियों नामक
मार्गों से होते हुए दिल्ली में पहुँचने थे ॥

साधु होनहार हैं जैन धर्म के परमोपासक होंगे । सत्य है लोग माया शीघ्र ही फलोनून हो गए ।

पुन नामा पटियाला छोट्यागल इत्यादि नगरों में धर्मोपदेश देते हुओं ने १९०० का चतुर्मास अग्याला नगर में किया नगर में धर्मोपोन बहुत ही हुमा क्योंकि भी ममर्गमिह जी महाराज धमनेना ये सदैव ही धम वृद्धि म कटि यरु थ पुन धम के पून प्रसार से पर चारक थे चतुर्मास के अनंतर बनूड, खरड रोपड माछोवाडा, लुधियाना जगराग चूड चड जीरा कीराणपुर इत्यादि नगरों में सत्य धर्मोपदेश दत हुए जीवों का मननागर से तारते हुए बहुत से भायकों का भक्ति विव्रप्ति दाने स १९०१ का चतुर्मास करोदकोट में किया सा भी महाराज म जगल दश क लोगों पर महान् परावकार किया, बहुत से मव्यनना के भमृत रूप पित बाणी से भक्त करण पवित्र किये कथाकि भी महाराज में । नन बाणा क उटवारण की महान् शक्तिपी भार शरार का भान्ति पेसा थी कि बादिजन दशय करके ही रिवाद की भाशा त्याग कर दोक्षा क लिये उघत हाते थे ब्यावयान की भी शैली मजधनीय था ॥

भी महाराज ने इस चतुर्मास में भी उग्रार्ह सूत्रानुसार बहुत ही तप किया तथा सूत्रों का उपधान माम छादि (भाषम्लदि) भी तप किया, चतुर्मास क पदचात ग्रामानु ग्राम विहार करते हुए लोगों के चित्त के सदाय माश करते हुए भी महाराज भमृतसर में पधारे तब नगर में मत्यानद हा गया बहुत से लोग परमनवाले दर्शन करने का भाते थे पुन दर्शन करके मत्यानद होने थे क्योंकि भी महाराज पूर्ण व्यवस्था में भमृतसर में एक सुप्रसिद्ध जडौरियों में से नामाकित औदरी थे ॥

इस धल में ही भमृतसर में श्रीरामाजी नागर मल्ल जी महाराज

साधु होनहार हैं जैन धर्म के परमोद्यानक होंगे । सत्य है लोग
माया शीघ्र ही फलोन्मूल हो गई ।

पुनः नामा पटियाणा छोटागाल इत्यादि नगरों में धर्मोपदेश
देते हुयों ने १९०० का चतुर्मास अग्याला नगर में किया नगर में धर्मो
द्योत बहुत ही हुआ क्योंकि श्री भमरसिंह जी महाराज धर्मनेता थे
सदैव ही धर्म वृद्धि में कटि बद्ध थे पुनः धर्म के पूज्य प्रचार से पर
धारक थे चतुर्मास के अनंतर बनूड, खरड, रोपड, माछीगडा,
लुधियाना, जगताश बूड चक जीरा, फोरानपुर, इत्यादि नगरों में
सर्व धर्मोपदेश देते हुए जोधों को मजमागर से तारते हुए बहुत से
आपकों की भक्ति प्रकृति होने से १९०१ का चतुर्मास फरीदकोट में
किया सो भी महाराज न जगल देश के लोगों पर महान् परोपकार
किया, बहुत से भक्तियों के अमृत रूप जिन वाणी से भक्त करण
पवित्र किये क्योंकि श्री महाराज में जिन वाणी के उच्चारण की महान्
शक्ति थी और शरीर की शक्ति ऐसी थी कि वादिन दर्शन करके
ही पिवाद की भाशा त्याग कर दीक्षा के लिये उद्यत होते थे व्याख्यान
की भी शैली अकथनीय था ॥

श्री महाराज ने इस चतुर्मास में श्री उपार्ह सूत्रानुसार
बहुत ही तप किया तथा सूत्रों का उपधान भ्राम लादि (भाषण्णादि)
भी तप किया, चतुर्मास के पदचात भ्रामानु भ्राम विहार करते
हुए लोगों के चित्त के सशय नाश करते हुए श्री महाराज अमृतसर में
पधार तब नगर में अत्यानन्द ॥ गया बहुत से लोग परमतवाले
दर्शन करने को आते थे पुनः दर्शन करके अत्यानन्द होने थे क्योंकि
श्री महाराज पूर्ण व्यवस्था में अमृतसर में एक सुप्रसिद्ध जदौरियों में
से नामांकित जौहरी थे ॥

बस बस में ही अमृतसर में श्रीस्वामी नामर मल्ल जी महाराज

सत्य है ऐसे ही मिथ्या हठों से त्रिनमार्ग की यह दशा हो गई
॥ अर्थात् मूलतः शास्त्रे उत्पन्न हो गई हैं ॥

राजा मुस्ताकराय जी लाटा हीरालाल सड़वाले की पुत्री गाला
देवी के सगे भाई थे ॥

बीमासे के पदचात् श्री महाराज ने इन का भी हीनित किया यह
*महाराजा जी श्री महाराज के ज्येष्ठ शिष्य हुए फिर श्री मन्थजी महा
राज ग्रामामुग्राम विचरते हुए मन्थ जीओं की सत्योपदेश देते हुए
छादौर (लखपुर) में पधारे फिर कृष्णपुर (बम्बूर) में फिर किरौणपुर
हत्यादि नगरों में विचरते फिर फरीदकोट वाला भार्यों की विहितिना
स्वीकार करके १९०४ का बीमासा फरीदकोट में ही करदिया पूर्ववत्
ही धर्मोद्योग हुआ फिर बीमासे के पदचात् मन्थम विचर के १९५
का बीमास मालेरकोटले में किया सो मालेरकोटले में धर्मोद्योग बहुत
हो हुआ ज्ञान की वा तपादि की वृद्धि अतीव दूर क्योंकि उस काल में
मालेरकोटले में सूत्र कान का प्रचार था कई सत्संग शास्त्रज्ञ भी थे
अपितु धर्म की सत्यता भी महत् थी, किन्तु अब भी मन्थ नगरों की
अपेक्षा महत् ही है ॥

बीमासे के पदचात् ग्राम नगरों में विचरते हुए धर्मोपदेश देते
हुए अन्यथा समय भी महाराज नामानगर के समीप ही एक छोट्टा
वाला नामक वन नगर बसता है तिस नगर में पधारे जब रात्री का

ने रामनगर के धायकों से कहा कि यह घूटेराय जी तो समय से शिषित
हो गया है तुम क्यों धर्मिष्ठ भाग से प्रतिष्ठित होते ॥ तब रामनगर के
भाइयों ने कहा कि यदि घूटेराय जी धर्मस्थिति विविध भी करन
छाज्जाय तब भी हम ता रुक करके ही मानेंगे ॥

* श्री स्वामी मुस्ताकराय जी महाराज के शिष्य स्वामी
हीरालाल जी महाराज हुए त्रिन के शिष्य श्री स्वामी लखनजी गान्धि
यब भी महाराज विद्यमान हैं ॥

सत्य है ऐसे ही मिथ्या हठों से जिन मार्गों की यह दशा हो गई
ह मर्यात् नूतन शास्त्र उत्पन्न हो गई हैं ॥

लाला मुस्ताकराय जी छाटा हीरालाल मंडवाले की पुत्री जगला
देवी के सगे मारि थे ॥

बीमासे के पदचात् श्री महाराज ने इन का भी दीक्षित किया यह
*महाराज जी श्री महाराज के ज्येष्ठ शिष्य हुए फिर श्री पुण्यनी महा
राज नामानगर निचरते हुए मध्य जीवों की सत्पोगदेश देते हुए
छाहौर (छत्रपुर) में पधारे फिर कुशपुर (कसूर) में फिर किरीनपुर
हाथदि नगरों में निचरते फिर फरीदकोट वाले भाइयों की निरक्षितों
रखीकार करके १९०४ का बीमासा फरीदकोट में ही करदिया पूर्वधत्
ही धर्मोद्योत हुआ फिर बीमासे के पदचात् अनुक्रम विचर के १९५
का बीमास मालेरकोटले में किया सो मालेरकोटले में धर्मोद्योत बहुत
ही हुआ ज्ञान की या तपादि की वृद्धि अतः दूर क्योंकि उस काल में
मालेरकोटले में सूत्र ज्ञान का प्रचार था वह आत्मान शास्त्रस भी थे
अपितु धर्मों की सत्ता भी महत् थी, किन्तु अब भी मध्य नगरों की
अपेक्षा महत् ही है ॥

बीमासे के पदचात् नामानगरों में निचरते हुए धर्मोपदेश देते
हुए मध्यदा समय श्री महाराज नामानगर के समीप ही एक छीटा
थाल नामक उपनगर बसना है तिस नगर में पधारे जब रात्री का

ने रामनगर के भाव्यों से कहा कि यह घूटेराय जी तो समयसे दिग्विज
हो गया है तुम कभी पवित्र भाग से धनित हाते हू तब रामनगर के
भाइयों ने कहा कि यदि घूटेराय जी धनस्पति विनिय भी करने
लगजावे तब भी हम ता रुक करके ही मानेंगे ॥

* श्री स्वामी मुस्ताकराय जी महाराज के शिष्य स्वामी
हीरालाल जी महाराज हुए जिन के शिष्य श्री स्वामी तपस्वी गार्धिद
राय जी महाराज विराजमान हैं ॥

जी को मनान करवाया तो यह अनपेक्षित में ही देणन हो
 गये फिर भी गंगागम जी महाराज जब एहले ही रहगये तो फिर भी
 पूज्य जी महाराज न विचार किया—यदि एक शिष्य नया हो चाये
 तो यह भी गया राम या साधु दा हा जायेंगे तब इन के समय पर
 निर्वाह भी सुख पर्यंत हो जायगा ॥

साथ ही पण्डित जी भागा जीम ही पूर्व हो जाती है तब
 इस काल में ही एक भातवाल जगत दा व नारायण के वसने वाले
 भायक जोयनरामजी दीक्षा लन वास्तु विराजपर में रहना हो
 भागये तब भी पूज्य जी महाराज न "जोयनराम जी को भली प्रशंसा
 से हद करके और विराजपर में ही दीक्षित करके स्वामी गंगारामजी
 का समर्पण करदिये ॥

धन है वस परापकार महाराज को फिर भी पूज्य जी महाराज
 तो अत्यंत विहार करगये ॥

और राम २ म जैनधर्म का प्रकाश करने हुए अनुकमता से
 दली नगर ॥ पधार फिर बहुत से लोगों की विवर्षित होने के कारण
 ७७ का बीमार दम्पत्य म ल करदिया अन्तर्मास में मरण जीर्ण
 अमृतहृदये सर्वज्ञान प्राप्त विद्या और भायक लोगों न भी अंतर्मास
 अन्तर्मास प्रमाणित करी कहेंकि एक ता धीरम्यजी महाराज
 हिली म दीक्षा हा दुःख धिनीय भी महाराज परम पदित थे
 गाय म सदा नारा प्रकाश का आवाह करते थे ॥

"दादा धीरम्यजी महाराज हैं निरह शिष्य आमाराम
 य फिर भी अन्तर्मास न महाराज न आमाराम का अन्तर्मास
 न कय गच्छ स दास शिष्य या कहेंकि आमाराम जी का
 अन्तर्मास अन्तर्मास अन्तर्मास अन्तर्मास अन्तर्मास
 शिष्यन १ ॥

फिर श्री महाराज ने चतुर्मास के पदवात् ० ०
 के पासने जयपुर की ओर विहार किया ॥

हिन्दू स्वामी मुस्ताक़राय जी महाराज या स्वामी * गुलाराम
 जी महाराज की भी यही विवधि थी जब श्री महाराज मलहर
 पधार भार जिन बाणी का प्रकाश किया तब बहुत से मध्यजनाई
 पैराय माय डाल न होगया जिस का फल आगे लिखेंगे ॥

अन्यथा समय श्रीपूज्यजी महाराजजी न जब मलहर से विहार कि
 फिर अनक्रमस जब जयपुर म पधार गये तब जयपुरमें भगवान् इ उग्र
 हागया चारा भार भोजन द्रव्य नामका नाइ होने लगा—पञ्चासीम
 नामका सभास हाक्यकारन अगे कयाकि पूर्वकाल में श्रीमान् भाषा
 मन्त्रक द्रु जी महाराज न जयपुर ॥ मलान धर्माधोत किया था ॥

फिर चारा भार न गोमान का विवधि होने लगी तब ६
 महाराज जी न १९०८ का वर्तमान जयपुर का ही स्वीकार करलि
 फिर जयपुर म समीप ० विवरक श्रीमान् क याकन जब जयपुरमें पया
 नवनी विराजता ॥ श्री दोता नन वाकन जयपुर म ही भागये फिर ६
 महाराज न विजालीय य जी की इतिहास करक निज शिष्य बनाया ॥

* यह श्री महाशय जी महाराज जी या स्वामी जी महाराज
 जी के ही शिष्य य कि न हल की इआ मसमान १९०४ या १९०५
 में मलिन वाक्यकारन अमा ११ बहुत म इआपन ममा उपनयन
 हुए हैं इमति ॥ म मसमान शिष्य मलिन करवा ह विमन य महाराज
 जी कर्तव्यता के वामा एक अग्रिम म आगमन य ॥

† यह वामा श्री स्वामी विराजता न महाराज ने जिहो ने
 १९१८ ॥ वि मलद्रु दि मयधरिया का मलिनवाकन का मलिन करक
 या कय जी महाराज म विमन न का या वि हल द्रव्य का कया गय
 हल ॥ म य जी मल महाराज जी म मलिनवाकन मयधरिया का
 १९१८ म य जी कय विरा या मलिन का मलिनवाकन १९१८ ॥

किन्तु यह भी स्वामी विलासराय जी महाराज बहुत ही दीर्घ
दर्शी शान्ति रूप थे और इनका जन्म मालेरकोटला नामक नगर का
था दुबान लुधियाना नामक नगर में करते थे ॥

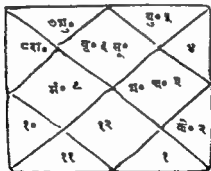
जब चौमास अत्यान्ध से ब्यतीत होने लगा तब अकस्मात्
अल्वर से रामबक्ष जी स्वयं अपनी युक्त दीक्षा के वास्ते जयपुर में ही
उपस्थित हुए तब भी पूज्य जी महाराज ने रामबक्ष जी सुखदेव जी
को जयपुर के चौमास में ही दीक्षित किया ॥

और तिनकी पत्नी भी भार्याजी के पास दीक्षित हो गई ॥

किन्तु यह महात्मा जी—जैन धर्म में सूर्यवत् प्रकाश करने
वाले हुए हैं भार पञ्जाब देश में भी स्वामी परम पंडित श्रीरामबक्ष
जी महाराज वैसे नाम से सुप्रसिद्ध हुए हैं ॥

क्योंकि स्वामी जी महाराज ज्ञानावर थे स्वामी जी का जन्म
१८८३ जन्म लगन में इस प्रकार से प्रह स्थित हैं ।

जैसेकि—विश्वमास्य १८८३ आश्विन मास शुक्ल पक्ष १५
रवि वासरे मृग शीष नक्षत्र प्रदनाम योगे कोटव करने जन्म परम् ॥



* भी पूज्य रामबक्ष जी महाराज जी के पास शिष्य हुए हैं

भी बृज शिष्याल जी १, विदमबन्धुजी ओ कि सधगी हो गये थे २ ।

हैं सो जो उन तत्त्वों का पेशा मुनि गुण धारण करने वाला पुरुष है
अर्थात् जो जीव सम्बन्ध प्रसार से तत्त्वों का ज्ञाता हो उसके मुनि
पद धारण करता है उसी ही जीव का सूत्र बना युद्ध पुत्र के नाम से
लिखते हैं ॥

तब श्रीमान् भ्रातृजी ने कहा कि हे महाराज जी आप का
कथन सत्य है भविष्य जो कुछ आपने हृदय बाह्य से महान् अर्थ सूचक
उत्तर दिया है मैं हम का शिरो धारण करता हूँ किन्तु इस कथन का
साधनापूर्वक आपसे शरण वसलों में निवेदन करना ॥ ॥

स्वामिन् जो दिग्वरी लोग हैं वे एकान्त भय के स्थापक होन
से अनेकान्त भय में अघात होने हुए स्व आत्मा को स्वयमेव ही
तिरस्कार करने वाले हो गये हैं ॥

और जो दशनाम्बर भय से निम्न हो कर पीताम्बर बढ़ाते हुए
तपागच्छादि धारी लोग हैं वे लोग भी अनेकान्त भय से घृणित हो हैं ॥

क्योंकि—बौर दासन में एक द्येन वस्त्र धारण करने की आज्ञा
है किन्तु यह लोग उन आज्ञा को न मानने हुए मनमाने पातादि
वस्त्र धारण करने हैं ॥

और यह लोग बीनराग मणित दया भग्न हो घृणित हो
कर बदभाव कथ कथ मदितापदष्टा हो गये हैं और श्री मरी जी सूत्र
में यह कथन है कि जो भूत अनुदश दुःखारी का कथन दिया
हुआ है वा दश दुःख धारी का कथन दिया हुआ है वे सम्बन्ध
भूत हैं और वे प्रमत्त करन दास्य है ऐसे कथन होने हुए भी
यह लोग उक्त कथन का सादर दृष्टि न देखते हुए आत्मगण पुटरी
के लिये हुए भय हैं किन्तु मैं साधन निषेध का कुछ भी विशद नहीं
किया गया है उन भयों के यह लोग परमाप देवक हाथ ह तथा
हाथोत्त होय के अनुसूचक कथन करते वहाँ कथनकथन से
के शर्त करने से अन्तर्गत कथन है अर्थात् जीव सदा धारण

वरते हुए मूल से मुम्पसि उगार करके हाथ में रन्ते हैं क्या मार्ग को न पाल्ना वरते हुए पनः २ मसरयोपदेश देते हैं ॥

इत्यादि कारणों से यह लोग भी अनेकान्त मन के अनधिकारी हैं सो सम्यक् दृष्टि से देखा जाय तो घोर शासन में शुद्ध मार्गोपदेश दयेताम्बर साधु मार्गी जैन ही हैं जब श्रीमान् भायक जी ऐसे कथन कर चुके तब श्री महाराज ने छगहरि वि—हे भायक जी यह क्या आप का मत है ही निष्पक्षता का सूचक है तब फिर भायक जी बोले कि हे स्वामिन् श्रीविवाह ग्रहणि श्री ज्ञाना धर्म कथाग इत्यादि सूत्रों में तब सयमादि नियमों को यात्रा बतलाया है किन्तु यह लोग उक्त सूत्रोंक पाठ होत हुए भी ध्यानपूर्वक गहा देखत हैं इसी ही कारण से यह लोग सम्यक् ज्ञान से पराछ मूल ह ॥

तब श्री महाराज ने कृपा करके भायक जी इन्हीं कारणों से भारमा में भक्त जन्म मरण किय हैं फिर भार भी भायक जी ने प्रश्न पूछे सो स्वामी जी ने सूत्रानुसार यत्कि पूर्वक एव उत्तर दिये कि भायक जी परमानन्द हो गये और श्री महाराज की परम कीर्ति करने लगे सो भानन्द के साथ १९०९ का धौमासा पूर्ण होने के पश्चात् वही कोटे वाले श्री स्वामी फकीरचन्द जी महाराज मिले तिनके साथ भी धर्म वाचार्थ बहुत होती रहीं ॥

तथा शेष सूत्र जो अध्ययन नहीं करे थे वह सब भी श्री महाराज जी ने स्वामी फकीरचन्द जी से पढे स्वामी फकीरचन्द जी श्री पूज्य महाराज जी की बुद्धि वा योग मुद्रा का देख कर अनि भानन्द होते थे और अध्ययन प्रेम पूर्वक कराते थे ॥

जिथा अध्ययन करने के पश्चात् फिर श्री महाराज धोकानेर में ही श्री स्वामी हुक्मीचन्द्र जी महाराज को मिले सो उन के साथ प्रेम पूर्वक वाचार्थ हुई ।

अर्थात् श्री महाराजजी के दर्शन करता था यह अवश्यमेव ही

रामानन्द हा जाता था जो अनुग्रहमयी मदाराम दिगार जाने हुए था पट्टसे मुनियेंकर मिलन हुए पुनः दिल्लीमें विराजमान होगये ।

रागी की परम उगाई उरन हा रागी पुनः बन्धु मास राम की दिव्यि हाल रगी तब भी मदाराम ॥ श्रीराम जगन्नाथ का १९१० का नामाल दिल्ली में हो कर दिया पुनः अनुग्रहमास के पूर्व भाषाट मास में धर्म के चानर भी भासोगम जी, रामानन्दजी, मोदमलाल जी, अनामस जी यह चार भाद रुधियमा सदीक्षा व वास्ते दिल्ली में भाषण ला था पुन्यनो मदाराम न रुनवा रुद वाच भाषाट रुणा १०मी का दिल्ली में हो दीक्षित विद्या पन हा दिग्य बनाये जित में भी पुन्यनो के पट्टपारी भी पुन्य रामवहा जी मदाराम जी व पदवान् भी सधने भी स्वामी † मानोरामजी मदाराम जी का १९३९ में मालर काटले रुदर में भाषार्थ पद दिया अपितु यह स्वामी जी मदाराम महान् शान्ति मुद्राके धारी हुए हैं ।

● जिन २ मनीषों को मिले थे उन के नाम सर्व मर का उपलब्ध नहीं हुए हैं इन लिये जीवन चरित्र में सब नाम नहीं लिख गये ॥ माही मरहयल के नाम मगते के परे २ नाम मिल हैं माही माग्ये के ।

† भी पुन्य मानोरामजी मदाराम का जन्म रुधियामा के जिले म एक बहलालपुर नामक नगर पसना है तिस में विरमाभ्द १८८० भाषाट मास में हुआ था जति के वाली सुत्री दीक्षा १९११ दिल्ली में । भाषार्थ पद १९३९ मालेरवाग्येमें भार स्वगवास १९५८ भाषियनमास रुधियाने में, अपितु भीमहाराम के पाँच दिग्य हुए जैसे कि धारधामा गगारामजी मदाराम १ भी स्वामी गणापठेदिज भी गणपति राय जी मदाराम २ भी चदनी ना कि पूर्ण भाषाट से सधमसे पतित हागये ३ भी तपस्वी हर्यवन्द जी ४ भी तपस्यो हीरालाल भी मदाराम किन्तु भी गणापठेदिज जी मदारामजी के दिग्य थी स्वामी जबराम जी मदाराम तस्य दिग्य थी स्वामी शालिग्राम जी मदाराम तस्य दिग्य रुद पुस्तक के लिखने बाढा उपाण्याय आत्माराम नामक में ॥

स्वामी जी महाराज अब विजय करते हुए लोगों को मुक्ति पथ का मार्ग दिखलाते हुए दिल्ली में विराजमान होमये और भी ५ जनोरात्रि महाराज भी दिल्ली में ही विराजमान थे जो कि भी ५ आचार्य कबीरमठजी महाराज की सप्रदाय के थे ॥

तब भी जनोरात्रि महाराज ने कहा कि अमरसिंह जी आप को व्यवहार सूत्र के अनुसार पुनोप पद के धारक होना योग्य है ॥

क्योंकि व्यवहार सूत्र में लिखा है कि जो साधु हीसाभुत परिचार करके सयुक्त होय वह आचार्य पद के योग्य होना है, सो आप लोग ही गुणों धर के सयुक्त हैं मरितु उक्त ही सम्मतिराय शोध बाद मल्ल भद्रमेर निवासी जो के पिता जी सुधावक भीमान् लाला भन्धोरमल्ल जी की भी थी किन्तु पुनः पुनः इहोंम यही सम्मति ही कि श्रीश्यामि अमरसिंहजी महाराज आचार्य पदकी के योग्य हैं ॥

फिर भी जनोरात्रि महाराज जी ने यह भी कहा की कि भी सुधर्म स्वामी जी से लेकर आज पर्यन्त आप के गच्छ में आचार्यों की धनी बली पाइ है और आप के गच्छ के आचार्य भूत चरित्र में परिपूर्ण थे पुनः तादना ही आप हैं ॥

तब दिल्ली में भी सप्रदायत्व हुआ फिर भी सब ने उक्त सम्मति सहर्ष स्वीकार करके चारदूरी नामक उपाश्रय में भी महाराज विराजमान थे वहां पर भीसय भी आया तब भीसय ने उक्त दिक्पति भी महाराज को करी साथ ही भी जनोरात्रि महाराज भी थे ॥

फिर भी महाराज ने स्वामी जनोरात्रि जी से कहा जैसे आप द्रव्य सत्र बार भाव देखें वैसे ही करें ॥

तब श्रीजनोरात्रि महाराज ने भी रूप की सम्मत्यनुसार भी स्वामी अमरसिंहजी महाराज को *आचार्य पद आरोपण किया ॥

* परम्परा से आचार्य पद देने की यह प्रथाबली आई है कि

तब ही श्री सध ने दीर्घ (उदात्तः) स्वर के साथ यह उच्चारण कर दिया कि आज कल मारन मूमि भाचार्य पद से प्रायः होन हो रही है क्योंकि बहुत से गच्छों में भाचार्य पद की प्रथा उठ गई है किन्तु यह काम सूत्रों से विरुद्ध है क्योंकि सूत्रों में यह आज्ञा दृष्टि गोचर है कि एक गच्छ में एक भाचार्य एक उपाध्याय भगवत् हो स्थापन करने योग्य हैं ॥

सो आज दिन भीसघन सूत्रों प्रमाण के साथ श्री स्वामी भगवत् सिंह जी महाराज को भाचार्य पद दिया है क्योंकि इस गच्छ में मध्यवर्तिनता से श्री सुधम्मस्वामी से लेकर भाचार्य त भाचार्य पद घटा भाषा है सो आज परम मानद का समय है कि श्री वर्द्धमान स्वामी जी के *८१* पट्टापरि श्री भाचार्य भगवत् सिंह जी महाराज

भीसघ की सम्प्रदायभार जिन मूनि का भाचार्य पद देना हो तब एक सपाडी (चादर) का कसर से विमूषित करके वास्तुस्थितिवादि से भलकन करके भार उस मनिका नाम लिखके भीसघ के सामुख साधु उस चादर का उन मनिक ऊपर द बंधे फिर एक मूनि लडा होकर भाचार्य के गण या भाचार्य का गच्छ के साथ कैसे सम्बन्ध है और गच्छ को भाचार्य के साथ कैसे घटने का दिये दयादि सदा रस भरे वचनों से भलकन ए६ नि३ पट्ट के सुनाये फिर गच्छ यथा न्याय श्री भाचार्य महाराज का आज्ञा शिरोधारण करे और इन मान्ति से उपाध्याय गणि गणावच्छदिक, पदों की विधि भी जानने चाहिये ॥

* श्री भगवान् वज्रम न स्वामी जी के ८१ पट्ट—श्रीमती भाचार्य पायनीजी कृष्णनदीश्यामस्मन् कृष्णश्रीपूज्यमानारामजी महाराज का ज्ञान करिष्य या इतिगण नाव भीमान् जैन्यमाभार के सपादक नि० कडोकाळजी कृष्ण दयादि पुस्तक में प्रचलित हो चुके हैं ॥

विराजमान हुए हैं और पुनः पुनः अथ नय शब्द का भी सघनाद
करता हुआ बिड़ियों में या पत्तों में नथी से धीपूजाद धीमाचार्य
ममरसिंहजी मदारराज ऐसे नाम लिखने लग गया तथा तब ही भी
पूज्य मदारराज थारी थार पथ नाम प्रसिद्ध हावणा फिर धीमदारराज
मे दिहरी से विहार करते अनुक्रम विचरत हुए १९१३ का बीमास
सुभामनगर में बिदा हो पदवन् कामस में धर्मोद्यान हुआ। फिर
कामासे के पदवन् धीमद्याना शिष्यान्ना मदारराज की दीक्षा हुई ॥

धी मदारराज फिर ग्राम नगरी में धर्मोद्देश इतें हुए पटिवल्य
नामा, मातेरबोटला, गुधियावा फलीर पगवाडा आलंधर, कपूर
थला इत्यादि जगहों में जैनमन का प्रचार करते हुए
या मण्डपवृत्तों में वा रक्षा करत हुए धर्ममार्ग में पधारे ना लीगों
की प्रति बिह्विह होने से १९१४ का नाम स ममृनर में ही करदिया ॥

अनुमान उक्त ही का मे—कानि के मन्त्रन विद्वत्पद
की दीक्षा बिदा क्योंकि यह विद्वत्पद राय इंड मन्त्रोत्पत्त्य राय
इंड मन्त्रोत्पत्त्य की का भाजन शाला में रक्षित है काम करत या
चित्तु का अद्यत स्वभाव था समय से पगवन्ना ही कर मन्त्रोत्पत्त्य
की से मन्त्र ही मन्त्रोत्पत्त्य ॥

कह हि धी मदारराज ने जब इतें का अनुविन व्यवहार इना
नव ही रहा मन्त्रोत्पत्त्य का विद्वत्पद विद्वत्पद का विद्वत्पद ॥

धी मन्त्रोत्पत्त्य का मन्त्रोत्पत्त्य विद्वत्पद विद्वत्पद का मन्त्रोत्पत्त्य
हुए भी पूज्य मदारराज का मन्त्रोत्पत्त्य विद्वत्पद विद्वत्पद का मन्त्रोत्पत्त्य
विद्वत्पद से १९१५ का नाम का भी का मन्त्रोत्पत्त्य का मन्त्रोत्पत्त्य
का मन्त्रोत्पत्त्य विद्वत्पद ही हुआ कर्म का मन्त्रोत्पत्त्य का मन्त्रोत्पत्त्य
का मन्त्रोत्पत्त्य विद्वत्पद से ही मन्त्रोत्पत्त्य का मन्त्रोत्पत्त्य ॥

किर चौमासे के पहरात् श्री महाराज ने राहों, गराश जेनों, बगा, टांडा जालंधर, इत्यादि जगों में परोपकार करके १९११ को चौमास हुशियारपुर में किया स्यादादृक्की घाणी से का भन कण परित्र किया जा लाग दशनाथे अन्य नगरी ये वह श्री पूज्य महाराज का दर्शन करके स्व जन्म को करते थे ॥

जब चौमासा शांति पूरक पूर्ण होगया तो माईयों की मी रिहति से वांगर देश की मार विहार कर दिया माम नगरी में परो कार करते हुए १९१७ का चौमास सनामनगर में किया चौमासे में पृथक् उद्योग हुआ ॥

किर श्री पूज्य महाराज चौमासे के पहरात् माम नगरी में परो देश करने लगें ।

किन्तु उन दिना में श्री स्वामी रामवृक्षजी महाराज वा विराम्नादि साधु वमना पाए के क्षत्रा में स्थित थे ॥

अपिन आमाराममा मठस्थल से भाकर इन्द्रमठ में स्थित जा श्रीरामवृक्ष जी महाराज के दर्शन करने का अनिलापी था क्योंकि श्रीरामवृक्षजी महाराज उन दिना में परिपूर्ण थे जिना में मति तीव्र थे श्री मा मागान मी भन दिया के पन्ने वाहने इनके पास आगये श्री स्वामी ज न प्रमपूर १७७ दिना का दान किया ॥

* मध्यम् १९१४-१५-१६-१७-म मा कई दोसा हुई हैं कि राभा वन मठ न मित्र के कारण से हो गति लिखा है वह बिबुन न बीम वन विनम्र दिना के हो पाग थे ॥

† ममागमत्र के प्रेदन परित्र में लिखा है दि १९१८ के प्रेदन के पहरात् भगवानजी न रामवृक्ष विराम्नादि साधु

नीर भी पूज्य महाराज ने बहुत स भवन लीयों को समुमार्ग ॥
 स्थापन करके १९१८ का बीमासा पटियाला में कर दिया। सो बीमासा
 में सहा सिंगुराम (भी हनुमदास) नागरमल्ल, दलनमल्ल करोडा
 सहा बागीराम, दीवान सहा धनैरामल्ल, इत्यादि माइयों ने जैन
 धर्म का परमोद्योग किया फिर भी पूज्य महाराज बीमासे के पदवात्
 ग्राम नगरों में धर्मोपदेश देने लगे हनुमत्तम विचरते हुए दिल्ली में पधारे
 जिन वाणी का प्रचार किया छान व्याकरण सुन के परमानन्द होने से
 फिर बीमासा की दिव्यता करने लगे किन्तु भी महाराज जयपुर की
 ओर विहार कर गये ॥

जब भी महाराज जयपुर में पधारे तो नगर में परमोत्साह उत्पन्न
 हो गया बीमासा की दिव्यता होने लगी तो स्वामी जी न १९१९ का
 बीमासा जयपुर में ही कर दिया ॥

धर्मवृद्धि मतोष हुए भवितु बीमासा में ही स्वामी गणेशदास
 का स्वामी जयपुर जी की भीषण महाराज ने दीक्षित किया। क्योंकि
 भी महाराज जी का ऐसा वैराग्य मय उपदेश था कि मध्यजन सुते ही
 ससार मार्ग से मयमान गये हुए दीक्षा के लिए उद्यत हो जाया करते
 थे पुनः दीक्षित होकर मुनि पथ की किया के साधक बनते थे। किन्तु
 भी महाराज बीमासा के पदवात् मनुजम निहार करते हुए पुन दिल्ली
 में ही विराजमान हो गये। तब ही धर्म के प्रकाश करने वाले पारसदा
 मार्ग उपायक भा। पदव दीक्षा के लिए दिल्ली ॥ ही उपस्थित हुए

की आचारान सूत्र अनुयाग द्वार सत्र जीयाभिगमादि सत्र पढ़ाये।
 सा यह निवेदन अनुचित लख है क्योंकि परम पंडित भी स्वामी राम
 चन्द्रा महाराज के आचारानम जी विद्या पढ़ते थे और स्वामी जी की
 सहायता से पञ्चाक्ष दश में विचरना चाहते थे। परन्तु चर्चार्थदाइय
 भाग दूती के पृष्ठ २७ में पर लिखा है कि आचारानम जी का बहधा
 यह स्वभाव हो था कि दूसरे को दोष देना इत्यन्तम् ॥

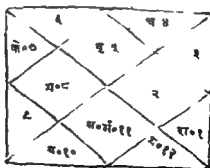
ऐसे कि नीलापतिराय जी । धर्मचन्द्रजी दुलेलमल्ल जी, जब इन्होंने श्री महाराज से विद्वत्पि कर्गी की हमको दीक्षा प्रदान कर्गे तब श्री महाराज ने तीनों को ही मोहित करके श्री स्वामी रामकृष्ण जी महाराज के शिष्य कर दिये किन्तु "श्री धर्मचन्द्र जी महाराज की बुद्धि परम

* स्वामी जी का जन्म १८९४ माघ मास गुरुपक्ष १३ बुधवार का था स्वामी जी का जन्म कडली से यही निश्चय होता है कि श्री महाराज जी परम पंडित वैराग्य रूप का ॥

जन्म कुडली इदम्



चलन चक्र मिद



तीरन थी जित करके मन्थकालमें ही पड़ित की उपाधि से विभूषित होगये। जिन्हों ने अनेक बार आमाराम की कृतियोंका कहन किया था बहुत से मन्थजीवों के हृदय कृतियों करके जो विह्वल होगये थे तिन की कृतियों का भाव करके तिन के हृदय रूपी वस्त्र में सम्यक्स्वरूपी सूर्यस्थापन किया था ॥

क्योंकि आमाराम जी का अनुचित मापणकरने का मन्थास कुछ म्भू नही था फिर प्राग्बन् हो लेन लिखते थे जैसे कि ॥

आमाराम जी के जीवन चरित्र के—४४ वें पृष्ठोपरि लिखा है कि—रामबहा जी ने आमारामजी से माघीनगा के साथ प्रार्थना करी कि भाव इस मुक्त पत्राव में आगये हों और मेरे गुरु मारवाड को धले गये हों इस वास्ते आपने इस पत्राव देश में जोर लगा कर अजीय मन की जड़ काटने रहना शयादि सो यह उक्त लेख निश्चयल असत्य है क्योंकि वन दिना में आमारामजी भोस्वामी रामबहाजी महागज की सहायता से पत्राव देश में फिरना बादत थे स्वामीजी से विद्या भाषयन करते थे किन्तु स्वामात्रिक गुण त्यागना दुरकर है ॥

इसी वास्ते अनुपस्थिति निर्णय शरीरदार के पृष्ठ ५ पर लिखा है कि त्पारोर्ण भौममदावादाना साधना तथा भौसधना भावना ना मुख धी धार्ता समिती के आमाराम जी ने उत्तम मापन करशानो तथा बीटो ने फरीजवागो कया विचार नथी ने महार न पूनलु छते अमेसारी पेठ जानीए छीए, इत्यादि यह हल तपगच्छाधिपति का हो है किन्तु भी मगरात्र न प्रथम ही मारवाडले म मारवा की कह दिया था कि—इन क्रियामों से यही सिद्ध होना है कि यह बाठक धन पप में दिप्त करेगा सो वैसे ही दान के चिन्ह दिखन लग। क्योंकि विद्यमन्त्र १८—१९—२० के—अनुमान में पूजकों के प्रयोग से महत् भाषित सिद्धान्तों में आमारामजी की अध्यादान कर्णो मुनिश्रुतों से मरवि हुए मिथ्यामेहनीते बल से सो भागवे उपनन हुए कि कदियन

मर्थों में स्तुति हागाई जैसा कि : 'नैन शास्त्रों में दयेन घन घाण कय
को भासा है किन्तु आत्मारामजी की आज्ञा पोनाम्यर घाण ।
गई । जैनशास्त्रों में मुखपति नामसे लिखी है निम का मर्थ हो ।
कि जो सदैव ही मखजे साथ लगी रहे निमका हो नाम मुखपति
किन्तु आत्मारामजी ने यही मन में निणय किया कि मैं तो दाघ में
पति को रक्ख्वा । तथा जैनशास्त्रों में मूर्तिपूजा का विधिन् भी छल
वा विधान नहीं है अपितु आत्मारामजी ने यही विचार किया कि
अब छान कुछ जानने लगे ह किन्तु भी इन लोगों को एक मदान् को
सेना चाहिये मर्थान् सूत्रों में जिस वस्तु का विधान नहीं है, उस
का ही उपदेश करना मुझ योग्य हो इसी वास्ते आत्मारामजी ने मोक्ष
कर्म की प्रवर्तना में भजोत्र पदार्थ में जोर को धर्या करली ।

और महात्मा आत्मारामजी क लेखों में यह भी सिद्ध होता है कि
आत्मारामजीने विचार किया कि जैन सूत्रों में कहीं भी असाध माप
करने की आज्ञा नहीं है किन्तु अब किसी मन्थक से काम करना बाकि

इसी वास्ते आत्माराम जी मन्थक शिष्योद्धार के पृष्ठ २४१वें
लिखत है कि-मन्थक मार्गमायवा बोलयानी आज्ञापनछे, हाया
शक्ये मन्थमो उप न दुर्द किन्तु यह धार्ताये आत्मारामजी के मत
में थी अपितु व्यवहार गुय रखा हुआ था सो १९२० का घौमासा मा
रामजी ने भागरे शहर में भीमान ५० रत्नचद्र जी के पास किया
विद्याध्ययनाये, किन्तु बहुतसून या सस्कन माया के नययकादि प
करे घौमासे के पदयान् विहार किया किन्तु धर्माधत्वाप्रकृत्य से रि
नहीं करते थे । जैसे कि आत्माराम जी के जीवन चरित्र के ५५ वें पृ
परिलिखा है कि स्वामी रत्नचद्र जी ने आत्माराम जी को यह शि
ही कि एक तो भी जिन प्रतिया को कभी भी निन्दा नहीं करनी
दूसरा वे-गावहरके विना भोया हाथ कमी भी शास्त्र का नहीं छाना
और तीसरा अपने पाम सदा दहाखना-३ में ने मुझ को भी जैनमत
असठसार बताया है तथा मुखपती १५० दह सायय से हमारे बहो

मुखपरी लक्ष्मी है और मेरे बड़ों ने अनुमान होसी (२००) वर्ष से बापनी
 पुत्र की है यह अनुमान अनुमान सय हो सी २२५ वर्ष से बिना पुत्र
 अपने भाप मन बलिष्ठ देवधारण्यके निवाला गया है इसदि यह
 देख बसप्रश्न है क्योंकि आ प्रथम सेन प्रणिमा विरय लिखा है ॥
 प्रणिमा वि निदा मकामो हम सेन में हम भी सम्मन है, इससे यह
 भाविष्ठ हाह वि आमागम ओ प्रथमप्रतिमा को निदा वरन होगे
 तमी ता कहें न निदा हो वि मुनिप्रभो को कहा भावव्यवस्था है । कि
 अह की निम्न कर निम्न आलाग प्रणिमा का मद्रत की सदरप मानने
 है पुनः अह में जीवन् को सदा ५ म्क करते हैं पूजा की सामग्री से बसे
 प्रसन्न करते हैं उसवेष्टिने मद्रि की प्राप्ति करता है अथवा उसके
 सम्पन्न करिब बराने है इसदि विषयों निम्नत माग को पुष्ट करती
 है इस प्रथम महामा ज्ञान उपदेश करत है अननिदा । सो यदि मामा
 राम जी के आगवानुसार ५० रत्नचद्र जी का भाग्य होना ता उनके
 दिव्य (उगकीमप्रदाय क) स्वामी अविगात्र जी सत्यर्थ सागरदि मय
 बारीको बराने जिस में मूर्तिपूजा की अह काटो है । मयान् मूर्तिपूजा का
 मुक्ति या एतन्नुद्धू निम्न दिष्ट है इसलिय मामारामजी कामाष्टेन
 प्रथम निराकरण करिब है । दूसरा लेन लिखा है कि-स्वामी रत्नचद्र
 जी ने कृपा करी कि-वशाव करक बिना हाथ पाप कभी भी शास्त्र को
 नहीं लगाना निवगण भाप स्वय विचार करें कि अब उक्त कार्य
 मामाराम आ करते होंगे तमी सो ५ जीन निदा हो है । और इस
 देख से यह ता रत्नचद्र सिद्ध है । त्वन्क वासी महामाज्जन मामा
 रामजीका पुनः पुन शिक्षा करने से यसा ज्ञान मन दिया करा । क्योंकि
 जिस शास्त्रा ॥ भाव्यराम आ ज्ञान चाहने से या जिस शास्त्रा के ग्रन्थ
 भी एने से उस शास्त्रा में उक्तकार्य अयोग्य नहीं बतलाया है ।

उदाहरण भी प्रतिग्रन्थ सूत्र थायक मोमसिद्धमात्र के द्वारा
 प्रदर्शित हुआ ता सम्यन् १२५१ भाष्यरी १३ मोद मयो में । जिस ग्रन्थ के
 ४७२ से दृष्टा विरि यह कथा लिखा है जैसे कि ॥ -



साहमे भत्तोसफलाइ साहमेसुठिजीरअजमाइ
महुगुडतबोलाई अणाहारेमायनिवाइ ॥ १४ ॥

जिम के भय में यह लिखा है कि गो से ले कर सर्व जति के मनिष्ठ
मूत्र उपशमादि कृत्या में पीन बढते हैं क्योंकि महन् के मन में
उपशम में चानुराहार का नियम है किन्तु मूत्र भणाहार है ॥

तथा भोर मो दलिये—भाज दिन हृत्प १८७१ ई० बनारस
जीतप्रभा करघेस का प्रकाशित हुआ जिम के ३१ वें पत्रोपरि लिखा
है कि—भायक साथ का दो प्रकार का पात्र द्ये । एक आ
भाहार का पात्र । दूसरा प्रघाय का पात्र २ इति यद्यतान् भव
सुदृजत विचार करेंग कि—जब सवेगी मनि प्रघायका पात्र रखते हैं ।
तथा जब ये पिणरादि क्रिया करते ह तिस समय ये क्या करते होंगे ।
क्याकि भाहार क पात्र क साथ प्रघाय के पात्र का स्पर्श कराते हैं वा
नहीं यदि कहेंगे हम प्रघाय का पात्र नहीं रखते हैं तो आप अपने पूर्वा
वाच्यों स रिच्छ हुए । यदि कहेंगे हम भाज कल नहीं रखते हैं ।
तो हम कहन हैं भाय के बड़ पूर रखते थ क्योंकि तमी तो भायक
को प्रघाय का पात्र देने की आज्ञा लिखी है । यदि कहेंगे
यह लेख हमको असमान ह । तो हम कहन हैं ओ इन ग्रंथों में पूरा
की विधि क मन कपित लख लिखे हैं तो उनका प्रमाणिक क्यों
मानने न ।

यदि कहेंगे हम भाजरादि क पात्र न स्पर्श नहीं कराते । सा
यह वाता न असमय है क्याकि पात्रा का समूह तो भाय एक ही
भाय म रखत ॥ ॥

तोसरा एक मामाराम जी का कह है कि : यद्विराजच्छ्री जी न कहा कि दृढ हाथ में सदा रखना सो यह भी कथन अतीन्द्र है क्योंकि—यदि य० रत्नचन्द्र जी की दृढ रखने की भद्रा होती तो उनके गण्ड में यह यथा अवश्य हो चल पड़ना किन्तु उनके गण्ड में बल भद्रा का प्राय सर्वथा अभाव है क्योंकि बृद्ध शरीर के लिये सूत्र में दृढ कहा है अपिन्तु स्वयं व लिये नहीं क्योंकि जब भर्तृत्व व मन में रत्नाहरण का दृढ बिना यथा व घट्टन लिये रखना नहीं बदलना है कि कोई जीव मय न पायें ता भला दृढ की आका सदैव बाल व लिय कैसे समझ होसकी है किन्तु सवेगी लोचदृढ स जा काम लेते हैं उसका उदाहरण स निदृश्य व लोचिथे यथा : भोगतायदादि व ५ गणपतिरायजी महाराज भीष्मामी जयराम जी महाराज धारण सो शास्त्रिग्राम जी महाराज स्थाने पञ्चक का अनुर मास १९५१ का भवाले नगर में था । उस काल में ही यद्विराजच्छ्री नामक एक सवेगियों का भी धामासा भवाले में ही था । तो एक दिन की बात है कि एक सवेगी हाथ में दृढ लिये जा रहा था तो एक मार्ग में महिष काड़ी हुई थी ता उस दंडो ने बड़ ही बल के साथ एक बड़ महिष के मारा तो महिष दृढ खाते ही भाग गए भाग लपट हो गया तो जब सवेगी महाशय ने पीछे का देखा तो दो सामु धीरशासन के दृष्टि गाबर हुए तो यह बड़ी भी शीघ्र २ बलहे भाग गया ॥

अब पाठकगण अवश्यमेव ही विचार करेंगे कि सवेगी लोग दृढ ॥ इत्यादि काम लेते हैं किन्तु यह हाग सवेग यथ से भी यत्न हैं क्योंकि इनके ग्रंथों में १ एक सवेगी को यथ दृढ रखने की आका है परन्तु यह हाग एक ही दृढ रखते हैं यथा भास्त्रिग्राम ग्रंथ के ३१५ पत्र को पृ० ॥ यथ दृढ विवर्याधिनार ॥

भागो जीवन धरित्र में टिका है कि—हमारे बड़ों ने १५० वर्ष से मुक्त पर मुक्तपती बांधी है तोरे बड़ों ने २०० वर्ष से मुक्तपरिमुक्त

पत्नी बाधी किन्तु यह दुष्टव्यक्त बिना मुझके मन-व्यक्त बिना मुझ के निजाला गया है इति धननाम् ॥

समीक्षा—सो यह लक्ष भी मात्माराम जी की बुद्धि का परिचय स्पष्ट देता है क्योंकि यदि परतन्त्रधर जी महाराज की उक्त भ्रष्टा होनी तो यह शीघ्र मुनपत्ता मुन्ध से उगार डालते तथा अपने शिष्यों को सदैव ही उक्त उपदेश दिया करते सो तो उहोंने नाही उक्त उपदेश दिया है और न अपने मुन्ध से मुनपत्ता उतारी है सो इससे सिद्ध हुआ कि मात्माराम जी सच से पराङ्मुख हो रहते थे ॥

प्रिय बाधकभूत—मात्माराम जी का ही मन निज शासन से विद्वत् मन्त्रालय से छप न हुआ है जिसका स्वर्ण भागलिनैने किन्तु यह भी जैन इयेनाम्बर स्थापक वासी ही जैन भी धर्मन मगधत् पर्यन्त स्थायी से अघावि पर्यन्त मन्त्रव्यक्तिम्भना स चले भाये हैं ॥ यह अवश्य ही मानना पड़ेगा कि किसी काल में अधिक किसी काल में स्वल्प होते भाग्य ह मुह्यती मन्त्रवर बाधना यहा जैनधर्म का लिङ्ग है तथा सर्व विद्वानों न जैनधर्म का वेष्ट यही विद्या है—जैसे शिष्यप्राण भादि प्रथा में यह सर्व प्रमाण आलाभे *नामा तथा सगरी मुनमर्यम् ॥ प्रकाशित हो चुके हैं । इसी वास्ते यहाँ पर नहीं लिखे ॥

किन्तु कबल ही प्रमाण ही दिग्दर्शन मात्र दिखते हैं—जैसे कि अनुपम हनुनिशकाद्वार के गद्यम परिच्छेद के वृन्दपञ्चापरि ठिबा है कि मध्यम १९४० की साक्ष्य मात्मारामजी महामहाराज या समाचार छात्रमा व्यक्त्यन्त के अन्तरे भादृष्टि बाधनी हम अच्छी जानते हैं वन कोई कारण से नहीं बाधते हैं ॥

* नामा चरु मे राजमया के मध्य में आ स्थायी उद्यय ३ जी महाराज के सम्मुख सगरी चन्द्रम विजय जी पराजय प्राप्त कर चुके हैं सो उक्त गद्य का सारा हवर्ष ! गद्यवाच नामा नामक पुस्तक प्रकाशित हो चुका है ॥

एहेषु उपाव्युत्पारे विद्याशालानी वेठकना

भारकाए भात्माराम जीन पूजा साहेब भाप मापति बाधनी रुडो चापोछो तो बाधन नेम भयी तयार भात्माराम जी एतेने पोतानारागि करवाने कहा के हम इहा से विहार काके पोछे बाधगे । इत्यादि विषय गण । जउ भात्माराम जी व्याख्यान के समय मुहपति बाधनी भउछी जामने हैं तो इसने सिद्ध हुआ कि जा पुकर सदा ही मुखोपरि मुह पती वा ते हैं च जिन जनकूल काम करते हैं क्योंकि जिन लिङ्ग दाने से । तथा गजगन दश मै प्राय दूरेगणजी की सप्रशय के बिना शेष सर्व सरेगी लोग मुहपती बाध क व्याख्यान करने ॥ तथा कित मेक सवगी लोग भवन भापका साध नहीं मानते ह सो यह भण्टे ह क्योंकि वह भसाव भापका स बसाव करते हैं सो भात्मारामजी के कथन से ही मुहपति सिद्ध है मुखोपरि बाधनी । तथा साम्रति काल के विद्वान् मो जैनमन का यह मुहपती काके मुख बाधना ऐसे मानत ह देखिये जगत् प्रसिद्ध सरस्वती पत्र । एप्रिल १९११ माग १२ सवरा ४ ॥ सरादक प्रकाशित प्रसाद द्विवेदी—इष्टिपत्रसे—प्रवाग से जा प्रकाशित होता है । जिसक २०४ पत्र परि स उद्घाटन का बित्र दिवागया है जिस ॥ द्वादशमा बित्र आभाशितप (अथनदेव) मगशान् का है जिस बित्रापरि मुख्यतः मुह पर बाधी हुई है मर्यात—भीष्मपमदेय मगशान् क बित्र क मुखोपरि मुखपती बाधी हुई है ऐसे बित्र जैनमन का दिवाया गया है । सो पाठकवृन्द ! जब पर मन वाले मो जैनमन का वेव मुखोपरि मुहपती बाधना मानने हैं और भी जैन भी उतरावपयन सूत्र, भी मगशनी सूत्र भी प्रदन व्याकरण सूत्र, भीनशीय सूत्र इत्यादि कूँओं में मो मुनि का लिङ्ग मुहपती माना है तने भात्माराम जी का लेख मुहपती विषय हठ है । तथा पट्टिन रत्नचन्द्र जी की कथा यदि भात्माराम जी के लिगे अनुसार होती तो उनसे बनये मोछ मागदि भयो में वह भजान् भयद्व ही पयाजाना

किंतु उनके बनाये प्रथो में उक्त अक्षर का लेश भी नहीं है अपितु ओ
मान् पद्मिनी महाराज के हाथ का लिखा हुआ एक हमारे पास जीर्ण
पत्र है जिस में देव गुरु धर्म के शिष्य मन्त्र लिखा है। यह भूम्यजीवों
के दर्शनार्थ जैसे लेख है तैसे ही (प्रतिकृप) (नकल) लिखा जाता है
जिसका पढ़के मन्त्रजन स्वयमेव हो वातवर स्वर्गों में कि भीषण रत्नचन्द्रा
महाराज का कथा आशय चाणमय देवगुरु धर्मनी सखा लिखीय है।—

१—देवसम्यक्दृष्टि के मिथ्यादृष्टी ।

२—देव ज्ञानी के भ्रमानी ।

३—देव सत्यरी के असत्यरी ।

४—देव प्रत्याख्यानो के अप्रत्याख्यानो ।

५—देव सज्जतो के असज्जतो ।

६—देव वृत्ति के अवृत्ति ।

७—देव एकेन्द्री के पश्चिद्रि ।

८—देव ब्रह्म के इषावर ।

९—देव मन्त्रक के निर्वन्ध ।

१०—देव सागर के भगागर ।

११—देव सूत्र के वादर ।

१२—देव परिग्रहधारी के अपरिग्रहधारी ।

१३—देव माहारिक के भगमाहारिक ।

१४—देव भाषक के भगभाषक ।

१५—देव शीतरागी के सरागी ।

१६—देव हाथ पुष्पशिलेण मागी के भगमागी ।

१७—देव ८ मास ४ मास निशारी के भगनिशारी ।

१८—देव चौधेभारे के पचम भारे ।

१९—देव शब्दघोता के भगघोता ।

२०—देव धर स्वभावा के स्थिर स्वभावी ।

२१—देव पासवया के भगपासवया ।

- २२—देव सर्वज्ञ के असर्वज्ञ ।
 २३—देव ८ कर्म सयुक्त के ४ कर्म सयुक्त ।
 २४—देव सन्तो के असन्तो ।
 २५—देव ४ प्रजा के ६ प्रजा ।
 २६—देव १० प्राण के बार प्राण ।
 २७—देव मुखगामी के ससारगामी ।
 २८—देव १३ गुणस्थाने के बीघे गुणस्थाने ।
 २९—देव शुक्ल स्त्री के मलेही ।
 ३०—देव पुत्र्य वेद स्त्री वेद के नपसक वेदी ।
 ३१—देव उपदेश वेद्य के न द्ये ।
 ३२—देव रोमाहारी के कवलाहारी ।
 ३३—देव हन गड के महन गड ।
 ३४—देव मुक्त के अमुक्त ।

गुरु ।

- १—गुरु हिसक के महिसक ।
 २—गुरु सायबाही के असायबाही ।
 ३—गुरु भक्तप्राणी के वक्तप्राणी ।
 ४—गुरु कनक कामनी के रवागी के अरवागी ।
 ५—गुरु परिग्रहधारी के अग्रग्रहधारी ।
 ६—गुरु प्रतिपक्षक के अग्रतिपक्षक ।
 ७—गुरु धर्मोद्देशी के हिसा उपदेशी ।
 ८—गुरु भाष्यी के ग्रन्थभाष्यी ।

धर्म ।

- १—धर्म जीव हिसामे जीवत्या मे ।
 २—धर्म बाधन के महाधन ।

- ३—धर्म दशानमें के भद्रशान में ।
- ४—धर्म चारित्र्य में के भद्राग्रि में ।
- ५—धर्म आध्यात्म के सम्यक् में
- ६—धर्म निजरायों के यधमें ।
- ७—धर्म १२ भद्रों तपस्यामें के भद्रतपस्या में ।
- ८—धर्म भगवान् की आज्ञा के आज्ञावाहिनी ॥

पाठकगण ! यह सब ५० ओके हाथ के लिखे हुए पत्र की तकल है भाव स्वयं विचारें कि आत्माराम जीके हस्त का कितना भवत है इससे सिद्ध होता है कि आत्माराम जी कृष्ण प्रकृति नहीं थे किन्तु हठ धर्मी थे ।

इस वास्ते चतुर्थ स्तुति गीतोद्धार के २८१ वें पृष्ठोपरि लिखा है कि कमके आत्माराम जी आनन्द विजय जीन समझाने भयें जा कदाच महा विद्वत् क्षेत्र थी केवली भगवान् भावेष्ट थोतो समय तो न थी इत्यादि सो पूर्व कमा क वल स आत्माराम आक वित में भनेक सदाय उत्पन्न हुए जो कि यथा स्थान पर दिखलाय जायते भवितु भी पूज्य महाराज जाने १९२० का घोमासा दिहली में हो कर दिया सो धर्मोन्नत भगोष्ठ हा हुआ ॥

सो घोमासा के पदचात धीमान महाराज अनुक्रम से विहार करते हुए नामा शहर में पधारे सो नामा नगर में घोमासा की विहाप्तहुई गो भोसवाल या भगवाल मारथों के भनि भाग्रह स १९२१ का घोमासा नामा नगर में हो कर दिया । भयपाठकों का यह भी दिखलाते हैं कि पूर्व कर्मोदयसे आत्मारामजी की भद्रा पदावस्था से भी ग्रियम होगी क्योंकि भी भगवान् वदमान स्वामी से भयापि परमेश्वर वदव्यवहारानकल जो भावदयक क्रियानुष्ठान वही भाता है उसके भा मिरयः समझन भोजितु जो कस्मिन् भावदयक भाट

निम्न भाषायां मूलिमां को संज्ञा रूप इस में दखि धन्ये श्री
कहोहि श्री भगवान् की अद्धमागधी भाषा है ।

तदा—श्री सन्यायाजी सूत्र स्थान ३४ ।

सूत्र—अद्धमागधीभाषाए धम्ममाइवति २२
सावियाण अद्धमागधी भासा भामिजिजमाणिने
सिसव्वेसि आयरिपमणा रियाण दुप्पय चउप्पयणिप
पत्तु पम्बित्तारिसिवाण अपणा दिन सिवसुहवाए भाम
ताए परिणम्मडं ॥ २३ ॥

अस्याः — श्रीमन्महापांग जी सूत्र के ३४ वें स्थान से ।

२—२३ वे सूत्र में यह लिखा है कि श्री भगवान् की अद्ध मागधी ही
भाषा है अर्थात् भगवान् अद्ध मागधी भाषा में ही धर्म दिया करते
हैं सो यह भाषा माय अनार्य शिखर चतुर्षु मृग पशुपक्षि सप्तादि
सर्व जैव भवन। भवनो भाषाम ही समझ जाते हैं ।

तदा महापद्म सच के प्रथम पक्ष में ऐसे कथन है :—

सूत्रम्— सेवित भासायरिया, भासाप रिया
अणेगावेहापणत्ता तज्जहा जेणअद्धमागहापभासाए
भासति जयण वभीलिवापवत्तई वभीणलिविण
अठारम्मविहेलह विहाण प० त० वभी १ जवगालिया
२ दामा ३ पुरिया ४ स्वरोटी ४ पुक्खरमारिया ६
भोगवड्या ७ पहाराट्या ८ अनक्खरिया ९ अक्षर
पुठिया १० वेणड्या ११ णिसइया १२ अकलितो १३
गणिनलिवी १४ गणव्वलिवी १५ वादशल्लिवी १६
माहेसरी १० दामिल्लापोलदी १८ सेतभामाय रिया ॥

अर्थार्थः—शिष्य प्रश्न करता है कि हे भगवन् भाषार्थ कौन हैं ! शुद्ध उत्तर देते हैं कि हे शिष्य भाषार्थ के अनेक भेद हैं किन्तु जो भर्ष भाग्यो भाषामाषण करते हैं वे भाषार्थ हैं और जो "मयीषी के अष्टादश भेद ह मयी लिपी के साथ ही भद्र भाग्यो भाषा का प्रयोग होता है वे भी भाषार्थ हैं ।

तथा भी विवाह प्रसंगि सूत्र के पञ्चम शतक के अनुषांश में यह सूत्र है ।

यथा—देवाण भतेकयराए भासाए भासति
कयरावा भासा भासि उजमाणी विस्समनि गोयमा
देवाण अद्धमागहाए भासाए भासति सविण अद्ध
मागहा भासा भासि उजमाणी विस्ससनि ।

इतिवचनात् ॥

अर्थार्थः—ओ गौतम प्रभु भीमवन् भीरुमान श्यामी से पूछने हैं कि हे भगवन् कथन कौनसी भाषा भाषण करते हैं तथा कौनसी भाषा भाषण की हुई देवताओं को प्रिय लगता है ! तब भगवान् उत्तर दत्त हैं कि हे गौतम देवता भद्र भाग्यो भाषा भाषण करते हैं यही भाषा भाषण की हुई देवताओं को प्रिय लगती है ?

तथा हट्टर साक्षि भवन रथे सक्षिप्तादिदुस्तान के इतिहास में लिखत है कि दिदुस्तान से मूलमाय पराणो प्राकृत है तथा हट्ट प्रणो न राधार्जुन को टिप्पणी करने के लिये लिखत है कि प्राकृतभाषा सर्व भाषाओं से प्रधान है ।

● यह मट्टा वरा मया लिपि में भेद किसी स्थान पर सविस्तर लेख देने में नहीं पाये हैं इसलिये नहीं लिखे हैं मूल सूत्र में ता केवल नाम ही है -

तथा हिंदुस्तानका इतिहास इदं कथं प्रमाणमन्त एव० ए० मी सर्वे भाषाओं से पुरानी सब भाषाओंको माना *प्राकृत ही है अर्थात् सर्व भाषा प्राकृत से निकली हैं ऐसे लिखने हैं तथा खड्ग व्याकरणका वृत्ति वर्ण प्रतीति विज्ञान भी पूर्ण हो लिखना है सो यह भाषा भी भाषा अलग अर्थ की सुघर है इसीमाने गणधर दधोने भाषा प्राकृत का भाषा भी भाषा में ही रख है आर भाषाद्वय कृपाये भी भाषा भी भाषा में ही रखी हैं। किन्तु जो तपार्गद्वयों का भाषाद्वय है वे सर्व भाषा भी भाषा में नहीं है अर्थात् सहाय ? प्राकृत, मारवाडी, गुजराती इत्यादि विभिन्न भाषा में हैं सो इसीवास्ते वह गणधर कृत विहित नहीं होता ॥

अभी अनुयोग द्वार जो सब में बड़ाकरण के विषय में यह भाषा लिखी है :-

यथा - सावज्ज जोगविरडं उक्कीतण गुण वड पडि वसी खलियम्म निदण वण निगिच्छ गुण धारणाचेव ?

भावार्थ - भाषाद्वय सूत्र का सावज्ज याव निर्वृति रूप प्रथमा इत्यादि १। अनुविद्वानि इत्येव स्तुति रूप द्विनिवाच्य है २। गुणवत्ता को वदना रूप वृत्तिगोपाय है ३। पाप ॥ प्रतिफल रूप अनुपाय है ४। पाप का भाषावत्ता रूप पञ्चमाग्य है ५। प्रत्याख्यान रूप पष्ठमाग्य है ६। सो यह सर्व भाषाद्वय विद्वान् हैं किन्तु सबेगी दोगैने बड़ाकरण में मन अल्पन काव वदना व्यापनावाच्य अर्थ रादि देवों की स्तुति के विषय में है ।

* हिंदी भाषा की उत्पत्ति मानक पुस्तक ॥ सम्यक सरस्वती एव महादेव प्रसाद हिंदी की भी प्राकृत भाषा की बहुत ही भाषा लिखते हैं ।

मा आमाराम जीकी अद्दा सनातन पद्माद्वयक से मो प्रियम हो गई मनः कल्पित भावद्वय को परि अद्दा हट होगई ।

अब आमाराम जी मालेरकोटले में आए तो विद्वान्द्रादि साधवा को मो सम्पर्क से पतिन किया क्योंकि इसी वास्ते सूत्रों में लिखा कि (कूसंग कथा कथा नहीं अकार्य करता) अर्थात् सर्वज्ञी नशाय इसी से होते हैं किन्तु जो आमारामजी के जन्म चरित्र में यह लिखा है कि विद्वान्द्रादि ७ पेशाव से हाथ धाए आमाराम जी ने उस को बहकिया ॥

१ विषपाठकगण ! यह नव्य असमजसहो लज ॥ १ क्योंकि आमाराम जी का यह बहुधा ही स्वभाव था कि अपना दाए पर के शिरधरना इत्यर्थ ॥ और यह प्रथा सवेगी लोगों में अब तक भी प्रचलित है किन्तु इस का प्रमाण मागे लिखेंगे अविन यह सवेगी लोग प्रायः असत्य लिखने से निश्चित भी नय नहीं करते दखिये अर्थात् धम्मोदय भाग तीसरा पृष्ठ १२ पंक्ति ७ एक सवेगी साधु जी के जिनने पत्र हमारे गुरु महाराज के पास भावे सब झूठ लेखों से सरा सर भरे हुए थे, इत्यादि सो आमाराम जी की अद्दा पूर्ण कर्मा की महत्त्वता से छिन्न निम्न हुए इधर भी आचार्य महाराज जी का १९२१ का धौमासा नामा नगर में आनन्द पूषक स्थानों का गया फिर भी पूष्य महाराज नामानुग्राम विचरते हुए तथा जय पनाका हाथ में लेते हुए मालेरकोटला, लधियामा फलौर, फगवाडा जालधर, कपूरथला इत्यादि नगरों में घूमोपदेश करके १९२२ का धौमासा भाष्यों के मतीय आग्रह से गुरु के अड्डिआले में हो कर दिया । मैं इस बातका पर्यलिख चुका ॥ कि पर्य कर्माद्वय से आमाराम जी का वित्त सम्पत्त्य मे तो पराङ्मन्य हो हो गया था किन्तु अब प्रायः में मो प्रवृत्ति आमाराम जी को अविष्ट हो गई जैसे कि आमाराम जी के जीवन चरित्र के ४७ वे पत्रातिज्ञिवा है कि नवावि

भात्मारामजी ने विचार किया कि हम समय कुछ रचनायें देना में प्रायः दूधमनका जोर है और मैं अबेला गुद्ध भजान प्रगट करूंगा तो कोई भी नहीं मानेगा हम धास्ते मदर शुद्ध भजान रख के बाध व्यवहार दूधों का हो रख के कार्य सिद्ध करना ठीक है मन्सर पर सब भजना हो सकेगा ! इत्यादि !

पाठकगण ! उन लेख से स्वयमेव ही विचार करें कि भात्मा राम जी माया में भी कैसे प्रवीण थे मन्दा गुरुनाका पदी लक्ष्मण हे या साय वादियों का !

तथा भी सूत्र हनाग के प्रथम भूत स्वयं के द्वितीयाख्याय के प्रथमादेशक की ९वीं गाथा में लिखा है कि :-

जइवियणि गणेकिमे चरे जइवियभुजइमान-
मततो जेइह मायार्हमिऊनई आगनागभ्भाय अण
तमो ॥ ९ ॥

अर्थार्थ :- यदि कोई मन्त्र मो हा जाये शरीर को छरा मो करे देना में मो विचार मत २ क १-नरे मो आहार कर यदि एतो वृत्ति युक्त हाकर मो छत्र करे तो मन्त्र काल पर्यन्त मन्त्रादि में प्रवेश करता है ।

मित्र मित्रगण ! भात्माराम जी ने उन सूत्रोंक कथन की भी विवृत्त कर दिया !

किरमी जनोराम जी मझाराम भात्माराम जी को मिले तिही में मो भव्याराम को बहुत दिन शिक्षा दी !

किन्तु भात्मारामजी का उन शिक्षामों से कुछ मो लाभ न हुआ अपितु अनेक प्रकारकी बातों से भात्मारामजी ने विदग्ध साधुओं को भी सम्पत्त्य से परित्यक्त किया !

इस कथायनके अनुसार आत्मारामजी का ध्यानमें उत्तम भाषण करने लगे तब श्रीपूज्य महाराज ने यह काला सादागमक (जो कि स्थाल काट में भी पूज्य महाराज जी के दानाध आये हुए थे) ॥

तब दोनो भी आत्मारामजी का बहुत ही दिन शिक्षाये दीं और श्रीमहाराज ने आत्मागम को यह भी कहा कि—हे शिष्य यह मनुष्य भय मित्रा पन पन दुःख है दिया धन से ही आत्मा बनादि काल से परिस्तरा बना चला आया है एक पन भी सुप्रका मन्वया किया आये ॥ आत्मा बनन मयी क कम पकत्व कर लगा है ॥

और तू कष्टों भयों का अनर्थ करता है यदि तूसे किसी बात की शान्त है तो तू निराप कर ले या शान्त द्विगोप बार पडल ॥

तब आत्माराम विद्वान्द्रादि साधुओं ने भी पूज्य महाराज का खरब कमल पकड लिये पुन हाथ आड के करने लग कि हे महा राज आ हमनी भाव के दान ह आ कल भावकी भजा ह नो हमारी है आ हमने सूत्र से विद्वद् कहा है निमका हम का यथा न्याय प्राप्ति दिव्य दने या क्षमा कर देवे इत्यादि पत्र मन्त्रा करत दुओं का तब भी महाराज ने यथा धाम दृष्ट दे दिया ॥

किन्तु उन्होंने ने अपने भाव ही एक पत्र लिख कर भी पूज्य महाराज को दे दिया ! पाठकगण पत्र इस लिये दिया निश्च होना ॥ कि ! उन्होंने यह शिखर किया हागा कि पत्र लिख कर देने से हमारी प्रतात ठीक २ श्रीमहाराज के विल में यह नायगी कष्टों कि अब प्रतीत हो जायेगी तब हमारा कान निर्विघ्ना से हावगा भविष्य पत्र भी मामादित करके दिया ॥

सो मनुष्य जायों का हम स्थान पर उक्त पत्र की प्रतिकर (नकल) लिख कर दिखाते ॥ ॥

अब के पन्ने से पाठकों का भला भाति निश्चय हावायगा कि विद्वान्द्रादि साधुओं की विद्या बुद्धि कैसी थी ॥

किन्तु पात्र वृद्ध या स्वयमेव ही ज्ञान गये होंगे कि विद्वान्
आदि गत हो यों के स्थान की जो खबर नहीं थी क्योंकि यदि
विद्वान् आदि गत हो यों के स्थान विदित होते तो फिर यह वृद्ध
स्थान के यों की जगह मध्यम स्थान का यों क्यों टिखते ? जैसे कि
(लिखते) दाढ़ को लिखत दाढ़ क्यों लिखत यदि कोई यह प्रश्न करे
कि आत्माराम जो वे इन्धनहार नहीं हैं तो बसना यह कसर है कि
आत्माराम जो वे ब्रह्म भी अपनाराम जो महाराज जो वे जो वृत्तगत
हैं ना आत्माराम जो को क्या भावना बना था ।

तो आत्माराम जो को भा महाराज ने बहुत ही दिव्यज्ञाये हैं
किन्तु अनाचार्य आत्माराम जो का गुणन होने के कारण से उन
गुणों से आत्माराम जो कुछ काम न से सब क्योंकि भीनही जो
सुख में निष्ठा है कि ।—

सात्मासु निविहायता तज्जहा जाणिवा,
अनाणिवा दुविपदा, जाणिवा जहायोर जहा हसा
जेवुहति इह गुरुगुणममिद्धा दो सेव विवज्जनि नजा
णसुजाणिप परिस । १ । अनाणिवा जहा जाहोह
पगइ महुरा मियरिवय सीहकुडुडभूया रयणमिव
अमठविया । जाणिवा साभवेपरिमा । २ । दुविपदा
जहानइ कथइ निम्माउनय पुच्छइ परभवस्स दोमेग
वत्थिइव बायपुन्ना फुट्टइग। मिन्त्यादुविपदा ॥ ३ ॥

भाष्य — १ न जहा को दृष्टिदा हो ही है दृष्टिद्वय ॥ १ ॥
दृष्टिद्वय ॥ २ ॥ दुविपदा ॥ ३ ॥ जाणिवा परित्यक्त दोमेग हो ही है दृष्टिद्वय
दुष्टिद्वय ॥ ३ ॥ निम्मा २ ॥ कथना इ ॥ ३ ॥ दृष्टिद्वय ॥ ३ ॥

दुर्गाय जी का बीमास दुर्गापते में या सो दुर्गा भी यह प्रदत्त
के तैसे ही नमस्ते के जानने के वास्ते लिखते हैं ॥
हरस्तो श्रीमच्छातितायात्मना ॥

अथ प्रश्ना लिखते हैं —

१—श्री सिद्धान्त में मार्ग तीन ब्रह्मा है उन्मरग १ मयगाद २ घोष
३ श्लो मष्ट दस पाप हयानक बने हैं सोइ ब्रह्मगमाग में मष्टदस
पाप हयानक विम द्रोत से पान्न करवा है मने मयगाद मग में मष्ट
दस पाप हयानक कैसे बयन हिये हैं मने घोष माग में कैसे मष्ट दस
पाप हयान का निरूपण कीया है परपूर्वोक्त प्रशारेण नीलो माग के ५४
पाप हयानक हुये सो इन ५४ वा म्य रा २ स्वकप लिप्या फिर। भैसे
टिपणा हदी ५४ माथ महा मयगाद जो की कौन से पाप सेउने की
ने कौन से मे नदी इति ॥

२—श्री प्रयजनसारोद्धार, में आदक के १३ ली बौद्ध ८४ बौद्ध
१२ माथ ८४ हजार २०२ मागा इन का ६५ पृथर २ स्वकप लिप्या
फिर भैसे टिपणा बानने मागे प्रतिमा जी का पूजना है मने कानसे
मागे में पात्रा करली बदी है इति ॥

३—तपागच्छ वाले बइते हैं मन्वान् जा के मिदिर में तदपी
देवता का मादक करवाया नने धरारागच्छ वाले निरप करत हैं सो
तुमार तह कौन सा बात उपदे है मने साम्प्र मागे तदपी मयगाद
या होइका यह तना माहि निम वा नाव करवाया क्या है इति ॥

४—और तपागजीवे बइत हैं साधु से न रखा जव ता देवतादि
से कुशील सेवे ता पाप नहो और नावरगजान यहा है मष्ट ने पटे
तो गत पसादि करी मरे सा इनछ सनयन कैसे है इति ॥

५—मागे तपागजीव बहत हैं प्रेयेदी कच्छिने मने मयगाद
मे टिकवा है निप्या दिष्टवा कछ है मा इनक मय कैसे है ॥

मं जिने हुए हैं इन ग्रन्थों के देखने में यदि गो मली प्रकार विरहित हो जाता है कि आत्माराम जो व्याकरण के भी अनभिज्ञ थे मो पूर्ण समालोचना ३४ वं बोमास में लिखेंगे अविन् बटेरायजी ने इन ग्रन्थों का विम्वृत भी उत्तर नहीं दिया है क्योंकि बटेरायजी को विद्वान् पुरुष नहीं थे नाहो उन्हीं ने कोई मूल्य ज्ञान खोला था दोष इन की वगैरें हुई मनपनी अर्थात् नामक पापी से विणय हो जाता है कि यह * बटेराय जी विद्वान् नहो थे आर नवगठित की मो अस्माद्वारा से मरुता नहीं समझते थे कदापि इन पातको बटेरायजी ने अपना बनाई दुष्टक में दृष्ट कर दिया है ॥

* बटेरायजी का जन्म-पञ्जाब देश में मुघियाना शहर के तरफ बलोडगुर से सात मा० कीस दक्षिण के तरफ दूरबी नाम में टेक सिंह जाट की बच्ची नामा रानी की ब्रूज से विक्रम संवत् १८१३ में हुआ था पुणोदय से इन्हों ने सम्बन् १८८ में श्री १७०८ पूज्यसिंह जी घड़ जो महाराज के गण्ड वं श्री मुनिनागरमन्त्र जी महाराज के पास दोहा धारण करा फिर यह दिन की चबलता के प्रयोग से पकड़े हो किरने लगे अर्थात् समय यह पञ्जाब देश के क्यालकोट के जिला में पनकर नामक नगर में खड़े गये आ वहाँ पर इन्हों ने अपने उपदेश द्वारा मूलचंद माधवाल का धैर्य दिया और विनाश ही मूकह लिखा तब मूलचंद का नावा(महत्पिण्ड) साहेबशाह क्यालकोट बाबा आधदेशाद माधवा पनकरवाला जिकिमूलचंद का मामा(मातुल) था जिन्हों ने मुजरागला में बटेराय जी को था मूलचंद की मुखपटि तोड़ डाली फिर मुल से कहने लगे आपने जिनकी आज्ञा से छिप्य किया है यदि तुम सन्नानुसार किया नहो करसके हा तो तुम मुखपटि को मन रको मरान् मुखपटि मन बाधा क्योंकि साधु के यह कर्म नहीं है तब इन की भया मुखपटि बांधने की उत्तर गई किन्तु जो

इसके ऐसे अनुबिग समय में इस नगर के कथन से और
 पुरोक्त काररबाइ अगाधर करने से किनन ह। शहरों के लोगों को
 सनातन जैनमन की गुरु भज्या प्राप्त होनी यह हागई क्योंकि बहुत
 भनभान लोगों ने बिना हो समझ दठ बदायई करके आमाराम जी
 यौगद के पास जाना माना यह कर दिया इत्यादि पाठरगण । कथा
 विद्वानों का यह। अक्षय है कि सबैवद्यत हो करदछानुसार यनवि
 करना अब कमी क्वदत प्रगट होजाये तो शोक करना चाह ।।।
 जिन जीव के पुरोक्त ह। ह। ह। उस को सन यन। मानना क्योंकि

जम दिया विरगपिन भावगानुद सन्नोयन मिदया ते पाप का उदा
 इत्यादि कथन से सिद्ध है कि—बूटेराय जा तपगच्छ का म त करण
 से मकड़ा भी नहीं जानने थे किन्तु नाम ही तपगच्छ का रखते थे
 भा। जिनके पास तपगच्छ धारण किया था उनका स्वरूप बूटेराय
 जी मुखपति चर्चा नामक पापों के ५८ वें पृष्ठापरि लिखत हैं कि
 कारदिक्षा इन बाहो थी न साधा का कपरय चढ़ाय व पूजा करने
 लगी प्रथम तो कपरय चढ़ावने रान विजयजी की पूजा करी
 फिर मणिविजयजीम भाग कपरय चढ़ा। न पूजा करी पाछे मेरेको कपरये
 चढ़ावने लगी तिवार निग विजयजी। बा। ह। हमारे भागे कपरये चढ़ावने
 का कुछ काम नहीं हमारे कपरय को खप न थी हम कहोन मने कर
 हीनो तिर र हम सबे तडा न ऊठ के बठ भाये तिनोंने बाई कू दिखा
 देके शहर ।। बसे गये इत्यादि इस प्रकार चतुर्थ स्तुति निगय शका
 द्वाद के पृष्ठ २८ वा २९ वें पर मो लिखा है ॥

पाठरगण देखिये अब मणि विजयादि सबेगो मुख्य रखते थ और
 बूटेराय जी भवने भाप का साधू हो नहीं मानने थे ना ही बूटेराय
 जी को गुरु का सयोग मिदया नाही तपगच्छ की अताकरण से मला
 समझते थ—ता फिर मला तपगच्छिये किस तरह यह सत्य है कि
 हमारा परम्पराय गुरु सयमधारियों को है ॥

जिन् धर्म निरा भे है ता दुग्न मैं है । ताँन भगवान् की आज्ञा मरिगा
मरि दा निरा भे ह ।

[illegible]

* प्रदण्डोपासनास्य वा उपासकस्य दण्डास्य वा आश्रयवादि
भक्तस्य भक्त्यो मे मुनिधर्मो वा पुरुषार्थधर्मो वा सर्वे स्वरूपे प्रतिपाद्य
विषया गता है इत्यादि। महो विष्णु भी भक्त्योगशास्त्री भूष मे भाव
द्वयवादि अधिष्ठाता या पश्यतः व समेक मादरा के विषय मे पाठ है।
यदिन भी अनुसंधान वा वा सम्यग्विचारिणी ब्रह्मवद्वक्तृत्वं करने को ही
माहात्म्य है इसीलिए भी कहना है कि भक्ति विषय के पाठ
अन्यत्रोपदेशागते हैं सो निश्चय स्वरूपात् तद्विषय कथन है।

[illegible][illegible]

तब श्रीमद्भागवत कहता है कि तू भास्कराम त मियात में प्रवेश करके कहीं जंगल की विनाशिता में रुकना न उरस्य मन्त्री के फल का नशा मना है कि जो मनोकाय पर्यन्त उत्सव के भाषी को स्तम्भकरी की भी आदि नही होता ।

और जो तब मन में आकाश में तो तब निजय करले क्योंकि सूर्यो म यह पन २ कला है कि जो अजीब का जोर मानता है वही मियात मन्दिर है जो जय त एक पाषाण के लड़का बहुत मागता है तो मला फिर ॥ मियात माग लव लव रिमक ही मला है ।

और फिर तब लोका के पास कहना है कि पुत्र्य जी मेरी रोटी खूब करते हैं ।

पियर ! हमरा अनारय तब का कथा भास्कराम है किन्तु जैसा तब कर्म करता है इन कमा मनी पदा पित्र होता है तुझ को मान्य मय पाना ही तब दा गयमा ना पद्य यह है कि तू शंकाओं को प्रकाश करे जो तब उन कामों का समाधान करेंगे ।

अपित वक्रता लोका मन कर दियादि जब श्रीमद्भागवत हृषा करचक तब भास्कराम की कृति भी उत्तर म दसके अपितु नम्रता करके अपने मार्ग चरत मय ।

साथ है तब धर्मो वक्र्य को मानलो का शरण है क्योंकि भक्तजुता ही वताय करना भास्करामजी के चारन चरित्र में ही भिन्न है देखिये श्रीवन चरित्र गृह १ -जब भास्कराम जी अनारवा में विद्वन्मित्रादि संधिमो को मित्र तब विद्वन्मित्रा म कदाकि महाराज जी मन ही तो हम स्मदाहो भाष के साथ मिले हुये हैं कदाकि मापने पुत्र समातन जीभोन का यथार्थ स्वरूप दिखाने के हमारे ऊपर जो उपकार किया है हम इसका बदला मय मय मनी नही दमकते हैं, परंतु कथा करे मपता मजलब निज करने के वास्तव ऊपर ऊपर ॥ जुदाई रखते हैं यदि रक्ती भी जुदाई म रखें तो पुत्र्य जी नाराज हो जाते हैं और

उनके माराज होने से अपना कार्य सिद्ध होना मुश्किल है इत्यादि प्रिय पाठकगण ! उक्त लाल का स्वयं पढ़कर विचारें कि भास्कारामजी का विद्वत्पद्मादि साधुओं का अंतरंग था वाद्य विचार कैसा विचार नीय है और फिर विद्वत्पद्मादि साधु जगत्वा से विहार करके अनुक्रमे भगवाला छावनी में पहुँचे फिर अपने हाथों लाल एक (बिहारी) पत्र लिख कर भगवाला छावनी से भगवाला शहर में मार्फत लाल प्रसादिया मल्ल, भालू मल्ल की ओर जय महाराज जी को भेजा जोकि १९२८ ग्रेगोरियन १४ का लिखा हुआ सा पाठकों के जानने चाहते हों उस पत्र की मूल यहाँ उद्धृत करत हैं —

श्री श्रीगंगाधर

स्वस्ति भोमन सुमन्धान विराजमान श्री श्री श्री परम पुण्य परम दयालू परम कृपालू परम रुधेगी खरिब निधी दया व सागर पिता के महार सूरवीर धीर गमीर अनेक गुनकारी बरानमान ॥

कागज थोड़ा गुनघगा, मोपे कट्टा न जाय ।

सागर में तो जल घना, गागर में न समाय ॥

श्री श्री श्री परम पुण्य श्री महाराज हमारे लिए के छत्र समान मस्तक व मुकुट सामान अनेक गुनकारी विराजमान स्वामी श्री महाराज पुष्पदन्ती महाराज के बरणा विव दया नमस्कार वाचना श्री स्वामी श्री विद्वत्पद्माजी महाराज बरणा आकर गुलाम हुकमे की दया नमस्कार बहुत २ करके वाचना बरणा विव सोसगा हुआ वाचना टाने ७ की जुद्ध २ दया नमस्कार बहुत २ करके वाचना सबका ध्यान आपके बरणा विव लगता है दया स्वामी विद्वत्पद्माजी का बरणा व गुलाम वा हुकमे का ध्यान हरद्वार गपके बरणा विव दया रहने देगा आने हम रा ताफ सति दिस व गनी दिना सावन कला नहीं हम का ता आपके बरणा का बड़ा भयार दया धन

उदिन होगा जिस दिन आपका दर्शन होवेगा हमारे श्री बहुत मज्जाप
 लग रही होगी श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री पुत्र जी महाराज के
 घरणों विद्य विद्वन्मन्द की हुक्मचद की धनना नमस्कार निम्नो के
 पाठ श्री १००८ बार पुनः २ वाचनो सुपसाता यदु २ करक पत्रणी
 भागे मेरी तथा हुक्मचद की मरजी आपके चरणों में धामल करने
 की होगी सा बड़ा क्षेत्र दात्र ना हुक्मचद कह के मरा त्रित पूज्य जी
 महाराज के पास धामल करण का ह मा ना । भाग से स्थान सहर
 विद्य विराजमान हावेगे सो हमारे उपर दया नात्र करके महर दिखी
 करके इत लिपाये हूँ हम इस माफा न ममार त्रित की वृत्ति आप
 के चरणों में धामल रहे ह अब इस वन में रिक्त कर करक नहीं समजना
 अत्रिपत्नीमेर तथा हुक्मचद । वा प वती महाराज के घरण
 विद्य उत्तरमासा कर ४ मा का कर १०१ म प मार जमा रखणी आपके
 तावेदार ह घरणों के न कर ह इसीतरा ज मना धनु कथा लीपु धी
 केवल महाराज जान । २ हमारा ना आपन बड़ा उपकार किया है
 सा मार मन में पढ़ि ह आपके प म रह २ शास्त्र विगारे सुमध्या
 भावना वर्तती हम की मनसा एगे हूँ सो भवके तो दुःका मद्रमा है
 कर मरा परम धामे 'उत्तरा' नात्रणी इसमें करक नहीं जानना यह
 धाम मनमकरन से लिखा ह आप बड़ गभार हा उत्तम हा आपके
 शुभा का बार नहीं है सो आपके करक माना का खबर जदर मेजनी
 कृपा करक जदर जदर नागनि सपसाता की खबर जदरी कृपा कर
 के माया मना तथा इनो हमारा ध्यान बहुत लगरया होगा—इति
 —मार इस पत्र के त्रितीय पृष्ठा पदि वैद्य लोगों का जो (यही)

शोर है यह पत्र भविष्य हान से इस स्थान के वर्ण ही उड
 गये ॥ पत्र भी छिन भिन हो रहा है कि तु इस स्थान में ऐसे शम्भु
 प्रतीत दाते ह कि मैंने आप जो माझा मेजाने तथा जिस तरा फरमा
 था—इत्यादि—

निम्न पत्रादि में दिदी लिखने में आती है वह लिखी हुई है उस में लिखा है कि—मन्वाला छात्रों का पना भार पत्र में लाला मसानियामल्ल आलूमल्ल की माफन था पून्य भडारान का मजा १९२८ ज्येष्ठ कृष्ण १४-इत्यादि—भौर गामारामनी के जीवन चरित्र के ५७ वें पृष्ठों पर लिखा है कि—कितने दिनों पीछे ममरसिहनी का ताप से पत्र ऊपर पत्र आने से लावार हो कर थाविदनचदनी लुधी आने से बिहार करके मन्वाला शहर में जा खानासा रहे इत्यादि—मिय पठन वृन्द उक्त पत्र विदनचद वा हुकमचद का लिखा हुआ है पत्र में दाँते प्रकाश क वान विद्यामान हैं तथा दाँतों ने ही पत्र का धर्णों से भविन किया है। भविन पत्र भगुदी बहुत हा है सा उक्त पत्र के पदों से निश्चय हो जाना है कि यह भडारान जी व्याकरण क मप ठन घ भविनु सवेगी लोक इनकी विद्या की भडान् स्तुति करत हैं सा दीक है—वधा—

[illegible]

सो इत्यादि इन्निन विधि विरनचन्द्र जी ने भाग्याराम जी से सीनी कर्केकि भाग्याराम जी ने विरनचन्द्रादि साधुभा को भी अपने दो समान कर दिया ।

सविनु जब भेष्य महाराज जी को विरनचन्द्र जी का ठिका हुआ पत्र भिजा तब भेष्य महाराज ने द्रव्य क्षेत्र कालनाथ को देख कर बल पत्र का चिह्नितन भी उत्तर नहीं दिया पुन भीमहागज ने १९२८ का बीमासा जीरे नगर में कर दिया ।

चतुर्मास में बहुत से मन्दजनों के सगव छेदन किये अपितु बहुत समाधियों के लिये कदा उपाय बन सका है जब के गै शालाजी का जमाबीजी को मगशान भी शिक्षा करने में अममय होगय ।

सो बीमासा में बहुत ही घमनोंदन हुआ फिर आपूज्य महाराज जी बीमासा के पदवत अनुक्रम से विहार करते हुए मार्गशाप गुह्य पत्र में लाला साबहिद मोमयाज जोहरी की बँडर में जगरावा शहर में विराजमान हागये । और भीस्वामी विलासराय जी मग राज भीस्वामी पश्य रामजगजी मगराज भीस्वामी पश्य मोती राम जी महाराज भीस्वामी हीराताल जी मगराज भीस्वामी प धर्मचन्द्रजी मगराज भीस्वामी तपस्वी रामचन्द्र जी महाराज इत्यादि मुनि भी महाराज के सग ७ भार भीस्वामी रत्नचन्द्रजी महाराज स्वामी ज्वाहरलाल जी भीस्वामी हीराताल जी महाराज इत्यादि पाव साधु मारवाडी भीष्म महाराज का के इर्ननाये जगरावा शहर में ही भाये हुए थे । भार तब ही विरनचन्द्रादि साधु भा मगशान शहरसे विहार करके लुधियान में आगये थे ।

जब इहाँ ने सुना कि जगरावा शहर में भीष्म महाराज का अन्य बहुत से साधु एकत्र हुए हैं तब इन के विषय में यह निश्चय हुआ कि जो हम सूरों से विक्रयान करतें हैं सा आपूज्य महाराज मली मगार से जान गये हैं अब इन को मऊ से बँटा करने के लिये ही एकत्र हुए हैं ।

मर्य है प्रतिहारक पद पर मरनीमाया को स्मृति करने भाप ही मय पाता है, इसलिये तात्पर्य पास मर्य है यह सब भाप छोन लेने इस वास्ते पुस्तकादि उपर्युक्त उचिताना में हो रक्त कर किर भी पुत्र मर्यादा के वर्गन करे यह मर्य पुस्तकादि उचिताना में ही रक्त कर विहार करके जगगाय शहर में ही भीषण मर्यादा के वर्गन जा बिये ।

इस मर्यादा के करन जग नव भीषण मर्यादा के से सब साथ पकाय करके कहा कि मैं इन उचिताना के वर्य माघभी का जगने गच्छ से गृह्य करके हुकूमि है यह काल था वास्ति ही गुह्य रहा न माही गुह्य गुह्य है इसी जगन में विहा उक्त करत है मरने वाय कृपित के लिये मर्य को नव भीषण उचिताना के मर्यादा के वा मायवादी मरिणी में कन। कि मर्य हुए मायवादी (पान) को रक्तता किमो प्रकार मो मर्य नही जाना इसी प्रकार यह विद्वत्तादि मो मर्यादा बोलत है वा उक्त करत है भार माही गुह्य का वास्ति गुह्य ॥ माही गुह्य मा गुह्य वास्ति इन का गच्छ से शीघ्र हो वास्ति करना वास्ति ॥

नव उचिताना के मा बहुत हो मर्यादा करने करने भार मर्यन भिन्नो की उचिताना जग वन करत हुए गदगद वाणी बोलने जग भीषण वन पुनः यह करत हुए करत करत यह भीषण मर्यादा मर्य हमारा मर्यादा सुभा कन विहा जा कउ माय हुना करत ॥ ५ हम मर्यन हम मर्यन है भाप मर्य मर्यन ही हमारा मर्य वाय सुभा कर ॥

नव मा पुत्र मर्यादा में हुना कनो कि नव कनो मो मर्यादा मर्यनो कि मर्य उचिताना में कनो पुस्तकादि उक्त कर मायवादी ॥ लिये मर्य हुना है कि मर्यादा मर्य में उक्त मर्य में मर्य को कनो

गच्छ में नहीं रहूँगा । क्योंकि तब भयभीत हो टिपत हो । भयभीत हो लगे हों । उम्र काज में हो । गल गलमय लाल साधनरुठ, अगोनीयन गगरीयय गगरीयय छत्रमल घामुमरुन हाथारि मार मा रियन थ मा उ श न नी धायय मदारामजी से बहुत ही दिखि करो कि भी पूय मदाराम जी अब इन पर समा करो क्योंकि यह सब भूल गये हैं तब भी पूय मदाराम जी ने हवा करो कि मैं मारया गद दिखय दादि महान छल कर रहे हैं और इन पर धारिध पादन्त वरुनि दागपा ह मोर भी इन का सब साधार भीदू २ मदाराम ने अब मारिया के सुभाया तब सब मार कन्त लगे कि ३ न गगरीय अब इन पर निगन्त मन रखो इसी ही समय भी मदारामजी विनवद्दादि गगरीय को मपन वच्छ से बाछ कर दिया तब यह लाल साधनरुठ की धेठक में नीच उतार गये जिनके नाम यह हैं । यथा :—

विनवद्दाजी १ हुडमनद्दाजी २ विनवद्दाजी ३ निधानमल्ल जी ४, मल्लमनरागजी ५ ललसादासजी ६ धनैयामल्लजी ७, चम्पाल जी ८, वरुणाचद्दाजी ९, हावमवन्दजी १० गुरदितामल जी, ११ रत्नारामजी १२ अब यह जगतास स दा या तोनशास के अनुमान बढे गये तब इनके मनमें न जान कथा जान मार फिर यह जगतासमें हो भा गय पुन भीमदारास जी से बहुत करत हुए रिहति करने लगे कि आप हमारा मपराय समा करें मार जा इच्छा हो वही मायरिचन दे देवे हम मारने दास हैं मपित् यह कथन भी इनका छल हो का था क्योंकि इनकी इच्छा मार भी कतिपय मध्य जीवों को सम्मार्ग से

* बहुत ही यह विनवद्दादि साधनों ने महान को रापये ना कर भीमदारास को लिखकर दिये थे ।

चाह है प्रमाद से यह पत्र उ न निम्न दागये ।

मन्त्रिण राजा विष्णुदेवसिंह ने जय में पधार कर विद्वत्पदादि व सभ्य प्रशस्त कर के तिन को निदरा दिया सो उस बात का स्वका विनयद्विती ही जानन थे इन ही प्रकार प्रायः भय्य नगरी में भी इनका भाव बढ़ो यत्न होना रहा । और ओपुष्यप्रदाता के गच्छ में रहने वाले श्री धीरशासन व मुनि इन की स्वच्छपोष्य वस्त्रिय बागों को प्रत्यक्ष करके दिवाने लग या साधिवि में भी यथाशक्ति इनके समान पद की सूत्रों द्वारा समालोचना करके भय्यजायों को दिवाने लगे भगिन्धी महाराज ने १९२९ का बीनासा पटियाला नगर में ही कर दिया ।

तब ही राजा बहोमन नान बाल राजा शिपुराम (धीरदास) पटियाला बाल इत्यादि बहुत सद्गुणस्थान स्व सम्मानपूर्वक पदित नाम्नाय का एक पत्र देकर प्रायः पञ्जाब देश में यह प्रगट कर दिया कि यह विनयद्विती वेषधारी दिनका स विद्वत् उरदश करते हैं और विद्वत् ही इन का धारित्र हारदा है सो यदि यह किसी भी भय्य को निम्नगच्छ होवे सो यह उपदेश मानने योग्य नहीं है तथा किसी के मन का कार्य भी हो वह तथा द्वारा विनय कर लेवे और इन का भावार्थ व्यवहार और समानपूर्वक नहीं रहा है जब ऐसे कथन को पढ़कर जो ने नगर नगर मान मान में प्रसिद्ध कर दिया तब राजा ने उक्त प्रायम को यह उत्तर दिया कि पदित जा इनने ही प्रथम ही इस बात का विचार हुआ है सो कर्यो न पत्रापरि विनयद्विती भी कर ही ।

* भीमजी मया पर्वनी जी ने भी सरोगियों को बहुत ही सुन्दर उत्तर दिये ह का स्थान पर इन की पराजय को किया है बानगीपिछादि कई सुन्दर पत्रादि में लिखे हैं तथा इन का जीवन धरित्र उर्ध्व भाषा में आ उगा हुआ है ।

के वनपहरं नदी आचार्य के वनाय दुर है तो मर्य सच्छे नदी
आपनी मन बन्धना से मेल समेक करके वनाय है ।

और जो वनमान में गदाय भग है इस में भी मेल समेक करवा
हुमा है यह ध्यान भी जीवनराम का ॥

यद्यपि परमेश्वर सूत्र औरान्त्री सूत्र तथा १५००० हजार
एक सय मन बन्धना के वनाय हुए है मगवान की बापी नहीं ।

आराधना आराधनी करके माय ज्ञान है मार भीनदीजी में
जिज्ञासूत्र के नाम है सा सख मच्छे है । मार या विप्लव माधव्य
मनामी का के वाच्य हुए जा मय है सा शूड नदी है यह ध्यान
आमाराम की है इति ।

यह पत्र लिखकर आमारामजी ने धर्मेश्वरी जीवनराम जी
महाराज का दरिया मार भीमदाराज ने आमाराम का गच्छ से मिल
काहे १९०९ का खान्सा शिवालयमें ही कर दिया पट्टगम आमा
रामजी को दिया जो दल लखे । सा अनुमान कर्तिक मयमें छला
रमजीनसिंह जा भी कोरोचर में ही लागे तब भी जीवनराम जी
महाराज ने यह पत्र आमारामजी का लिखा हुआ ध्यान आयोजी
को दिखला दिया जो इस में क्या दि भय राम जी न मय के साथ
मय्य दिवा है कर्तिक जा बृह आमारामजी ने मय्यो भद्रा दिवस
छल लिखा है तो क्या यह छल मार का समेत है तब स्वामी जी
महाराज ने हर करीब मुह ता उद्गम मय्य नहीं है और माही
मेरा उद्गम कर्तिक मय्य भद्रा है तब ध्यान ने क्या दि जो बृह
आपका मय्यमय्य है तो यह इस पत्र पर ही टिपे कर्तिक जो
इस पत्र को पट्टग उसका माय्य भद्रा मय्यराम जी का
भद्रा दिदि हो मय्य नर स्वामी जा मे उद्गम कर्तिक हा पर
होय दिदि ॥ इति —

राजमहाराज की हुई थी जब भीमराज मदीह शहर में पधार
तब भाइयों की भीतीव विवर्धितके प्रयोग से १९३१ का बीमा ला मदीह
में ही कर दिया सो बीमासा में ५ टोन्स बहुत ही हुआ सामानसे के
पश्चात भीमराज विवरते हुए मय जनों के सहाय ददन करत
हुओं में १९३२ का बीमासा नामा मगर में कर दिया सो नामे नगर
के पासो भोसवाल या वैश्य लोगों में घमोघोत बहुत ही किया और
इस बीमासा में लोगों ने हान भी गतीय सीखा ।

अब पाठक जनों को यह भाकाशा भी भवश्य होयेगा कि जब
भी पूज्य महाराज ने विद्वत्पद्मादिभों का अपने गळु से भिन्न किया
था और श्री चोखामजी महाराज ने भाग्यारामजी को स्वगळु
से पूज्य किया था ता कि उन किम महाराज के शिष्य पनें और उस
महाराज के पूज्य महाराज केसे य सा पाठकों के सदेह छेदनाये हम
इस बात के निगारों कर लाना को साहज करत ह ॥

मित्र मित्ररा ! जब भाग्यारामजी या विद्वत्पद्मादि महाराज
जिह्वा सुधम्मगळु से पूज्य किया गये फिर इन का अनुचिन उपदेश
प्राय किमी भी भयान न प्रशुन किया किन्तु इन को ही लोक गुह
हीन कहत उग गये कि इह न अनुमान १९३२ में महाराज पञ्चमान
करामा का जिह्वा परिशनन कर दिया और शहर महामहाराज में पशुच
गये फिर वहा पर बुद्धि विपय भी गुह धारण किया चोकि पर सधम
गळु ॥ मित्रका नवगळु गये था निसका नाम सुदरायजी था ।

यान रह रत्नागजी ? गुरुद्विषामल्ल जी ! ता इनस प्रथमजी
पूज्य भी सुके थ ।

किन्तु आ महामहाराज में पदाच गये थे उन्होंने न्याय उ का
वासनेय लिया था ।

* श्रीपूज्य महाराज में इसी समय नरमें गळु को उन्नापये सम
यानुवक ३२ महु लिखे थे चोकि मयावि पथ्यन्तगळु में प्रबलित ह ।

पुत्र पर पता मः सचरिअधो कोई भावार्थ उदाहरण था मथो
तो पनकोई सपना गहमगता चर्य पस उमरहा चय पदमानस
कताया दिना मयन नकोईसने भावार्थ पद वासमेव कराया दिना
अनेपनीनयमा कोई सपना भावार्थ ने सगे भावार्थ पदो दी
धविना पउना सपरागा धमिपाउ ना दीपलो भावार्थ पदस्वीकार
करी येनाना। कोटा मदनानुगतन मयना ३१४ मा दृष्टना उगा
वृद्धके पातीनाम में * चर मकर मदा सार ममुदाय ने भावार्थ
पद दत्त।

* कथा कदाचिप ममतासे के दृष्ट ३० दक्षि ५ पर लिखा
है कि मदन १ तुम भाग्यमान जाह नाम क साथ में सूरारिखरपद देख
कर कबो जलन हा मनुमान हाहा ह तमय उनस वृद्ध हय भाव है।

उत्तर—मिथवर हम जलन मा नदी ह मार हमय उन स वृद्ध
हयमय मो नगी परतु द्रिदा का मान सस्वीरान रखना वृद्ध नगी
कपडाव्य हाहा है।

मदन—कहा भाग्यमान जो का मकल भी रूपने सपिह नही
दिना है (उत्तर) सपना १९४३) में भाग्यमानजा ने वाटिकाके में
बीमासाजिया मार कालिक पुस्त १३ का अर्थय तेष को जाहा
का मनेक भावक माने हो है। उनमेंस दो चार पद के रहन पाटो
मजे भाग्यमान जाहे रागा ये) भाग्यमानजा से कहा हम भावक
भावार्थ पदो देना चाहत है भाग्यमानजनेम मरुम कहा खन जा
का इसकय को स्वीकार करलिथ मार मनने फलमय इया मो नही
कहा कि १ हमने पडे सुनार् सवि जा भी मृदुवर्दी मशाराउ तथा
भी वृद्धिवा जो मशाराउ स इनवान में सत्तह भार भाहा सेना
बाहिय दूसरे दिन भावकों ने उ नरमिह कशन जो को पन राख
में एक मधान सत्त कर भाग्यमान जाओ पद पर वीजय दिना मार
दिलक भावकों ने इकहा हा कर मनावन किया कि भावकउ मारत

આમાતમ જો મનમોહ દાવ તો જેમ મમેથી એન દાવજોના ધાવધો
 જોજો જાપો તેનો જાણ થો પ્રમોદ વિજય જો તા ગુહ ને સંજનો ।
 જાવો તા સાધુ મમાવાગે પોતનો વરવરામાં તવધા ઉડિગન ન વા
 તા વન ધોગુહ ધાવાવ વિવાગન મંગમો ગુહનો દા યે દિસા પ્રમુખ
 સાધુ સમાવારો તથા ગુહ વગવાવ આવેનો મહાસપ મમત ધી ગુહ
 દીધસો આવાવ વરવોના ધાવજ થો વિવેવરાગમ્ ગુરિજો ને તવમો
 જાવોનમનો વાસેવવતવદ્ મધાન્ મનો દીસા પ્રમુખ જતો દિગા ઉદાર
 વરવો તમ વમને વલ સવમો મુજોનો વાસે વાવિગાવ મધાન્ મધાન્
 દીસા સરી જાવદ કેમ જે વરી દીસા દેવો પો વર તો વુડિગતના
 નુ કરજાસો મમોમાન વેગ લોવર જાન જોજુ પોને સાધુ મધો તા
 વવમને સાધુ ડોવ વલુ લોકાને કહે વુ વહે છે ।

તદ્ વપ મિતવા માવલ વુવલધો વધો જસે ? વને જોજુ જે વીર
 મોદ્દા ધાવજાવ ને સાધુ જરીને માને છે ત આવજા નુ મિતવાવ વલ
 વેગલ વર જો દાવાદિ વધુ ગુહ વગવાવ વાન દે જા આમાતમ જો
 માતનવિજયજો આમાવો છે તાવ મમાવ જા વ વવમોવ દારવજ જાવો
 ને મગોદાર કરને તથા આવાવવદ્ લવાનો વાંછા દાવ તો આમાતમ
 જો ને વધિત છે જે પ્રથમ વીર વવરાગન સવમો આવવ વેલીન તથા
 જવ મમ વવરાવ વાસદ સાવાવ વમાવ વરવાવ જ મહાન્ માગતુ
 વિવાગન વીડગ ધારના સંયમે સુવદુના ? દાવાદિ ધોમંગ વુડિગ
 પ્રમુખ એન સુત્રાનો જ જાના ધારજ ધીસુધર્મ વવરાવ વાવવસાતા
 પ્રમુખ વરિમદ પ્રમાદ છોડોને મધાન્ વિધિજા વારવનુ મુદ્ધો ને વિવા
 ઉદારના કરવા જાવા વવા વોઈ મહાન્ માગસુરિ આવાવ જો દતેમનો
 વાસે દીસા દેવ આવાવ વધવાવજ વરે તો આગમનો મગ વપ વુવલ
 ધો વયોજાવ મનેરમ ત આવાવમાનવા વાંછા આવજોનુ મિતવાવ વલ
 વેગ સુવરાવ ને મવદિગોદ વપો વારાગારનો મોજમાન થાનો મવરન
 રહો આવ વેમકે મનાવારીને સાધુ તથા મનાવાયને આવાવમાન ધાવમ

पाठशाला ! उक्त लेख भास्कराचार्य जी के ही गण्डका है सो भास्कराचार्य विचार करें कि भास्कराचार्य जी थी मगवान वर्तमान स्वामी का प्रतिपादन किया माधु धर्म या लिङ्ग छोड़ करके परिमद्ध धारियों के आ शिष्य घने जो कि सयम से रदिन घन से विमृषित दुडिया घनाते ये पाठशाला क्या जाने भास्कराचार्य जी ने इनके धर्म को ही देख कर यह विचार लिया हो कि यही मगवान् के शासन के हैं ।

क्योंकि इनके पास धन बहुत है सो मगवान् भी ससार पक्ष में राजपुत्र होने से बड़े ही धनाढ्य थे शोक ! ! ! गेय ममीक्षा इनके मन की पंक्तों पर छाड़ते हैं ।

क्योंकि पश्चिम समालोचना में विस्तार का मय है सो यह तो पाठशाला जान ही गये ह गे कि भास्कराचार्य जी सयमवृत्तों त्याग कर परिमद्ध धारियों के शिष्य हुए और न ता कोई उनके गण्ड में भास्कराचार्य ही दुगा है नाही उपाध्याय सत्य है जब रूपम ही नहीं है तो फिर भास्कराचार्य कहा स हाथे ।

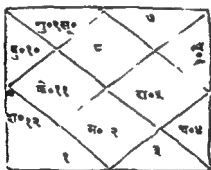
विन्त थी दुग्ध महराज का १९३२ का धानाभा माने शहर में महराज से दुग्ध हीगया थी महराज वीमसा के पदगाल् गिरा करके देश में अथ विज्ञय करने लगे ।

फिर भी पृथ्वी महराज ने मातेरकाटन रामपुरा मुधियाना फगर पगडा पल्लव, वरधन गहरा जमियादि गगनों में धर्मोपेय काये गगन दूरमद्वान सगगन भास्कराचार्य की पठशाला १९३३ का उन्मत्त कर दिया ।

धनाता में धर्मिक कर्म बहुत दूर । १ धर्मिक में दो बार पक्ष धर्म के मगवान् पक्ष मगवान् के धर्मिक में मगवान् का धर्मिक होन हुए मगवान् में दो धर्मिक में दो धर्मिक १ धर्मिक धर्मिक, २ धर्मिक साधनधर्मिक ३ धर्मिक धर्मिक

अपित् भी पूज्य महाराज (भी सोहनलालजी) का जन्म सम्बन् १९०१ माघ मास शुक्ल पक्ष प्रतिपदा स्वच्छन्द के जिलामें समरवाल नामक नगर के लाला मधुरदासजी की धर्म पत्नी माई लक्ष्मीदेवी के कुक्षसे हुआ है देखिये जन्म कुण्डली तथा आचार्य स्वर्ण भीपूज्य सोहन लालजी महाराजका जन्म लग्न। योगिकमाध्व १९०१ पौष मास धनार्क प्रविष्टा १८ माघ शुक्ला प्रतिपदा रविवसरें मेघ्न योग पुनर्वसु नक्षत्रे वृद्धिक लग्नोदये भोमपदा ।

श्रीपूज्य सोहनलालजी महाराज की जन्म कुण्डली ।



भी पूज्य महाराज परमशान्ति भूदा हैं भी गणपतिराय जी महाराज भी उक्त गण्ड में गणपतिराय जी का स्वविरपदसे विमुक्ति हो रहे हैं आ महान् शीघ्र दशों हैं और भी सच के परम हितैशी हैं स्वामीजीका जन्म पक्षकर राह निला स्वच्छन्द भीविममाध्व १९०१ माघ पक्ष शुक्ल पक्ष तृतीय भगल बार के दिन लाला मधुरदासमल भीमल की धर्म पत्नी माई गावा की कुक्षसे हुआ है स्वामीजी के जन्म लग्नके मह देखने से यह स्वयमेवही सिद्ध हो जाता है कि स्वामीजी महाराज परम हितैशी हैं ।

अथ पत्रम् ।

स्थिति भी माहदा वारे साधू जी भी भी भी भी भी भी
 आचरणाम्नी योग लिपी आचपुर सेतो माम्मायाम ने सुपसाता विमा
 यणा सचदरी सचवी बहुत बहुत करव धानवी भागे आपने तो मेरे
 कू मूलाय दया है परन्तु मेरे मन में तो माप घड़ी एक मूलने नहीं है
 कारण यह है जो बाल भयस्यापी म पने मरी पालना करी धन पना
 या जो दिया मेरे कू माह है सा सच मापक उपगार है भन भव जो
 अनुमाने लापा धारक मरी सेवा करत है तथा १४ साधू मेरे साथ
 है एतय भाप ही का उपगार है सा भाप क मित्रों के बहुत धनि
 लाया लग रहा है सा भाप क गण तो मर वं सब मालूम हैं मुह छ
 बदे नहीं जाते है माम्मच्छयक में भाप स चया भरत करी थी के मेरे
 कू भाप दुःख न करो परमा भाप ना गह क दुःख थ तो मेरा क्या
 जोर घाना या दुसरा मेने तो भापक भविष्य कथा नहीं कीया
 गो भात दिन नव अपना मूना या कदर भाप का निहा नहीं करी
 चलन भापक भद्रिह स्थमाय का तथा प्रमथय का तथा तरस्या की
 मदिमायन लाका भगन करत हु परन्तु ऊरु भाप पाद भाउदे हा
 तथा दिल मरमाइदा है माया म वनी भाभाता ॥ सा मेरे कू पडा
 दाइ दाता है सो तो कदा लगतिप सा मव भावन हरा करव मेरे
 कू अपना मूना कम का दर्शन करावना सो उठ घामासे मैं दिल्ली
 की तर्क दिगार करके आठग महीने मय नव सा भापने की दगर
 के लामा में विहार करके पधारत ।

तो भापका मेर हो उपगा मने जो मैं समुद्र के भयङ्ग स्थरा
 देखी है तथा ज व ताइ पनी के उ गर हसे है सो सब भाप कू सन
 ऊगा मेरा उमा राम गाह क उपर या कैनादी राव भव दे मैं ला
 मच्छी तर आचना हु जो भ प परमेश सज्जये के वास्त ऊर्दो

रूप-रस ही विचार करेंगे कि इसमें विद्वान का चेला नियम-विद्वत् पत्र होसका है वदापि मडा इससे रुग्ण हो सिद्ध हांगवा कि आत्मागम जो ने व्याकरण को ही कल्पित किया तथा माहो भामारामजी सुन्दर पद रचना करके राज्ञ-राज्य लिखमा हो जानतेथे जैसेकि उनके लिखे पत्र से स्पष्ट सिद्ध हो गया लिखने की गैजी इस प्रकार से ग्रहण करते हैं कि—परन्तु जद भाष पाद भाषा ही तदा दिल भर भाषा है भाषा में पाणी भाषा है सा मेरे को बडा दाह हाता है सो मो कहा गिग्यु । *इत्यादि मित्रवरो कथा यह व्याकरण क विद्वानों की भाषा है क्योंकि उक्त उक्त स निश्च होता है कि भामाराम जी को व्याकरण का जितना म् बोध नहीं था यदि बाध होना तो उक्त पत्र विमति निश्च हृदय प्रयुक्त समासादि से विद्वत् क्यों लिखते तथा व्याकरण का यदि सदा प्रकरण मो दया जाना तो क्यों के स्थान तो जान हाजते उस कि व्याकरण क सदा प्रकरण में लिखा है कि—

अकुरुविसर्जनीय त्रिहामूलीयाना कण्ठ तथा
शुद्धपाणा मूर्द्धा ॥

अथान् मष्टादश प्रकार का भजन पुनः करग जैसे कि—क घ ॥ घ क मोर विसर्जनीय त्रिहामूलीयाना कण्ठ स्थान ह मोर कर्ण के मष्टादश मेरु स्थान जैसे कि—टडडडपर, प, इनका मूलन स्थान है ।

मित्रवरो उक्त पत्र में भामाराम जी ने प्राय कण्ठ स्थान के वर्णों के स्थानपरि मूलस्थान के वर्णों का हा लिखा है जैसे कि—भाषा में पाणी भाषा है (कात्मा लिख्यु) इत्यादि सा कथा यह भामाराम जी ने अपनी बद्ध क परिवर्तन ना दिवाया है मरदय दिवाया है ।

* बाह ! ! ! कैसी सुन्दर काव्य भामाराम जी ने लिखी है त्रिम
हि हेमचन्द्रादि महानाचर्यों का कर्म्य रचित्र होखी है ॥

घित टेल नहीं है अथवा है क्योंकि साम्प्रतम काल के शोधकजन तो यह कहने हैं कि—इसे खोद भन्त नहीं मिला ।

फिर एक यह भी बात है कि—भारमाराम जो १९३२ सत्र में पञ्जाब देहा से विचार करके अमृतसर में आमान आ रहे फिर १९३३ का आमान भावनगर में फिर १९३४ का आमान जाधपुर में किया तो क्या यह तीनोंही नगर समुद्र के समान समानेवाले हैं ।

हा यदि जिना ग्वालकर नाम भारमाराम जी ने समुद्र बनाने कर लिया हो तब तो यारी बात है क्योंकि जब भारमाराम जी ने एक अविन द्रव्य को बहुत मान लिया है तो भला समुद्र की तो क्या हो बात है ।

क्योंकि मार किसो प्रकार भी भारमाराम जी का समुद्र न बनाना देवता सिद्ध नहीं हो सकता क्योंकि मारन के सूर्य में ३२००० हजार देश लिखे हैं किन्तु भारमाराम जी के जीवन चरित्र में केवल पञ्जाब, गुजरात मारवाड़ मालवा इत्यादि देशों के ही नाम लिखे हैं ननु अन्य देशों के नाम ? तो शोक है । ऐसे लिखने पर फिर ठिक्का है कि मैं भण्डा तरङ्ग जानना हुआ माप परमेश्वर सुधारके के वास्ते ऊठ हो तथा मेरा जल राग भाव के ऊपर था ऐसा ही राग बंध है इत्यादि मित्र बरो । अब राग की स्पृहा भी न दूर बरानी जी परलोक वास्ते उत्थित हुए भी निश्चिन्त हागवा ।

हा फिर दुष्टिया शम्भु ग्रहण करके धीरशासन के मुनियों की शपथ निन्दा करके पत्र काटे क्यों कर्य हैं ।

अपितु ओ किये हैं इस से भारमाराम जी ने अपनी बुद्धि का परिचय दिखा दिया है ।

दुना लिखा है कि मेरी मरजी यह है ओ मापकी सेवा कर रहा पास रहू दुस्तक मेरे क हनने मिले है आ निपनो से बाहिर है आधिक्यो अनुमाने दुरा १००००००० आत्म सेवा करते हैं इत्यादि ।

३४ सङ्ख १०० एकपौष्ट सयें जैन हैं इसीप्रकार भारतभित्र नामक पत्र में भी प्रकाशित हुआ है ।

तथा किमी २ तारोख में जैन १५ लाख भी लिखे हैं सो वर्तमान काल में जैनमत को मोन जामे हैं जैसे कि दयेताम्बर जैन १, दयेताम्बर मूर्तिपूजक जैन २, दिग्बरजैन ३, दयेताम्बरमूर्ति पूजक जैनो की जाना हो एक पोताम्बर जैन हैं ॥

सो सर्व जैनो में पाछ लाख तो अनुमान भीदयेताम्बर स्थानक वाली जैन हैं। नेचदिग्बर दयेताम्बर जैन हैं मब विचारने की बात है कि अब पोताम्बर जैन ही आमाराम जी के लिखे पुस्तक है ही नहीं, तो मया सवा की ता क्या ही भाझाह तथा भी धनय मगवन् वर्तमान स्थानोके भाषक १००० • खान उनसड सङ्ख हा अन्य सूत्र में लिखे हैं सो आमाराम को का बचन मछमजस है फिर लिखा है कि साधू मगयावके शासनक थोड हैं साधू स्थानी अनुमान ७०५८० साधवीपी एक सा पबस १५० के अनुमान हैं । मित्रवरो जैसे आमाराम जी स्थानी पैरामी धे नेसहा बड ७०८० साध १९० माधिये होंगी धम्य हेदेसेर पतीसहों का पुन मद्दिर विपल लख लिखा है बड भी पानमर के तीर्थवन् ही होवगा ॥

पुन। दलिये आमारामजी का अब आओवनरान जी महाराजने स्वयम्से से भिन दिवा था । फिर आमारामजी को दिसी भी पत्र ब्रायनहीं बादा ॥

किन्तु आमाराम जी लिखते हैं कि—रुतने दिन आ थोडी नही थोपी सो आपने मना कर दिया था परतु मैं बहालय सबर बड हाथि पटकाय—देखिये आमाराम जी के लख को परतु स्वामी ओपाराम जी महाराज ने इस पत्र का भी काहें भी प्रतुष्ट नही दिया । सो इल पत्र से पाठवों का आमाराम जी की दिया बुझि बिबेक स्वयं शर्च हाज होवगा होवेगा ।

तब ही मातामहाराज जी विरनचदादि सवेगी साधु भी ममूतसर में ही भागये । किन्तु विरनचदादि सवेगियों ने कहा भाजा कि । हमने भी भी पूज्य महाराज के दर्शन करने हैं सो हमको दर्शन करने की आज्ञा मिलनी चाहिये ।

तब भी पूज्य महाराज ने कहा करीबि—जैसे उनकी इच्छा हो । तब ही विरनचदादि सवेगी साधु भीपूज्य महाराज के दर्शनार्थ लंग हरनामदास, सनलाल जी बैठक में ही भागये इच्छामि जमासमजी शपादि पाठ पढ़ के स्थित होगये पुन प्रेम की बातें करने लगे तब भी पूज्य महाराज ने कहा करीबि—विरनचदाजी क्या देखा । तब विरनचदाजी कहने लगे । हे महाराज जी सिद्धाचल जी देखे । तथा भनेर मन्दिर देखे हैं तब भीमहाराजजी ने कहा कि—क्या कोई ऊँचाई छोप में देखा स्थान है कि—कदा कोई भी सिद्ध न हुआ हो । क्योंकि जब तो यह स्थान देखे हैं जैसे किसी गेठ की दुकान चलती है तब भनेर लोह गेठ जीके पास भात है व्यापार करते हैं जब यह भापन उठार् जाती है या शोठ इस दुकान को छोड़ जाता है वह भापन गिर पड़ने है फिर यह व्यापारी जन कदा पर नहीं भाते हैं ।

इसी प्रकार सिद्धाचलादि पण्डित हैं । क्योंकि जब मुनि जन परीनों पर साक्षात विद्यमान थे तब भनेर गृहस्थ या ब्रिह्मासु जन गहा जाया करते थे भीर ज्ञान दर्शन चारित्र का लाम उठाते थे । वनछाभी जब कहा है वहाँ पर । तब भी साहनलाल जी महाराज ने भी पूज्य महाराज से विद्वानि करी कि—मुझे आज्ञा दाने तो मैं इनसे कुछ बातें कहूँ ।

तब भी पूज्य महाराज जी ने भी स्वामी सोहनलाल जी महाराज की आज्ञा देदी ॥

भाषा पात ही भी स्वामी सोहनलाल जी महाराज ने विरन चदादि तपागन्धियों का निम्नलिखित प्रदन किये ॥

१. माय लोग प्रतिमा जी की आशातना ८४ मानते हैं कइना चाहिये अनिशय प्रतिमा की क्लिनी हैं ॥

जैसे कि महान् देव की जन्म अनिश्चय १ दोक्षा के पद्वान्त जो अनिश्चय प्रगट होती हैं या केवल ज्ञान क पीछ अनिश्चय प्रादुर्भूत हैं सर्व का यजन पृथक् २ है येमे ही प्रनिमा जो को अनन्तरये ॥

२ भगवान की आज्ञा दया में है या हिंसा ॥ यदि हिंसा में बढ़ोगे तो मरवाटो प्रयास करने रह सक्ता है अक्रूर दया में भगवान है तब भाव का घना सन्तानुसार नहीं ॥

३. जब भाव लोग मस्तिष्क काल में मोह होने वाले जीवों का नमोपण के पाठ से बचना करते हैं तब जिन मन्दिर में शिवलिंग वा श्रीकृष्णजी की प्रतिमा कहीं नहीं मस्तिष्क की जाती है क्योंकि शिवजी का भाव के मन में मन्त्रि सत्यक वाच्य भावक मानागश है।

४ जय द्वारका जी मरम होगा वो तब द्वारका में जिन मंदिर का था वहाँ यदि ये तब मरम कबो हुए यदि नहीं थे तब मठ बलिन सिद्ध हायेगा तथा फिर भनिदाय कहा करे ।

“इतो माया पुता सप्रद नामक पुत्रक पु” ८७ को ५ ति ४५५३।

ॐ ॥ श्री कृष्णादि वीरान्न खनिः शनि निन समूह भद्र भव
 तर भयनरु भवापट ॥ ॐ ह्रीं श्री कृष्णादि वारा न खनिः शनि जिन
 समूह भद्र निष्ठ निष्ठ डः डः ॥ ॐ ह्रीं श्री कृष्णादि वारा न्न खन
 विः शनि जिन समूह भद्र मममनिहिना मममम ववट ॥ यन्ता माभमान
 का प्रमाण भव विपन्नन का प्रमाण मो इन्निये उन ही पुस्तकक पुष्ट
 ५८ की प्रपन या शिनये वकि पुष्पाये न बाद विसर्जन करना चाहिये
 इत्यादि सो यह प्रतिष्ठा वा पूजा करने वाले भक्त हैं ॥

विषय १ यह लोक प्रणिष्ठा के समय मोक्ष प्राप्त मोर्चेदारों का
माध्यानादि कर्म कल्ल है भार मय मो पड़ते हैं ।

५ द्रोपति जी ने जिस जिनकी पूजा करती उस निनका क्या नाम रख उसका मंदिर बना जिस आचार्य ने प्रतिष्ठा करवाई।

६ भगवान् ने जिस माटी में प्रतिमा के पूजन का उपदेश किया किन् धावरुने धारण किया विधि विधान भी पूछा ३२ सूत्रमें कौनसा सूत्र कानसा धारक और पद्म मणि त्रिगुण का वधा स्वरूप है।

७ हिंसा का कारण क्या है दयाका कारण क्या है। आर इन के कार्य क्या करने हैं।

८ समस्कार मंत्र के पंच पदों के ४ विशेष कैसे समते हैं फिर वह ध्वनीय छिन्ने हैं अथवा ध्वनीय चिन्ने हैं।

शापादि जब प्रदत्त पूछे मछा वहां उत्तर की क्या भाषा थी तब विद्वत्पुत्रों कहने लगे कि इनको भी पूज्य महाराज के दर्शन करने पड़ने भाये हैं तब श्रीसोहनतालजी महाराजने कहा कि हा दर्शन करें।

अपित जब विद्वत्पुत्रादि साधु आने लगे, तब फिर कहने लगे कि यदि आत्मारामजी ने दर्शन करने होयें तो वह भी करलेयें तब भी पूज्य महाराज ने हुक्म करी जैसे उसकी इच्छा हो फिर विद्वत्पुत्रों बोले। यदि प्रदोत्तर करने होयें। तब भी पूज्य महाराज ने हुक्म करी कि—यदि आत्मारामजी की इच्छा प्रदोत्तर करने की है तो हम तय्यार हैं। यदि किसी और ने करने हो या किसी अन्यरूपान पर करने हो तो हमका सोहनतालजी की मंत्रांग।

मछा प्रदोत्तर छिन्ने करने थे। यह तो बंधन करने मात्र ही था। जब विद्वत्पुत्रादि बले गये।

तब भी सोहनतालजी महाराजने १०० प्रदत्त लिख कर आत्मारामजी को भेजे तब आत्मारामजी ने १०० प्रदत्त छेहर उडिवाला की ओर बिहार कर दिया।

छिन्नु उत्तर देने का काम हो क्या था।

फिर भी पूज्य महाराज की शेरों की अनेक विधि होने लगे तब भी महाराज ने १९३५ का बीससा समुत्तर में ही कर दिया।

फिर लोग निरानंद होते हुए एक सुन्दर शिमान बना के तिस में धी पत्र महाराज के शरीर का भाकट करके मदान महोत्सव के साथ निन व शिमानो पर १४ दुनाल पड़े हुए थे बादित्र बजने हुए मृत्यु सस्कार की मूर्ति में पड़ोव गये ॥

फिर अदन के साथ मृत्यु सस्कार किया गया निन लोगों ने उक्त महोत्सव को दत्ता हं पड़ लोग महाराजा रणजीतसिंह जी के मृत्यु महोत्सव की उपमा दिया करते हैं ॥

तात्पर्य यह है कि-जसा धी पुन्य महाराज जी का पंडित मृत्यु समाधि युक्त हुआ था तब ही लोगों ने परम महात्मव के साथ धी पुन्य महाराज के शरीर का अग्नि सस्कार किया ॥

मित्रभाभी पुन्य महाराज ने इस भारत भूमि में जैन मार्ग का परम प्रकाश किया। भार भाभा को गुडि मर्थ जिहों ने एक से लेकर ३३ उपरास पर्यं न नव किया भार प्रति चाम-सामें एक मण्डा दश मल त्याग रूप नव करत रह अथात् हर एक बीमासा में एक महार करते थे भाषका मरदीया काल धर्मार्थानि धन दुर्मा तीर्त मो-अपने बहुतसे पण्ड-अपम मल मान मन्त्र इत्यादि तप किये ॥ भाप-सङ्गत १ सस्कार १ भाप-जैनसूयों का प्रमन क-शास्त्रों के मो-देहा-यु। मा-येने महाम नृपत न स्वरचान का देव कर-मय न जग सङ्गार का-अनियता विचारते थे। कदाकि लष इस भूमि पर तीव्रहर चक्रवर्ती पल्लव, वासुदेव इत्यादि न रहे ता मग-अन्य की तो क्या हा-यान है। इत्यादि विचारों से लोगों ने भाभा का शास्त्र-विषय-फिर-याचाय पद-स्थापन करने की प्रवृत्ति-हान-अमी-कर्म-वि-सूत्रा म यह कथन है कि भाचार्य उपाध्याय विना ग-उ-कु-मूर्तियों का विचार नही करपन है, कि उ-ओ-महाराज के द्वादश अक्षय हुए जिन के निम्नलिखित नाम हैं समया ॥

• वतमान काल में धी पुन्य महाराज के शिष्यों का पर्यवार १

- १—श्री मन्मथजीय जी महाराज
- २—श्री रामजीय जी महाराज ।
- ३—श्री विजयजीय जी महाराज ।
- ४—श्री रामचन्द्रजीय जी महाराज
- श्री मन्मथजीय जी महाराज
- ५—श्री मोतीराम जी महाराज ।
- ६—श्री मोहनजीय जी महाराज
- ८—श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
- ९—श्री कृष्णराम जी महाराज ॥
- १०—श्री सखचन्द्र जी महाराज ।
- ११—श्री बालहराम जी महाराज ॥
- १२—श्री राधाहराम जी महाराज

फिर श्री सच में सम्मति करके अज्ञान परम पंडित रामचन्द्रजी महाराज का सचन १९३९ 'वेष्ट टुण्णा' तारीख ४ दिन मांगकादस नामक नगर ॥ भाषार्य पदपर स्थापन कर दिया ॥

कित भी पूज्य महाराज की भाषा स्वयं हीन से पूज्य पद से २१ दिन पदवान 'वेष्ट शुद्धा ९मी का स्वयंशाल हागव फिर भासघम परम शरीर उत्पन्न होगया किन्तु ज्ञानयल सदासोनता का दूर किया फिर भाषार्य पद भी परम शान्ति मुद्रा वैराग्य रूप ज्ञानि क वाला ज्ञेय भी स्वामी मोतीराम जी महाराज को दिया गया श्री सच में शक्ति के प्रभाव से धर्म की वृद्धि होने लगी ॥

१० वा १०० साधु ६० भाषार्यो के अनुमान है कि तु धीपूज्य महाराज से लेकर मध्यापि पर्यंत ४०० साधु के अनुमान हुए हैं यदि सबका स्वरूप लिखा जाय तो एक बार महान् ग्रंथ बन जाये । इसलिये श्री पूज्य महाराज के शिष्यों का ही नाम लिख दिया है ॥

निर श्री पूज्य भोतोराम जी महाराज के गच्छ में श्री स्वामी सोहनदास जी महाराज ने बहुत ही धर्म का उद्योग किया सो पाठ्यों के जानने शक्ती उदाहरण मात्र लिखते हैं ॥

जैसे कि १९३९ में श्रीस्वामी सोहनदास जी महाराज और श्री स्वामी गणपतिराय जी महाराज तथा श्रीस्वामी गणेशराय जी महाराज स्वामी चतुर्धा बाबासा अम्बडे शहर में था तब श्रीमान्माराज जी का भी श्रमाल भवत में हो था तब श्री पूज्य सोहनदास जी महाराज ने अम्बडे शहर में जैन धर्म का परम प्रकाश किया अर्थात् श्री पूज्य महाराज के सम्मुख श्रीमान्माराज जी नहीं हुए ॥

तब श्रीपूज्य श्रीमहाराज न ५ मदन साह्य तिलाकचन्द्र वकील पोरबंदर वाले थे फिर क्योंकि बाधुसाहिब ने कहा था कि माप के प्रशनों का उत्तर मैं श्रीमान्माराज जी से लूँगा सो मदन निम्नलिखित हैं ॥

१. प्राप्ति जी ने प्रणिम विमजिन की पूजा की क्योंकि स्वामीनाम सूत्र में तीन प्रकार के विम वा बहता का महत्त्व कथन किया है जैसेकि अर्थात् श्री १. मन्वन्त श्री २. केवल श्री ३. निरजस प्रणिम श्री जिस महामा न प्रणिम करवाइ जिस तर्पण के उपरान्त से वह मंदिर अनादिकाल अर्थात् प्रणीम विमजिन के जो जगत् श्री सूत्र है इन में श्री मन्वन्त का पाठ नहीं है किन्तु श्री मन्वन्त विमजिन के जगत् धर्म कथन सूत्र है इन में उक्त पाठ विमजिन है सो यह कहा जाय है ॥

२. (मन्वन्त विमजिन) मन्वन्त का कहा अर्थ करते हैं तदा यदि धर्म का हेतु मानने लगे तो मन्वन्त विमजिन द्वारा कहें कि तर्पण

॥ श्रीमान् पूज्य सोहनदास जी महाराज का पूज्य वृत्तन स्वामी जी के अंतर्गत में है किन्तु इस स्वामी पर भी उदाहरण मात्र हो दिया गया है ॥

॥ इस स्वामी पर श्रीमान्माराज जी महाराज का पूज्य वृत्तन स्वामी जी के अंतर्गत में है किन्तु इस स्वामी पर भी उदाहरण मात्र हो दिया गया है ॥

केवली जोगेपुच्छा कहणे घोही नहेच नयेउ ।
 रिद्धत्थनुचियमिणिह चेटयदञ्चम्म वट्ठिता ॥१२०
 कञ्च चट्ठवमोमयाण सुगवानेयरनया ।
 रट्ठनाहवत्थेण भरहोत्तजगट्ठया ॥१०६ ॥
 रत्तपद्म सञ्चरिनामणिदध चक्रिद्ववाम्पुदवट्ठ ।
 पूड्डननिजणण जिणुद्धारम्प न्तारा ॥१०७ ॥

भाषा—इस गंधारों का सागण इतना दि है कि बेयली
 मन्वान न कहा है कि छैन्य द्रव्य को वृद्ध करने से मनोकामना पूरी
 होनी है तथा कल्प कला का गति धारण साध्यरूप तथा सूर्य
 समान शान्ति कामरूप श्री ज्ञान की भावद्वारा कल्पवृक्ष तत्त्व तथा
 जिगर्मा रत समान तथा चन्द्रसीकसद्वत् समान वन्यनीय होता
 है जो पदर ज्ञान मदिग का उद्धार करता ॥ ॥

निय निवधरो ! यद्मनात्त कथन कहा ता मीर कथा है क्योंकि
 किम कवली न उक्त उपदश किया है किम सूत्र में गानमज्ञा ने उक्त
 नियर काह मा मदन किया है ना हमसे स्वत हो निद्रा जाता है
 कि यह सब मूलन प्रयत्नारों का लीग है ॥

फिर भत्तरत्तवत्तानपरन्ता में जित्ता है कि —

नियदत्तवमउत्तवनिणिद, भवणाजिणत्रिअवरपइठासु ।
 वियरडपमत्तपुत्थए, मुनित्थनित्थयरपुआसु ॥ ३१

भाषा—इस गाथा में यह दिखलाया है कि धावक जिन
 मदिग जिन किम श्रुताता जिन पून तथा पुस्तक ज्ञान में धनवा
 द्य हसदि तथा भागधना यह ना की ११ या गाथा में येने लिखा
 है । तथा ।

हो है क्योंकि जय भानु धावक का सञ्चकता ने व्यापारादि वा
 दादेश मन एकादश धावक प्रतिमा इत्यादि सब कथन कर दिये ता
 मगनिचारन को दात है कि एक निरनियम रूप जिन पूजा का हो
 पाठ सुसर कर तथा वि निनकी भाव के कथनानुसूल परम
 भावदपकता पोइस म सिद्ध हाता ह कि यह कथन हा इठ कर है ।

फिर भी भानु राम जी ने धो समवापग जो सूत्र का प्रमाण
 दे कर हर सेवकों को भानु दिया है वह भी कथन भानु राम जी
 का हासकम्य है क्योंकि :-

धो समवापग जो सूत्र म जो केवल उपामर दशाग सूत्र का
 इतना हो कथन है कि, धावकों के नगर के नाम नगरी के बाहिर के
 उद्यानों के नाम फिर उद्यानों म विन द्यनों के मन्दिर थे उनके नाम
 धावकों के धर्माचार्यों के नाम इत्यादि कथन है किन्तु जिन मन्दिर का
 दर्जी भी कथन नहीं ह इमलिय भानु रामजी का कथन मनव्य है ।
 सो धो पूज्य महाराज भानु राम जी के साथ शास्त्राथ करने वास्ते
 जयपुर मक प्यारे ता मल भानु राम जी कथा शक्ति रखते थे कि
 धो पूज्य महाराज के समक मान ।

क्योंकि जिन लोगों ने भानु रामजी के साथ प्रश्नोत्तर किये हैं
 वे कहते हैं कि भानु राम जी का प्रस्तावर करने का शक्ति बहुत हो
 म्दूनी थी ।

जैसे कि टुपियना में भानु राम जी ठहरे हुए ॥ भार धो पूज्य
 महाराज मा नचियने में हा शिराजमान थे तब भीमान्छाला
 दतिपामन्त, लाटा भाइयल्ल यह हा भावक भानु राम जी
 के पास गये और पूछने लग कि ? हेमदामन ।

एक पुरुष ने भोरामचन्द्र जी का मन्दिर बनवाया भार एह ने

किस प्रकार मजीब में जीव सजा धारण करते होंगे क्योंकि यह निर्यात कम है ।

क्योंकि आत्माराम जी भी तब निर्यात आसाद नामक ग्रन्थ के ३१२ पत्रावलि लिखते हैं कि ।

प्रतिमा स्वल्प बुद्धिना ' मयात् प्रतिमा का पुनः मत्त बुद्धिवालों के वास्ते हो है ' सो क्या आत्मारामजी न तीन आंग के धारकों को मत्त बुद्धिवाले नहीं सिद्ध किया है मत्तदय मय किया है ! सो यह क्या महामा जी की बुद्धि का परिचय नहीं है ? मत्तदय है ।

तथा सदैव काल में जीवों का लान में बाधित रहि होती है सो लोम के पशोमून हो कर बहुत से मत्तजन धन से भी पतित हो जाते हैं ॥

जैसे कि ! आत्माराम जी के जीवनचरित्र के १४ व पृष्ठोपरि लिखा है कि ! अहमदाबाद में एक दिन श्री सच ने मलादकरके श्री महाराज जी साहिब आत्माराम जी से आग्रह करी कि आपने देश पत्रावलि में जो मते आग्रह बनाये हैं तब का हम मद्ददनी चाहते हैं तब आत्माराम जी ने कहा कि तुमारी मरजा तमारा धन है कि अपने स्वधर्मियों को मद्दददनी इत्यादि पठकल्प फिर बहुतसे पदार्थ अहमदाबाद से पत्रावलि में आपसा कई मद्दजन मागस पराह्मस हुए क्योंकि मद्दददनी का पदार्थोपयोगमात्र का है न तुल्योम का ।

किन्तु महा मा आत्माराम जी का मद्दधन ही था कि निन से पुनः लिया जाय उसी ही की ममावक्य निदा करपा जैसे कि जीवन चरित्र पृष्ठ ६३ पर लिखा है कि ! बार जितनेक लोगों के दिल में रहकों का मरिष्टा चरप देखने से जैन धर्म के ऊपर डेव हो रहा था दूर किया ! क्योंकि लोगों को मलून हो गया कि :—

जो मद्दधन है वे मजीब है और पर पीनकर धारण करने वाले उन्मठ धन एकपक्ष है ५५ इस वसत नी जिसी शत्रोय मलून के

विश्व धीः य मन्त्रात् नै बहून् से तपाग्निर्गर्भो साय मन्त्रोत्तर
विदे । भीरु इत जीवो को मन्त्रोत्तर हो निदत्तर विना ॥

अपि यद् योग हठम् हो हानस स्वयम्भवा त्वाग मर्ग करते
हैं किन्तु सबाध जन इन में रहना योगार मा नहा करते जैसे कि
मात्रेष्टोत्तरे ही एक महाशयने सगेगी मन के मसरय इन का के धी
पूज्य मन्त्रात् को शाय ली थी जिस का नाम गन्धालाल था भीरु
तब ही लुपियने से एक सगेगी सदेव मन का त्याग के रायशट में
भी गन्धालाल था गन्धालाल ओ मन्त्रात् का पाव पड़ों ब गण
जिस का नाम मन्त्रालाल था इत्यादि भीरु भी कर मन्त्र जन इसी
प्रकार इस मन कविजन मन के साथ वचन करत हैं क्योंकि सूरों म
पुनः २ यदा वचन है कि । आत्मा तप सपन से ही पार होता है न
न मन्त्र पदायों स ॥

या इसी प्रकार योगार में हेमचन्द्राचार्य अपने बनाये द्वितीय
प्रकाश में लिखत हैं कि ॥

● कचग मणि सावाण धमनहस्मा मियभुवणगल
जोकाग्निज जिणहर त गोवि नवम जमो अहिआ ॥११॥

अर्थार्थ — हेमचन्द्राचार्य कहने हैं कि । किसी पुरुष ने सुधम
मन्त्रादि युक्त मन्त्रों स्तनों से विमूषण परम रमनाय ऐसा दिन
मदिर बनाया किन्तु तिस से भी तब सपन का फल महान है ॥

१॥ कचगमणिमोशनहस्मन्पुष्पोद्भिन्नसुरवणगलम् ।

माशारयेत्त्रिनृदत्ताऽवित्रं रुक्मादिकम् ॥ १ ॥

कचहठमपनगुणा ।

सबाधसत्तितृत्तानु—

कचमन्त्रिसोशानेयम् सदस्सत्तिसुधमनले ।

जकारधेज्जिन्नदरेतमोवित्रसत्ताना मन्त्रगुणोत्ति ॥

पुष्पाढोददयः ।

होसो। तब मान्य हो पड़ेगा कि मान्यारामजी का जतिही हामान
 एरमा एरमा बरगार जो सब में लिखा है कि, जति बन गुम
 हमा बादिने पाठकाय हम मान्याराम जी के कपन के बघा समोसा
 हरे हम को तो ऐसे बघन भी भाष्य करने बन्पन नहीं ह किन्तु
 मान्याराम जी शीघ्र ही अपने बने बघन से पृथक् भी हो जात थे !
 जैसे किन्तु एरमा-एर मे मान्याराम जी स प्रदन किया कि मरुमा नी
 जब भाष भाष मरुमा से प्रनिमा की अधिक मनने हा फिर उस
 प्रनिमा का बिबदे मरुमा क्यों कतनी है तब इस बात का उत्तर
 मरुमा का सग-हृष्टगोश्वर के १३१वें पृष्ठपरि इस प्रकार
 लिखत हैं ।

प्रनिमा छे ते कथापनाकव छे माटेतेने बहा सघटमा कथापन दाप
 मरुमा कथापन के त काइ भाषमरुमा नयी पन मरुमातनी प्रतिमाछे
 इत्यादि।

(मनीषा) पाठकाय देनिध उक्तप्रश्न होन पर मान्याराम जी
 म मरुमा एरमा की किस भार कर्तव्य है इस से सिद्ध होजा है
 मान्याराम जी परबरा बिद्वद्व लिखने में भी किन्तिव सङ्चित भाष
 नहीं करते थे क्योंकि प्रथम लेख में भाष तीर्थहर से प्रनिमा अधिक
 सिद्ध करो ह इस लेख में मान्याराम प्रनिमा से अधिक लिख दिए है ॥

फिर यह लोग तरुधम भी सूत्री से बिउत्तर्य हो करते हैं जैसे
 कि जिस नगर में दिन मरुमा नहीं होना बहा पर यह लोग यह
 मनिप्रद करत बैठ अते हैं कि जब तक भाष लोग मरुमा नहीं बन
 करेगा तबतक हम मरुमा नगर में पारया नहीं करेंगे ॥

तब बहुत ही माले भाइ इस प्रथम की ना अनेते हुए इस गारथ
 आल में पन अनेते हैं फिर पटकाया की दिसा में कटिवद होजाने
 हैं किन्तु बिबार दोहृष्टपृष्ठय इस बघन से मुक्तिदाय मूक्त (छट)
 हो अते हैं ॥

हुई, और मनुमान ०१ नगतों के बहुत से आश्चर्यन भी दर्शनाये
भाये हुए थे और फिर महान् महोत्सव के साथ दो दोहा भी हुई ।
तब श्रीपरमाचर्य्य श्रीमोतीराम जी महाराज ने भी सध की
सम्मेलनानुसार श्रीसोहनलाल जी महाराज को १९५२ चैत्र शुद्ध ११
को पुरस्कार पत्र पर स्थापन कर दिया ॥

और श्रीमती आर्यापार्वती जी को गणपच्छेदिका की पदपी
की गई पुनः मानद के साथ महोत्सव पूर्ण हुआ ॥

किन्तु तिस समय में एक पुरुषोत्तम नाम का सपेगी मामाराम
जी के भाचार को वृत्तित दल कर श्रीपूज महाराज के पास
वैसित हुआ ॥

प्रश्न—हमने जना है भाष लोग जिन सूत्र में मूर्ति पूजा का
विधान माता है वह सूत्र लोगों को सुनाते हा नहीं जेकर सुनाते
हैं वह पाठ ओ मूर्ति पूजा को सिद्ध करता है उसे छाह ज ते हैं और
वहीं २ सूत्रों में जो ओ पाठ मूर्ति पूजा से सम्बन्ध रखते हैं उन को
हठाल से मिटा देने हैं सो क्या यह कथन सत्य है ॥

उत्तर—हे भगव ! यह सचकथन मिट्या है, उक्त कार्य्य हम
नहीं करते हैं और बाही सूत्रों में मूर्ति पूजा का विधान है ॥

सो इस प्रकार मामाराम जी भी भगव बनाये "महान विमिर
माहेश्वर नामक ग्रन्थ के द्वितीयखंड के २०५ श्रुत वलि १४वीं से
इस प्रकार से लिखते हैं ॥

प्रश्न—जमने क्या है जो सूत्रों में कथन करा है सो पदपत्र
करे ओ पुनः सूत्र में नहीं कहा है और विद्वद्वाचर्य्य लोग में हे कोई
कते कथना और कोई किन्ही तरह करता है तिस विवरण ओ कोई
पृष्ठ २४ गीतार्थ को कहा करता किन्तु है ॥

उत्तर—ओ वस्तु अनुपपन्न सूत्र में नहीं कथन करा है करते

* यह द्वितीयवृत्ति के पत्र का प्रमाण है ।

दिखाने लगी है तो क्या वे अमर्य मापन नहीं करने तथा क्या वे सूत्रों में अनन्तर नहीं हैं अथवा है ।

क्योंकि यदि सूत्रों में भामाचार्य जी की मूर्ति पूजा का पाठ मिलता तो निरुधरे वे कर्त्ता निश्चय कि सूत्र में और धर्म का विधान नहीं है ना उक्त कथन से सिद्ध हो जागा कि भामाचार्य जी की ओर भा मूर्ति पूजा के विषय में सूत्रों से पाठ जब न मिलता तब ही भामाचार्य जी ने इसे लिखा ।

किन्तु जब भा मार्य जी मूर्ति पूजा की कटि कर जानने हैं तो निरुधर जी की सूत्रों के मान से क्या इन में काटत हैं तो यह इन का इत है ।

किर लिखा है कि यह बात लोगों के चित्त में सदा प्रकाशमान रहती है तो सच है क्योंकि गांधी जी इन बात का सूत्रों से विच्छेद उनके उक्त पूजा का निषेध करते हैं ।

तो हे स्वामी लोग भवता भामाचार्य जी की कथन की स्वीकार करके जैन सूत्र में मूर्ति पूजा क्या है । इस सम्बन्ध का वाच्य की छोड़ो । यदि आप सा भामाचार्य जी से अधिक विद्वान् । तब तो भामाचार्य जी के उक्त की अनन्तर रूप सिद्ध करके काट करे यदि भामाचार्य जी से स्वतन्त्र विद्वान् हो तब इन असत्य कथन को त्याग । किर भामाचार्य जी और धर्म की कटि कर सिद्ध करते हैं । तो भी यह कथन युक्ति बाधित हो है ।

क्योंकि यह कति भी बद्धाव के वर कथनात्म्य है जैसे हिंसक एवं किर विचारनीय बात है यदि यह कटि सत्य कर हातो तो सूत्र कर्त्ता मूर्ति पूजा में ही रखते ।

जब सूत्र कर्त्ता ने इन सूत्र में उक्त कथन की रखा ही नहीं इस से सिद्ध होगा कि यह कथन सूत्र कर्त्ता से विच्छेद है अथवा सूत्र सम्मन नहीं है । और भी पूरा महाराज का १९३३ का धोनासा

हुशियारपुर में था जिस काल में हों बीर विजय आदि सवेगियों का भी श्रीमाना हुशियारपुर में था किन्तु कोई भी सवेगी श्रीमदाराज के सम्मुख नहीं हुआ।

फिर भी पूज्य महाराज ने १९५८ का बीमासा मालेखोरले में किया । और तिस समय ही भी परमाचार्य ज्ञान तन्त्रा ज्ञान में समझवत भी पूज्य मोतीरामजी महाराज का भीगणाचरणेदि भी गणपतिगणेशो महाराज इत्यादि साधनों का बीमासा लुधियाने में था तब भी पूज्य मोतीरामजी महाराज को उबर आने लगा मरिनु सार्वाङ्गी की मति हुई हो ज्ञान स नया आयुस्वद्व होने के कारण से भीपूज्य महाराज १९५८ भादपन कृष्णा द्वादशी को स्वर्ग गमन ।

तब बीमाल क पदचलन भी गणपतिराय जी महाराज का भी
छात्र बन्धु जी महाराज इत्यादि २६ साथ पटिये से मैं पकड़ कर
दिए भी कपड़े सम्मति करके लम्बाला निवासी कागो छत्रमण्ड
ज्योती मन्दार का मन्दारसिंह निवासी भावभी जी सम्मति क साथ बा
कामान् छात्राधिकारस्य पटियेष्टावन्तो भी सम्मति भनकूझीसयमे
महान् भानन्द क साथ भावुय मोनीरामजी महाराज की भावामक
१९५८ मार्गशीर्ष शुक्ल ८ मा का गुरुदिवसि बार क दिन मन्मथ
के समय पूर्वाह्न विधि क साथ भा लयन भी स्वामी साहजिकान्
महाराज का श्रीगणेशार्थ पूज कर व्याख्यान कर दिया तब स ही पथी मैं
भीपूज साहजिकान् जी महाराज वस जिनका मर्मम हा गया मेरे
भी साथमे शालि क प्रमाण स भनक व्याख्यान कार्य हुआ रण वा ह
रहे है।

अदिन श्री कृष्ण प्रसादात् मनस्य ब्रह्मस्य आसीद् देव एव यो
परि विराजमानः ॥

अच्छे से पढ़ने से पहले का प्रश्न पत्र पढ़ो। काहे (२१)।
क. कोसला अक्षरों से चित्र ३

फिर भीमाभा के पदधान् अघावत शोष हो जाने के कारण या
उत्तर में स्वधा के प्रयोग से भी पूज्य महाराज अमृतसर में ही
भीमान् छाछा हरनामदास सतगुरु की कोठी में विराजमान होगये ॥

बिन्नु भी भाषाये महाराज के पधारने से अमृतसर में धार्मिक
अनेक कार्य हुए या हो रहे हैं ।

शिव पाठ को ! एक बात और जो तत्प्राग्विष्टों में बड़ी
प्रधानता से चल रही है कि किसी ब्रह्मात् मुनि को यह शोक किसी
प्रकार के फल में वेष्टन करने समान अंधधर्मसेवनित कर देते हैं !
जिन्हें भाषाही असाध्य रूप निहा लिख के उस क नाम से मुद्रित कराते
हैं पुन कहते हैं, भाषाये यह प्रथम दृष्टिवा या फिर इसने दृष्टियों
के अनिष्टाधारण देख कर तथा जैन भूतों में स्वाम २ मूर्ति पूजा
के पाठों को बदलकर (जो पाठ दृष्टिसे किसी को सुनाते नहीं)
विचार दिया फिर सम्पन्नक उन्वोद्धार को देखा तब ही इस के
विषय में मूर्ति पूजा महान् मार्गदर्शित हो गये फिर इसने बड़े २
दृष्टियों के साथ प्रभावकर विषय लिखु किसी भी दृष्टिक न इस को
बदल नहीं दिया जो फिर इस ने जान लिया कि यह दृष्टिक मात्र तो
एक बर्षों के अन्तर्गत ही है पुन इसने पुनः समान अंधधर्म मूर्ति
पूजा रूप स्वीकार कर लिया शिवपाठको ! यह सब इनके स्वधर्मोक्त
अभिन्न कारण हैं हम भाषाये इस विषय का उद्गारण देते हैं ॥

जैसे कि मनुस्मृत १५६४ वर में अन्तर्मन्त्रिण कहने अमृतसर के
एक धर्मोक्त स्वधर्मोक्त संप्रदाय को किसी प्रकार करने परे में हाथ
कर बहारत अंध धर्मोक्त में भ्रम दिया ! और उसको एक शोक
भी अंधधर्म की निहा रूप लिखकर भेजा और साथ में यह भी
लिख दिया कि भाषा देने बमोर्त्ति इस शोक का प्रकाशित करा हो
तो दृष्टिकोक्त में एक यह लिखकर बलम्ब दिखाने को भेजा
को दृष्टिको के अन्तर्गत दृष्टिकोक्त यह को बलम्ब देने देती ही
हम इस उद्गारण पर देने हैं बेकिदे !

४—आवितामपि चैत्यवन्दन मात्र पढ़कर "मुरली को मनस्सहार करने की किन् शास्त्र में लिखी है ।

५—नमोऽङ्गु सिद्धाचार्यो पाश्याय सत्र साधुभ्य ये भवतः किस भागमें में है ।

६—आदिनि चेत्याह किस भागमें में है ।

७—उत्तरमाह लघुशाल्मीस्तत्र ओ प्रतिष्ठापन में बोलने हो किन् शास्त्र में लिखा है वे प्रतीकमय में स्तोत्र पढ़ने ।

८—प्रतीकमय में स्तयन और सज्जाय बोलने हो सो कोण से भागमें में बोलते हैं ।

९—तीर्थ चत्वार ओ तुमेरे पत्र प्रतीकमय में है सो किस शास्त्र के अतीये ।

१०—पोसदनुपचयवर्णाया पोसदुपारवानी गाथा किस भागमें में है ओ तुमारे मन्त्र में प्रचलित है ।

११—सिद्धाचल पर्वत की चैत्यवन्दन करने ये बाह्य लिखी है ।

१२—पलीताने के पान ओ सेतकओ नहीं है उस में स्नान करना महाम किन् भागमें से बतलाते हो ।

१३—दुर्गे और बीपरा अगरहैं इत्यादि वस्तु अनाहारक कहते हो सो किस भागमें में येमी वस्तु को अनाहारक लिखा है साथ इस क येमी निरमेविषा अथ के पशुव वस्तुओं की ओ तुम रात्रो में खाते हो ता तुमारा रात्रो माज्जन मन मङ्ग होना है या नहीं ।

*पत्र जैसे लिखा हुआ था तैसे ही यद्वा पर लिखा गया है किन्तु हमने पत्र को सुद्ध करना ठीक नहीं मानकर क्योंकि लखक की ओ आया है वह मध्यजन शीत हो जान लेंगे इस प्रकार नय पत्र में सुद्ध नहीं किये गए तथा यदि सुद्ध करके द्वितीया बार लिखते तो पुस्तक के अन्तर्बद्ध होने का मय था ।

२५—दुसरे कान्ति मन्त्रालय भी मैं जो धोवन प्रत मा पड़ता दिख का पटा है या कभी नहि लेन क्या कारण ।

दसमतचुनेटाल ।

दठवगन । इन प्रदनों का उत्तर आत्मानन्द जैन पत्रि का प्रकाशित नहीं हुआ है विचारये की बात है हमारे प्रिय सवेगी भार्गव सत्यादि प्रों को एक कान्ति कथा २ जान कर रहे हैं क्योंकि सवेगन में 'शास्त्राभ्यास मो हान्य ही है किन्तु मन कलित कर प्रयों का अभ्यास महान है हम वास्ते इन लोगों की बुद्धि विवृष्ट हो रही है, और फिर यह हमारे प्रिय भार्गव इति वास्त प्रदन का उत्तरन आने से शीघ्र ही छोड़ करने लगाने हैं मुख से भयानक बोले हैं ।

दहहरण । जैसे कि सन् १९४३ में भास्वाराज जो कसूर (हृदपुर) में ठहरे हुए थे तभी श्वेताम्बर स्वामीक वासी भावक समुदाय जैसे कि टाला ओवपगाइ ११५५५गाइ जीउदेगाइ, दिवानवद, हरराम टाला भास्वाराज गुहदसेगा, दुविचन, मनेराइ बिस्तराइ लाल गराज हरशाइ बबूपरमानन्द पत्नीहर मठेराम इत्यादि भावक भास्वाराज जो के पास गये और यह प्रदन दिया ।

कि मार हमसे एक जैन राज्य के मूठ पाठ से मूर्तिपूजा सिद्ध करके दिखलाये ।

भास्वाराज उ — जैनराज में मूर्तिपूजा का विधान है ।

भास्वाराजजी के जीवन कालिक क प्रदन से मा नि पय होता है कि । भास्वाराज जो ने जो कुछ पन्न दिया है वे सर्व श्वेताम्बर जैन मुनिों से ही दिया है किन्तु सवेगन के धारण करने के पदवात् किसी भी सवेगी से कोर म पुस्तक नहीं पडा है ।

१३८ बनों के का भावक उन भास्वाराजजी के पान नहीं मर वे मार का मय मिट गये थे ।

धायकमडल—कौनसे सूत्रमें है ॥

आमाराम जी—दशमै कालिक सूत्रमें है ॥

धायकमडल—हम न पकी भीमान लाला हरजनराय जी।
महार से दशकालिक ला देते हैं आप हमको पाठ दिसला दें।

आमाराम जी—अच्छा लादा।

धायकमडल ने जब धामान् लाला हरजनरायजी के महार में
स भी दशम कालिक सूत्र लाकर आमाराम जी को दिसलाया
और कहा कि आप इसमें मूर्ति पूजा दिखल वतन आमाराम जीने
भी दशमै कालिक सूत्र के पाठ की चूलिका लिखी होगी है उन में
मे एक गाथा दिखलाई तब आ धायकमडल ने कहा कि यह
सूत्र का गाथा नहा दे और आप की प्रतिज्ञा यह थी कि हम भी दशमै
कालिक सूत्र से दिखलावगे सा चूलिका न सूत्र है नाहो प्रमाणीक है
गिर इसका पता कान है ?

जब इतना धायक मडल न कहा तब आमाराम जी कांपा
तुर होग। फिर अनुचिन शब्द बोलन लग गये कथा जान धायक
मडल मच्छे मुहून में न गया हागा जिस वास्त आमाराम जी तरंगये।

तथा भी सूत्र टन गम ठीक कहा कि (आ उभ सरण जनि) मर्धांत
हारे हुए पुनर्जन्म को बाध हो का शरण है, सो इसी प्रकार आमाराम
जी ने भी धायक मडल के साथ वचन किया ॥

निर्भगण वर सरेगी लाग वतन शब्द स ही मूर्तिपूजा सिद्ध
करणी व हों है सो यह कहा ये व शब्द है जिस के विषय अमरकाव
में ऐसे उदघाट है यथा :—

(वत्सनापनन इति उावगन मदस्व) मर्धात् स्व भीर आवतन
यद दाना नाम यज्जाला की मूर्ति का है ॥

जिस की रज्जुगा रंग मूर्ति पत्रा में व्यवहृत करत है शब्द ॥

प्रश्न—मूर्ति ध्यान का कारण है इस लिये ही पूजन वाच्य है ॥

उत्तर—मित्रवर ! यह भी बदन धार वा हास्ययुक्त है क्योंकि
 काम का मन्त्र ही वायु तारा है मोक्षेन का कारण जटकर मर्त्य
 दुमा करता यदि मूर्ति का रूप मानने को बरा कार्य पर्यन्त बनाये
 हन्मिने क्षेत्र के बराबर वा कारण मोक्ष अज्ञोयको मनप्रसा ही है ॥

उत्तर—जैसे सामान्य वस्तु में भावनात्मिक की भाव-पक्षता है
इसी प्रकार स्वप्न के समय में बुद्धि की भाव-पक्षता है।

[illegible]

प्रश्न—किस विधायक ने कहा कि वह इस विधेयक को पारित करवाएगा ?

उत्तर—जिस प्रकार लोह के पदार्थ से बने हुए बेलन के अन्दर से पानी निकाला जाता है वैसे ही इस प्रकार के बेलन के अन्दर से पानी निकाला जाता है।

ਸੁਆਮੀ! ਦਿਖਾਏ ਅਰ ਤਿਹ ੨੧੩ ਕਾ ਕਰੰ ਘੋ ਕਸਿਨਾਹ ਕਹੀ ਹੈ
 ੧੦ ਵਿਹ ਤੁਹੇ ਕਾਹ ਕਾਹਿਰਾ ਕ ਘੋ ਕਸਿਨਾਹ ਕਾਹਿਰਾ ਕਾ ਕਹਾ ਕਾਹਿਰਾ
 ੧੧ ਕਾਹੀ ਹੈ ਕਾਹਿਰਾ ਹੈ ਸਦਾ ਤੁਹੇ ਕਾਹਿਰਾ ਕਾਹਿਰਾ ਕਾਹਿਰਾ ਕਾਹਿਰਾ

[illegible]

दाता कैसे बन गया है। हमोलिये यह मूर्तिपूजा यकि वा मूर्तपूजा
 थापित हो ह। तथा निम्न प्रकार यह छात्र मूर्तिपूजा में हठ करते
 हैं इसी प्रकार मूर्तपूजा विषय में भी यत्नाव करते हैं जिस के लिये
 अमर सूत्रों वा प्रार्थनों के पाठ दाने हुए भी यह लोग मूर्तपूजा हाथमें ही
 रखते ह सो जिज्ञासुजनों ! इस के प्रमाणार्थे जैनहिनेच्छु, पत्र ईस्वी
 सन् १९०६ माह जुलाई, अंक ६ पृष्ठ ६ से देखिये —

श्रीमान् सुवादक वादीलाहजी लिखत हैं कि मूर्तपूजा का सबब
 के जिसको हमने बिन्दुस्थ छोड़ दिया था उसको छेड़ के गमीर कर
 देने वाले भाइयो खुद जिन किताबा का मानन हैं उन किताबा का
 अन्विषाय यहां करवाने हैं । मूर्तपूजा पाटा, बाढी, भार जो तरणी
 मिगता ॥

द्वितीय शिष्याराध ! श्री विजयवर्म सूत्रि के प्रमाणिक भाषक ने
 संवत् १९८९ में बनाया है उस में लिखा है कि :—

मुत्तमाधेने मुहपनि, हेठीपाटोधार ।

अनिहेठेदाढायइ, जोतरगलेनिवार । १।

एक कान धज सम कहो, गभे पडेवडी ठाम ।

केहेवोशीसोपली, नावे पुण्य ने काम ॥ २॥

सब इस हास्य रस युक्त काव्य में मूर्तपूजा का हनु बराबर सम-
 जाया है ! देटें में वैसे की कसनी बांध रलने ॥ क्या पुण्य हागा !
 वैसे की कसनी ना हाग में रखन से हो उपयोगी धो छवि विजयजी
 साध हिम का कर्म है संवत् १८९० में श्री रुचि विजयजी महा-
 रात्र में, हरिबल प्रणजी का राम बनाया है उसमें प्रमाण संबंधी हत्य
 के बारे में उपदेश दिया है कि :—

मुत्तमयोधी जीउडा माटे निज पट्टरुमं,

साधुजन मुत्तमुरति बाधी कहे जिनधर्म ॥ १ ॥

सुविहितमुनिजानीये माडे निजपटकर्म ॥

साधुजन मुखमुपति चाधी कहे जिन धर्म ॥ २ ॥

श्री भोपनियुक्ति गाथा १०६६-६४ की चूर्णी ।

चउरगुलविहत्थी एयमुहणतगस्सउपमाण वीय
मुहप्पाण गणणपमाणेणइक्कि ॥ १ ॥

सपाइमरयेण पमसणठावयनिमुहपत्ति नास
मुहच घधइ तीएवमहिमउज्झतो ॥ २ ॥

सपातिमसत्त्वार्थगार्थजलरद्भिर्मुखेदियतेरज स
चितरेणुस्नत्प्रमाजनार्थमुखवस्त्रिकावदनि नासिका
मुखचघ्नानिषयामुखवस्त्रिकपात्रमतिप्रमार्जयन्त्ये
नयेनमुखादोनरज प्रविशति । श्रीप्रवचनसारोद्धार
गाथा ॥ ५२६ ॥ सपातिमजीवमाक्षिकाया रक्षणार्थं
भापमाणेर्मुखमुखवस्त्रिकादीपतेतथारज सचितपृष्ठी
स्तत्प्रमाउर्जनार्थंचमुखपातिकादीयते ।

रेणुप्रमाउर्जनार्थं प्रविशदयति तीर्थं । रादयन्तया
वसति प्रमाउर्जयन् माधुर्नामा मुख च घ्ननाति आ
छादयति । पुरिमद्वका प्रापश्चिन ।

श्री महाभारते में मुक्तद्विजग वनेरह इगिया बरिया पटिहम
बदला—मनि कयउ मन्हावहावे कनादे—एत पुरिमद्वका प्रापश्चिन
कता है—देनगात्र की बुनि में बाबरा पृच्छक के बजन मुहाति
दंष्ट्रा क्या है ॥

यदिन *हेमचन्द्राचार्य यह भी लिखते हैं कि उक्त स्वास से शय
काया भी भी दिखा होनी है ॥

साधु विधि प्रकाश में ॥

प्रति लेखन करते वरत मुहपत्ति बाधना कहा है ॥

यतिदीनद्वयमें काजो लेते वरत मुहपत्ति बाधना कहा है—
आचार दिनकर में बाधनादि के लिये मुहपत्ति बाधना कहा है ॥

ज्ञानपदी में

देशना देते वरत मुहपत्ति बाधना कहा है ॥

निशाधर्षण—उद्देश १० ये समिति के अधिकार में माया बाधना
वरत मुहपत्ति हरी भद्रसूरीद्वय भावश्यक बुद्धि गति में मरगये साधु
को भी मुहपत्ति बाधना कहा है ॥

भद्रसूरीद्वय यदि दोनबयासटीक में काजो लेते या ठले ज्ञात
मुहपत्ति बाधना कहा है—बुद्धि माया में देशना देते वरत गमधर
प्रमुख आचार्य न भी मुहपत्ति बाधा एवा कहा है—रिवार रत्ना
कर ग्रंथ में व्याख्यान के समय मुहपत्ति बाधना कहा है ॥

श्री भगवता शक्त १६ उद्देश—२—में सत्त्वमित्यादि पाठ
खुल्लेरीन से समझा जाता है कि जिन समय शत्रुद्रमन्त्र भागे बलादि
रखे सिखाव बाल उस वरत साधु माया बाल कहते हैं ॥

और यह के भाग हस्तवलादि भाड़े रख कर बाले उस वरत
जीव रक्षण के लिये निशय माया बाला कहना—भक्तगङ्गा में अधि
कार है कि—गानमस्वामा गात्रो का गये वरा एवना न (भक्तिमुक्त)
उक्त पुजा के कहा पधारते हा । गानम जी न । निष्ठा वृत्ति के लिये
आना ॥ ऐसा कहा तब मेरे घर जोगशाह है इसलिये वरा बलिये ।

* योग शस्त्र सटीक तृतीय प्रकाश पृष्ठाङ्क १२४ वयाः—
मुहपत्तिमहि सम्पत्तिम जीव रक्षणादुक्त मन्त्रान् विराहयमान
बाध बाध जीव रक्षणांमूखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्चोपयोगि । इति

ऐसा कह कर पृथक् से गाँतमस्वामी के एक हाथ की मण्डलिपत्र के रखने में बाँटें करते करते दोनों चले । अब जब एक हाथ में सोझी है और दूसरा हाथ पृथक् से रोका है तब (जो मुह के आगे मुह, पत्नी नहीं बांधी हो तो) कथा गाँतमस्वामी खुल्ले मुँह से बातचीत करते गये होंगे ॥

इस तरह से चारों बाजू से विचार करने से मुहपत्नी साबित होती है चेमा होकर भी एक फकत मन की बात है कि जितने उसको मन्थर उठा देने हैं । क्या वश के धकन मा महुपत्नी नहीं बांधने वाले बर्ग के मन्थुओं की बाइनरने के उावे काम रुद के मन्थपत्ति बाधनी पडती है इससे सुनिष्ठ तरह से दुरामह साबित होता है । जिन मुहपत्नी को शास्त्र स्थापन करना है जिन मुहपत्नी का उपयोग पारसा मादि अन्य धर्म के कुछ भी धर्म क्या बहुत बात है ॥

जिन मुहपत्ति का हाठ के सुधरे हुए जनाने के युरोवियन डाक्टर बिरराह के बहू मुह के आगे बांधने हैं ॥

जो महुपत्ति मुह नहीं बांधन बल् मा-माराम जी मदाराम ठहो मे मा-व रण) और मुह कधी नहा बाधत इस व सपन बतवाने में पडते गये और अपने बग म हूँ पड ॥

ऐसी मन्थपत्ति जैन मूनि का बिहू है । जैन पाद्रे का हथियार है जैन शासन का शुभार है और सब की माननीय है ॥

नामा में दो वक्त्र उसका अब हुआ यह कुछ आश्चर्य बाँठा नहीं वसुधा सधन हमेशा विजय हो ह रश्मि जिस का नाम मुहपत्ति महु का पत्ति मुह का कवच में रखन वालो उसका धर्म का बाध बिहू मानने वाले लोग उनके निर्दोष के मुप-रिक्त बला के बदले से कमो दया तदा निर्या माधव तुच्छ शब्द बालेग हो नहीं मुह अपर का दह बाधु क जो सज्जनार्थ का लक्षण है वस का क-विपाचार श्रेय विवहता उदरने उससे क्या मुहपत्ति के मूल निबल बन जायेंगे मैन को सन्धि स कौन मडात है ॥

प्रिय पाठक्यग ' यह सर्व उक्त लेख हमने यथावत उक्त पत्र से उद्धृत किये हैं सो उक्त कथनों से तिर्य है कि जैन धर्म के मुनियों का विद्वद् मुहपति मुहपर बाधना हो निर्य है सो इतने प्रमाण होते हुए जो सरेगी लोग मुहपति मुह के साथ नहीं बाधने हैं वे उनका असत्य हठ है ॥

तथा जो यह लोग सुपुत्रा का पुनः पुनः कट्टु शब्द प्रदान करते हैं तिस का मूल कारण यही है कि आ सुष्ठु पदय शास्त्रानुसूल पुत्रो पदेश करण है उस पदय से ही यह लोग प्रतिकूल हो जाते हैं और फिर उस को मनुचित शब्द बोलने वा लिखने लग जाते हैं । उदाहरण ! जैसे कि घोनान् भाउज लोंका जी ने संवत् १५०८-९ के वर्ष में श्री महमदाबाद में जैन धर्म का पुत्र उपदेश किया तब ही वह लोग उसके प्रतिकूल हो गये और लोंका जी को मनुचित शब्द लिखने लग गये क्योंकि लोंका जी सूत्रानुसार उपदेश करते थे ॥

सा आ उपदेश लोंका जी ने किया था तिस समय में ही उन्हीं ने एक पत्र ६८ अंक युक्त लिख दिया था अतितु उसी पत्रका प्रतिक्रिया जीर्ण पत्र एक हमारे पास है सो उस (आ गज्जर भाषा में है किन्तु पत्र पर हिन्दी करके लिखते हैं) में से कुछ अंक वा अन्य शिक्षाक अंक पाठकों के हाथों इस स्थान पर लिखता ॥

१ बेपली मगधान् विहाल है सा उन्मत्त तीन काल का स्वकथ स्व ज्ञान में ऐसा ही देखा है कि सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन सम्यक् धर्म वा मर्यादादि के जाने बिना कोई भी पाप मोक्ष में नहीं गया नहीं आयेगा अतितु प्रमाणा के पूरने ॥ काह भा ओर मोक्ष नहीं गया है और नाही आयेगा नाही जाता है ॥

और नाही सूत्रों में किसी मूर्ति पूजक का अधिकार है कि अमृत ओर मूर्ति पूजने पूजन मोक्ष हो गया एव सर्वत्र जानलेना । सो ज्ञान दान धर्म से ही मोक्ष है देखा सूत्रकथाग यथन भुनक्तव्य अ० १२ अथा ११ ॥

२ जीवगति मनीषगति सबों में वह दोनों ही राशि कहाँ हैं
 सो यदि कोई तोसने राशि प्रति पढ़न करे ना वह निःशुद्ध है दत्ता
 सूत्र उक्ताई ओ १ प्रश्न १९ ॥

३ जो जीव का नहीं जानना मज्जोर का भी नहीं जानना ना
 मला सयम माग बैस जान सना ॥ दशैकालिक सू० म० ४ ॥

४ सम्पत्ति के बिना सम्पत्ति का नहीं सम्पत्ति का के बिना
 सम्पत्ति रिश नहीं सो सम्पत्ति ज्ञान सम्पत्ति दर्शन सम्पत्ति चारित्र्य
 के बिना माह नहीं उच्चारणन सू० म० २८ ॥

५ साधु स्वयं मोर मसाधु धनुस्व ह दशैकालिक सू० म० ५ ॥

६ साधुओं के पक्ष मदात्रण सपथा प्रकारे हैं देश मात्र नहीं
 हसीवास्ते साधुओं की मंदिर का उद्देश करना सूत्र विद्वद् है देना
 सू० दशैकालिक म० ४ ॥

७ ज्ञान बिना दया नहीं दया ही सयम है सू० दश० म० ४ ॥

८ मगशान् ने अपने मन से (महिमा सज्जमानना) वही घम घन
 लाया है ननु मूर्ति पूजा ॥

९ मगधन भी यजमान दशमोजी न शक्त बाहार प्रद्वन किया
 तथा अन्य मुनियों का प्रद्वन करने का उपदेश दिया दत्ता सूत्र भाव
 राग प्रथम धुनरूप म० ९ उच्चारणन म० ८ ॥

१० आयक बेवली मगशान का ही प्रतिपादन दिया हुआ धम
 प्रद्वन करे देखो सूत्र उक्ताईओ प्रश्न २० मपितु हिता धम न प्रहण करे।

११ जो प्रयत्न है सो भय है किन्तु नीच सब भय रूप है देखो
 सू० उक्ताई प्रश्न २ ॥

१२ साधु गृहस्थादिसे कोईमो कार्य न कराये सू० नशोय उद्देश ॥

१३ मित्र भाग्य भाषण करने वाला और मना मोइनो कर्म की

● भाग्यराम जी के जीवन चरित्र में जो गहरावाले के विषय
 में लेख लिखे हैं वे सर्व अनुचित हैं ॥

प्रकृति बाधता है सू० समवायाग जी स्थान ३० वा अथवा सू० १७
भूतस्वयम् ॥

१४ मिश्र भाषा सवधा ही त्याज्य है देखो सू० दशमै० म ॥

१५ सप्तमय चतुर्निक्षेप का स्वरूप अनुयोग द्वार जी सूत्र में है
किंतु भाषानिक्षेप ही बदनीय है ननु भय ॥

१६ साधुक नष्टादश पाप सेवनका त्याग सत्यता प्रकारे है न
देश । सो जब सत्यता त्याग है तब भविष्यदादि धारण करके भविष्य
का बनवाना जिन पूजा का उपदेश करना कैसे हो सकता है, सावध
कर्म सूत्र पिछड़ा है देखा सूत्र० उच्छाद जी साधुगुति ॥

१७ जिन वस्तु पर मूर्च्छा नाव है वही परिमद है देखो सू०
दशमै० कालिज म० ६ ॥

१८ मगवान् ने दोनों प्रकार का धर्म प्रतिपादन किया है सूत्र
स्थानाग स्थानागिनोय ॥

१९ गृहस्थ धर्म म द्वादश मग वकादश प्रतिमा ही हैं नाथि
मूर्ति पूजा दक्षिणे उपासक दशाग सूत्र वा दशाभतस्वयम् सूत्र ।

२० अर्हन् प्रभु ही सत्यवत हैं देखो सूत्र उत्तराभ्ययन म० २३ ।

२१ भाषु क नवमी गे प्रत्यावशान है ता बनलाइये प्रतिमा का पूजा
दिस मागे में है नवमी गे का स्वल्प देखा मू० स्थानाग स्थान ९ ॥

२२ गग प्रेय ही पाप कर्म के बीज हैं उत्रा० मू० म० ३१ ॥

२३ गगादि मुख्य कबल निजगये हो कर नन मगवाये ॥

२४ गग पत्र वदनाओं हो मग शय होवेने तब ही पाछ होवेनी
देखो मू० उत्रा० म० २१ ॥

२५ मंगल न पतिन दृष्ट की प्रशंसा कर ता मायदिवन मगा
है दना सूत्र मशोय ।

२६ दोनों प्रकार का मृग मगवान् ने बनलाया है कल मू०

एभिर्न मृत्यु भो विम विम जीर्णो का चीन चीनसा मृत्यु होना है
देखो सू० उद्गा० अ० ५ ॥

२७ बेवली वा १४ पूर्णधारी से लेकर १० धुधधारी पर्यंत सर्व
सन्धुन है मही ओ सूत्र में देख लीजिये ॥

२८ ओ बेवली मगधाम् मे मयाचोप कदे हैं ये सर्व मुनियों
को त्यागनीय हैं देखा सू० उद्गा० अ० ३ ॥

२९ मगधाम का प्रतिपादन किया हुआ धर्म एवम्न हितकारी
है देखो सू० प्रदन व्याकरण ॥

३० द्याका ही नाम पूरा हुआ पद १ प्रदन व्याकरण सू० अ० १

३१ सर्वैक ही शक्ति का उपदेश का नामा सू० उद्गा० अ० १० ॥

३२ हानद्वान् काटिष ही पाया है कता ओ सूत्र वा भगवतो भी
सूत्र में इस का बयान है ॥

३३ मगधाम् मे समार से पार होने के मार्ग वश्य सपरही
पद हैं प्र० व्या० ॥

३४ ओ भन्वोप्यद्वार ओ सूत्र अ उभय (होनों) काक साधु
साधरी भान्वक भाविक का पडावपक करम की भावा है मनु मदिद
पूत्रके को ॥

३५ मर्षों में पूजा २ का उपदेश है वि विद्या काटिष से ही
मोक्ष है मनु अ प से सू० उद्गा० अ० ११ ॥

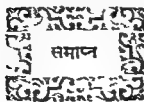
३६ जिस वक्त्रो म विविधन साथ भी साधन उपदेश नहीं है
देखो सूत्र महरदकादि ॥

कटवपय अत्र अस्माकं संज्ञातत्वा व सादि मन्त्र पूरे वा
संज्ञेय होये के साधन एवम्न मन्त्र ही मूर्ति पूत्रक उभ वा
विदितकारी सा संज्ञातत्वा विद्या वन्त्र मन्त्र और उभके दिने
मन्त्रिन एवम्न मन्त्र मो वद वन्त्र व एव मन्त्रो का उद्घा-मन्त्र
वन्त्रा है मन्त्रो मन्त्र पूत्र मूर्ति का के एव काका है वन्त्र पूत्र
पूत्र पूत्रा वन्त्रो का मन्त्र पूत्रा वन्त्रो होने का एव ही मन्त्र है एवम्न

किं श्री माचार्य जी महापात्र ने परोपकार किये हैं अर्थात् जिन्होंने ने
 परांपरा को आशा से असार ससारोऽप्य, गिरि नदी घेगोपम पीवन,
 तुमानिममजीवन, शरदस्रज्जटा सद्दशमोगा स्वप्न सदृशो मित्र
 पुत्र कन्य भूयवर्गमन्व-धः इत्यादि सद्भिषारो द्वारा परम वैराग्य तथा
 सशौलता को उपाजन कर इस सत्य मगूर ससार को त्याग दिया और
 इति मृति ग्रहण की क्योंकि कहा है—मादौचितेन वापेसता
 सम्पत्तेः अस्तत्तु पुन वापनैषचिते कदाचन इति । पुन आपने
 महान दायनासे रहस्य कालमें ही धृत विपाक हृदय तथा गूढाशय को
 ग्रहण किया पुन' तत्र क्षमा द्या शान्ति इनकी महान स्वरसे उद्घापणा
 की और मृदु सशोमल मत्तोपदश कपी तोषण शब्द ॥ अन्य जीवों
 व जड़ों से मिथ्यात्व कपी बठिन तदर्थों को उत्पादन किया, पुन
 सुधाप्य मनोहर व्याख्यानोंसे महम्मन का उत्पन्न किया, प्रेममाय तथा
 सत्य ही वृद्धि का दश देगान्तरी में पर्यटन करने मनेका ही प्राणियों
 का महान भाषित सत्य धर्म में उपस्थित करने दंड किया, और स्व
 भात्म गुरुधर्म महान तप किया पुन अस्यातम याग द्वारा आत्मा को
 निमल और पवित्र बनाया और अंत में महान अहन् करने तथा मा
 हनो मा हना ऐसा उपदेश करते हुए स्वर्ग गमन हो गये ॥

इसलिये शिष्यवर्ग ऐसे महानायाय व गुणानवाह करने से तथा
 इनके गुणों का अनुकरण करने से वा इनका शौर्यवरिष्ठ पदमेंसे जीव
 पापकरो मल को द्वावृज करन हैं इसलिये प्रार्थना है ॥ ऐसे महाराम
 के नाम की विरहायी करने मोक्षाधिकारी बना ॥ सुख-विबुद्धा ।

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !



त्रिषष्टि चतु षष्टिर्वावर्णा शम्भु मते मना ।
प्राकृते सस्कृतेचापि, स्वयप्रोक्ता स्वय भुवा ॥१॥

सो समय किन्तु प्रकृति सस्कृत भाषा के व्याकरण उगटाप होने हैं किन्तु अति प्राचीन स्वरूप परिग्रह तथा बहु फल प्रद भी शाकटापन व्याकरण है अतः पश्चिमीय व्याकरण की मष्टाध्यायी के तुनीय भाषा के चतुर्थ पाद के १११ वें सूत्र में शाकटापन मुनि का मत तथा सूत्र में नाम प्रदत्त किया है यथा—

(छठ् शाकटापनस्यैव) अपिनु स्वामा इवानन्द सरस्वती जी की मष्टाध्यायी के चारक प्रकरण के हिन्दी भाष्य के ४८ वें पृष्ठ में ऐसे लिखते हैं कि—(उपशाकटापन वैवाकरया) अथात् 'यून हैं अथ व्याकरण शाकटापन व्याकरण स । सो सत्र पुनरा । भीशाकटापना कार्य जैन मनानुयायिही सिद्ध हो चुके हैं । क्योंकि इस व्याकरणापरि अनेक टीकाएँ जैनाचार्यों ने ही की हैं । अपिनु शाकटापनाकार्य भी अपने आप ही जैन वैद्यों देशीयाचार्य ऐसे नाम से लिखते हैं । जो कि जैनधर्म के वलसाधेनिक शब्द हैं । तथा जैन मनानुसार ही प्रक्रिया है अतः किन्तु अपि नाम के टीकाप्रसूत्रना कार्य ऐसे प्रति पाद प्रदत्त करते हैं कि—आप्येवधापी सही व्याकरण है जैसे कि—

● श्लोक ●

स्वरूपमन्य सुखोपाय, मपूर्णयदुपक्रमम् ।
शब्दानुशासनसार्व महच्छामनवत्परम् ॥ १ ॥
इन्द्रचन्द्रादिभि शब्दैर्यदुक्तशब्दलक्षणम्
तदिहास्तिममस्त्वयन्नेहास्तिनतत्त्वचिन् ॥ २ ॥

महा इस महा मन्त्रके धात्वादि को अधिक तर भावदयता है किन्तु धर्म भी पुस्तक उक्त विस्तार युक्त दृष्टिगोचर नहीं हुआ इसी प्रयोजन से प्रेरित हो कर मैंने उक्त दो व्यंकरणों के सूत्रों से इस की व्याख्या की लिया है। सो महानाशा तथा ब्रह्म विद्वांस है कि पण्डित जन इस महामन्त्र की व्याख्या की पठन कर मेरे परिधन को सफल करेंगे ॥

उपाध्याय जैनमुनि आत्मरामजी पनायी ।

नमस्कारपरम्परैर्द्वितीयस्य ॥ प्रा० अ०८ पा०१
सू०६२॥ अनयादिर्नीयस्य अनयात्व भवति ॥

इस सूत्र से नमस् शब्द के द्वितीय शब्द के मकार को अर्थात् नमस् शब्द के मकार के मकार को मोकार हो गया जैसे कि (नमो स्कार) पुन -

क-ग-उ-ड-न-द-प-श प स = क = पामूर्खलुक् ॥
प्रा० अ०८ पा०२ सू० ७७॥ एपासयुक्तवर्ण सम्बन्धि
मूर्खस्थितानालुक् भवति ॥

इस सूत्र से सकार का रूप हो गया तब (नमोकार) ऐसे रहा पुनः—

अनादौ शेषादशषोडशित्वम् ॥ प्रा० अ०८ पा०२ सू० ८९ ॥
पदस्यानादौ वर्णमानस्य शेषस्य चादेशस्य द्वित्वं भवति ।

इस सूत्र से अकार द्वित्व हो गया तब परिसरक प्रमाण (ब्रह्माकार) एमे भिन्न हुआ अतः पूर्वोक्त रूप से मने मानि ने नं प्रमाण पुन सिद्ध हुए ॥

[illegible]

भाषा — इस महा मन्त्र में यह वचन है कि मन्त्र गुण एक
 अनुष्ठानि कर्मों के भट्ट कर्मा और जिनके द्वारा गुण प्राप्त हुए हैं
 परम पुण्य ऐसे गुणगुणलङ्घन भी भविष्यत आ महा राजा को नम
 स्कार है। परमा जिनके मन्त्रोत्पत्ति के अन्तर्गत यदि मन्त्र नाम
 सन्निवृत्ति युक्त प्रसिद्ध हैं जिनके सब वचन सत्य हैं। मन्त्रानि
 आ कर्म कर्तव्यसे विमुक्त हो गये हैं और जिनके भट्ट गुण प्राप्ति
 हुए हैं इत्यादि अनेक सुगुणों मन्त्रिण भी सिद्ध मन्त्राओं का नमस्कार
 हो भविष्यत आ यह विवक्षित गुणों सुलभमर्त्या स क्रिया करने वाले जिन
 को जन्मने गति अधिक है तथा आ मन्त्रक प्रकार से गच्छ (माधु
 सदाशिव) की साधना (रक्षा करना) धारणा (स्थिरतावार होने हुए
 को) प्राप्तिमान करना) साध मन्त्रों को दिन शिवा देना तथा ब्रह्म
 पञ्चादि द्वारा भी मन्त्रों को सहायता देना वा परम्परा गुण शास्त्रार्थ
 पठन करना और १ बुद्धि मय न अथवा लोभ रगादि युक्त साधु
 होना वा तथा योग्य सहायता करना इत्यादि अनन्त गुणों से युक्त हैं
 और उक्त धर्मार्थों के पूर्ण करने में सदैव कटिबद्ध हैं ऐसे आभावाया
 को नमस्कार है। तथा ओ पर्वविशति गुणों स मल्लङ्घन हो रहे हैं
 मन्त्रानि आ पञ्चादि मन्त्रों द्वारा जन्मने के स्वयं वचन हैं औरों
 पढ़ते हैं तिन धर्मों के नाम यह है यथा —

अथाह्नसूत्राणि० ।

- (१) श्री मावागाह्न जी ।
- (२) श्री सृष्यदाह्न जी ।
- (३) श्री ठाणाह्न जी ।
- (४) श्री समवायाह्न जी ।
- (५) श्री रिवाह प्रशस्ति जी ।
- (६) श्री शानाधर्मकथाग जी ।
- (७) श्री उपासक दशाह्न जी ।
- (८) श्री मतगाह्न जी ।
- (९) श्री भनूवायवाह्न जी ।
- (१०) श्री मरमयाकरण जी ।
- (११) श्री विषाक जी ।

अथोपाह्नसूत्राणि ।

- (१) श्री उग्रवाह्न जी ।
- (२) श्री रावणाजी जी ।
- (३) श्री जोशनिगमजी ।
- (४) श्री वणयन्ता जी ।
- (५) श्री जम्बूद्वीपप्रशस्ति जी ।
- (६) श्री जम्बूद्वीपप्रशस्ति जी ।
- (७) श्री सत्यप्रशस्ति जी ।
- (८) श्री निरावलिता जी ।
- (९) श्री पुष्पिका जी ।
- (१०) श्री काव्यया जी ।
- (११) श्री पुष्पचुम्बिका जी ।
- (१२) श्री वणिह्वरा जी ।

अर्थात् जो पूर्वोक्त शास्त्रों का सम्पादन स्वयं करते हैं और भीतों की यथा व्यवस्था वा यथाऽवसरपठनाभ्यास करवाते हैं और जिस के द्वारा धर्म तथा विद्या की वृद्धि हो वही कार्य करते परिपुष्टिग हाते हैं ऐसे परम पण्डित महान् विद्वान् दीर्घदर्शी परमोपकारी श्री उपाध्याय जी महाराज को नमस्कार हो, जो कि भूत विद्या की भावा से बनेन ही भगव जीवों का ससार रक्षाकर से उद्धार करते हैं अथवा नमस्कार हो सब माधुषों का जो लोक में सगुणों से परिपूर्ण तथा विभूति हैं सब हो परापकारी हैं और ज्ञान के द्वारा स्वमात्मा वा मन्त्रायामा के कार्य सर्वत्र काळ निवृत्त करते हैं मणि सत्यवि ज्ञान गुण युक्त हैं निन मुनियों को पुन पुन नमस्कार हो ॥

॥ *वचना ॥ जो द्वादशाह्न है निन् वर्तमान काळ को मदेशा दस दशाह्न लिखे हैं ॥

प्रियरतों ! हम महा मन्त्र का पाठ मथया यह महा मन्त्र भी मगरनी अरवकादि सूत्रों (शास्त्रों) में विद्यमान है यदि कोई इसे देखने को मनिलाया करे तो उस को योग्य है कि जैनशास्त्रों का अभ्यास करे क्योंकि सूत्रों के पठन से उसे स्वयमेव ही उपगम्य हो जायगा ॥

॥ अथोक्त मन्त्र के धात्वादि ॥

प्रियसुहृद्गणों ! अब उक्त महा मन्त्र के धात्वादि को छगा कर अपने सम्मुख करना ह । जैसे कि—(कथन) शब्द मन्त्र है सो मनस् शब्द के सकार को —

सजूरहस्मोऽनिष्पन्नं स्वनसुध्वनसोरि ॥

शा० व्या० अ० १ पा० १ सू० ७२ ॥

सजूप अहन्नित्ये तयोरन्त्यस्य पदान्ते सकारस्य च रिगादेशा भवन्ति यवस्स्वनसुध्वन्सु इत्येतान् वर्जयित्वा न निपि ॥ इति मस्यरि इदित् ॥

इस सूत्र से विचार ॥ गया पुनः शकार की इत्सदा होने से तिस का छोर हुआ गया परबन्त एक रहा । तब ऐसे कर बना, जैसे (अम+र) पुनः—

र पदान्ते विमर्जनीय ॥ शा० अ० १ पा० १ ।

सू० ६७ । पदान्ते रेफस्य स्थाने ० विमर्जनीयादेशो भवन्ति ॥

० इति ॥ शृङ्गवद्वालवत्सम्य, कुमारोन्मनपुत्रमवन् ॥

नेत्रवत्कृष्णमरस्य, विसर्गोऽयम् इति स्मृत ॥ १ ॥

इस सूत्र से पदान्त के रेफ को विमर्जनीय का आदेश हुआ, तब (नम) ऐसे रूप सिद्ध हुआ पुन —

अतोऽविमर्गस्य॥प्रा० व्या० अ० ८ पा० १ सू० ३०॥
सस्कृत लक्षणोत्पन्नस्य अन परस्य विसर्गस्य
स्थानेऽङो इत्यादेशो भवति ॥

इस सूत्र से सस्कृत लक्षणोत्पन्न के अन्त से परं विसर्जनीय के स्थान में अन्त विसर्ग को ङा का आदेश हो गया, तब ऐसे रूप बना गया—(नम+ङो) पुन —इकार की हलन्त्या हो जाने के कारण से तिस का लोप हो जाना है और साथ ॥ म त्यङ्ग का लोप भी होना है तब ऐसे प्रयोग हुआ यथा (नम्+भो) फिर —

(अनङ्ग शब्द रूप पर वर्णमाभ्यस्त इति सन्निर्णय) इस वचन से व्यञ्जन रूप मकार आकार का आशय हुआ तो ऐसे रूप बना (नमो) अर्थात् एक ङव ऐसे सिद्ध हुआ ॥

इसका अन्तर (भक्ति नाण) इस की व्याख्या लिखते ॥ यथा—
मह्येसा धातु है तिस का —

सहलङ्वत्स्य लृटावाऽनितो ॥ शा० अ० १ पा० ४
सू० ७८॥ सनिलटो भविष्यति लृटश्च अतद् वत्
शतृया भवति तड वदानशनेतो ॥ ऋशाविनो ॥

इस सूत्र से वर्तमान लृट में मह्य धातु को शतृयाय हो गया तब (मर्ह+शतृ) ऐसे रूप बन गया वन शकार ककार की हलन्त्या होने से तिस का लोप हुआ तब (महत) ऐसे रूप बना फिर—

उच्चार्यति । प्रा० व्या० अ० ८ पा० २ सू० १११ ॥

अहन् शब्दे संयुक्तस्यान्त्य व्यञ्जनात् पूर्व उत्
अदि तौ च भवत ।

इस सूत्र में यह बयान है कि महत् शब्द में सयुक्त के मत सम्बन्ध से पूर्व अघात् विदल्य करके फिर हकार से पूर हकार उच्चार मध्यर यह तीन हो जाते हैं तब ऐसे रूप बन गया —

(मरहत्) (मरुहत्) (मरमहत्) पुन (मरिहत्) (मरहत) (मरहत्) अपितु ऐसेही ०दृष्टिका धुनि म मो उल्लेख है पुनः—

शत्रानिश् ॥ प्रा० अ० ८ पा० ३ सू० १८१ ।

शतृ आनश् इत्येतयो प्रत्येकन्नमाण इत्येना वा देशो भवति ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि शतृप्रत्यय को न और माण मि भावेश होने हैं । जिससे बत्ती का बिचा हुआ कार्य मत के मलोपरि होना है अघात महत् शब्द के लकार का (न) ऐसे भावेश हो गया तब (मरिहत् + मरुहत् + मरहत) ऐसे बन गये । ता —

ह ज ण ना व्यञ्जने । प्रा० अ० ८ पा० १ सू०

२५ ॥ ह झ ण न इत्येतेषाम्थाने व्यञ्जने परे

अनुस्वारा भवति ॥

*दृष्टि—उक्त ११ मरहत ३१ महत् महतीति महोत् मव् मस्यवा लोपान भद् इतिज्ञाने र्ह इतिविदल्ये मन्न प्रथमह पूर्व उ द्वितीये ह पूर्वम लोपे ह पूर्व इ सध्व लोपान् ११ मत. सेहो मरहो । मरहो मरिहो । महतीति महत् भृग्विषाह शतृशतृभृत्ये शब्द ए प्रत्यय मरलोपान् महत्तमापो मत स्थानस्य व्यञ्जनावृत्तः लोपान् मनेन र्ह इति विदल्ये प्रथम ह पूर्व उ द्वितीये म लोपे ह द्वावा ११ मरहन्तो मरहन्ता मरिहतोः ॥ १११ ॥

†विशेष विधि इस प्रकार से भी है यथा (मरिहत् + मरहत् + मरहत्) ऐसे प्रयोग स्थित हैं कि—

(१४४)

इस सूत्र से नकारको मनस्वाकारदेश हो गया तब (महिर्द्वय + महद्वय + महर्द्वय) ऐसे प्रयोग बने, पुनः नमस्वाकार्य से —

शक्तार्थययणूनम स्वस्तिम्याहा स्वधाहितै ॥ शा०

अ० १ पा० ३ सू० १४२ । शक्तार्थेन ५०॥

युक्तेऽप्रधानात्थेयर्तमाना चतुर्थी

येप्रायशक्तामेव । मत्कायप्रभवनिमत्तम् ।

ययति । अग्नयेवपद् । अर्हतेनम

इन्द्रायम्याहा । गुरुभ्यम्बधा । सः

उगिदचाऽनेधाद ॥ शा० अ० १ पा०

उगिनाऽऽय मश्चनम् भवति ॥

ने शद ॥

इस मन्त्र में १० '३' शब्द है जिस श्रितिका उक्त

का निमित्तकी भी भवति । १ का जो जो नमः की प्रत्ये

२१ शब्द हुए भवति । ३ शब्दका जो शब्द

न का शब्द जो नमः भवति । ३ शब्द

भवति नमः ३ । ३ शब्द हुए शब्द

३ शब्द । ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द

३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द

३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द

३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द

इस मन्त्र में १० शब्द है १०

शब्द में शब्दका जो नमः भवति । ३ शब्द

३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द ३ शब्द

शाब्दटावन व्याकरण के इस सूत्रसे चतुर्थी विभक्ति के बहुवचन
अप् प्रत्ययही भव्यप्राप्ति थी, विन्तु —

चतुर्थ्या पण्टी ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० ३
सू० १३१ ॥ चतुर्थ्या स्थाने पण्टी भवति ।

माह्य व्याकरण के इस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति के स्थानोप
रिपण्टा विभक्ति हुई, तब (भरिह त) शब्द को पण्टी का बहुवचन
भाम् प्रत्यय होने से (भरिहत + भाम्) ऐसे रूप हो गया था —

जस् दास्डसिचोदोद्वामिदीर्घ ॥ प्रा० अ० ८
पा० ३ सू० ११ ॥ एषु अन्ता दीर्घो भवति ॥

इस सूत्र से भरिहत शब्द के तकार का अन्त दीर्घ हो जाने से
(भरिहत + भाम्) ऐसे रूप बन गया तद्गन्तर —

टा आमोर्ण ॥ प्रा० अ० ८ पा० ३ सू० ६ ॥
अन परस्य टाडत्येनस्य पण्टी बहुवचनस्य च
आमोर्णो भवति ॥

इस सूत्र से भाम् प्रत्यय को लकारादेश हा गया तो (भरिहता
+ ण) ऐसे रूप बन गया, तत्पदवत् —

क्त्वा स्यादेर णस्त्रार्वा ॥ प्रा० अ० ८ पा० १
सू० २७ ॥ क्त्वाया स्यादीताच यौणसूनयारनुस्वारो
ज्न्तावाभवति ॥

इस सूत्र से लकार को विकल्प से अनुस्वार भी हो जाता है
तब एक पक्ष में (नमोभरिहताण + नमोभरिहताण + नमोभरिहताण)
और द्वितीय पक्ष में (नमोभरिहताण + नमोभरिहताण + नमोभरिहताण)
इत्यादि तीन प्रयोग इस प्रकार सिद्ध हुए ॥

सा पूर्व सूत्रा स तीन कर्णों का एक हो मर्ध है जिस पर्यायार्थ तीन है जैसे कि—

जो जमादि शब्दों को दहन करे तथा सर्वत्र सर्वदशी हो वह भरिहंत मयितु —

जिन की पुनरावृत्ति सत्कार चक्र में ॥ होये मर्थात् जो जगत् ब्रह्म से रहित हो सो भरिहंत, जिसमें उन दो मर्ध गौण हैं तथा जो सब का पर्यन्तोष या सब का ज्ञान सर्वोत्तम है सो भरिहंत क्योंकि धातु का मुख्यार्थ यत्ने हे ॥ तथा नाममाला नृत्ति में हेमवद्राचार्य ज्ञान शब्द शिष्य वसे मो लिखते हैं, तथा य पाठ —

अहनि चतुर्ग्रिहनिशयान्मुरेन्द्र कृतामशोका
षष्ठमहाप्रानिहाय्य रूपापूजादिनिशमर्हन् अर्हयाग्य
रये अर्हमहपूजा या अर्हप्रशसायामिति शनृप्रशय
उगिदचामिनिनुम अर्हन्तो अर्हन्त इत्यादि ॥

अर्हन् मुरनरवगादिमेशादिति अर्हपूजायां ऽम्मा
द्राफठरुतन तुम्बवहिवमिभामोरवादि नागाशिवार्थ
ज्ञचिज्ञाऽन्त इत्यनादेशे अर्हन् इत्यदमोविमर्हन्तीति
पचायि विष्टपोदरादित्वा न्मुमागमे अर्हमिति ॥

॥ इति भरिहन्ताय वद की सा श्रुतिः ॥

॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

जगत् समस्तमेव जगत् शब्द न पुरुष हो निश्चये जगत् (विश्व) है जगत् विदुमगदायसे धातु देवित्र हे ऊपर की श्रुति से सिद्ध है अतः पुनः (विश्व) देखे शब्द से ही सिद्ध

आदे एगोऽप्यकृष्ट्याष्टीव स्तम् ॥ शा० अ० ४
पा० २ सू० २२१ । धानो गदे पन्थ सो भर्ता
णस्यन नप्यकृष्ट्याष्टीवाम् ॥
इम मूत्र से धानु के मादि पत्तार को सफार होगदा तब (विष)

के बन बना पुन —
क कवन् ॥ शा० अ० ४ पा० ३ सू० २०४ ॥
धानोर्भने क कवन् भवन ॥ कानाविनो ॥
इस मूत्र में धा विषय है कि धानु को मूर्ध में क क वन्
कर जाने द। इसी कथन से विष धानु को क मूर्ध हुआ तो देसे
कर बना बना (विषक) फिर कटार को इसमया हान स विमद्य
होय है तब (विष+त) देसे हुआ पुन—

अथ ॥ शा० अ० ४ पा० १ सू० ८० ॥
अथाना क्षपन्नाक्षानो परयोन्मस्यपार्थो भवन्ति ।
इम मूत्र से कटार को सफार होगदा तब देसे प्रयोग हुआ
(विष+त) विमद्य—

अपि जग ॥ शा० अ० ४ पा० १ सू० १३६ ।
अर स्थाने जशादेशो भवन्ति अपि परे ॥
इम मूत्र में धा कथन है कि अर के स्थान में अर का कथन
होने अर प्रयोगकार पर हाय हुए इसी मूत्र से इम पत्तार को इम
सफार हो बना बना (विष+त) पुन

(चनदकं शब्दकथ परवण माध्रयेत्)
इम कथन से (विष) कथन पर मूत्र विमद्य (विष+त) देना बनने
के कथने विमद्य को कथनों विमद्य के कथन की बना विमद्य
पर मूत्र कथन हो गया बना (विष+त) मूत्र की विमद्य परवण

सा पूर्ण सूत्र से तीन कर्गों का एक हो भर्ष है किन्तु पूर्णवर्ष
तीन हों जैसे कि—

जो कर्मादि शत्रुओं का दहन करे तथा सर्वत्र सार्वर्ष से
यद् मर्हति, भवितु —

जिन की पुनरावृत्ति सत्कार चर में न होये भर्षान् जो जन्म मरण
से रहित हो सो मर्हन्, किन्तु उक्त दो भर्ष भोग हैं तथा जो स्व
का पुण्यनीय या स्वयं का आता सर्वोत्तम है सो मर्हन् क्योंकि स्व
का सुखार्थ यही है ॥ तथा नाम माला वृत्ति में हमबन्धुचर्य मर्ष
शब्द विषय ऐसे भी लिखते हैं, तथा य पाठः—

अर्हन् चतुर्त्रिंशदनिशयान्मुरेन्द्र कृतामशोक
षष्टमहाप्रानिहाय्य रूपापूजाइनिवाअर्हन् अर्हयोग
स्वे अर्हमहपूजा वा अर्हप्रशसायामिति शत्रुप्रशय
उगिदचामिनिनुम अर्हन्तोअर्हन्त इत्यादि ॥

अर्हन् सुरनरवगादिसेवाइति अर्हपूजाया स्मा
द्वाहलकात तृभवहिवसिभासीत्पादि नाआशिष्ये
क्षचिज्ञोऽन्त इत्यनादेशेअर्हत इत्यदनोपिअर्हनोनि
पचायविपृषोदरादिस्वा न्ममागमेअर्हमिति ॥

॥ इति भरिहताय पद की साधनिका ॥

॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

नमस अभ्ययसेनमा शब्द ना पृथक् ही सिद्ध है परन्तु (सिद्धाव)
एव हा । सगर में विष सपादा ऐसे धातु इवित के ऊपर जो राउमा
दाने स निडहा और हुमा पुना(विष) ऐसे शब्द शेर रहा । कि

आदे एगोऽप्यकृष्ट्याष्टीव स्तम् ॥ शा० अ० ४

पा० २ सू० २६१ । धानो रादे पस्य सो भर्मा

पस्यन नप्यकृष्ट्याष्टीवाम् ॥

इस सूत्र से धान के आदि पक्षर को सफार होगया तब (सिध)
सेसे कर बना पुन —

क कवन् ॥ शा० अ० ४ पा० ३ सू० २०४ ॥

धानोर्भूमे क कवन् भवन ॥ काताविनौ ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि धान को मृगार्थ में क क वन्
प्रयोग होने है । इसी कथन से विध धानुको क प्रयोग हुआ तो ऐसे
कर बना पया (सिधक) फिर पक्षर को इतलखा होने से निमका
होय है तब (सिध+त) ऐसे हुआ पुन—

अथ ॥ शा० टपा० ज० १ पा० २ सू० ८० ॥

अशजो ह्यपन्नाढानो परयोऽन्म्ययोर्धो भवति ।

इस सूत्र से लक्षर को सफार होगया, तब ऐसे प्रयोग हुआ
(सिध+ध) कि —

जयि जश् । शा० टपा० अ० १ पा० १ सू० १३६ ।

जर स्थाने जशादेशो भवति जयि परे ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि जर के स्थान में जश् का आदेश
होये जर प्रत्ययाहार पर शान हुए इसी याथ से हट् पक्षर को हट
हजार ॥ पया पया (सिध+ध) पुन

(अनटक शब्दरूप परधर्ण साभयेत्)

इस कथन से (सिध) शब्द सब पया किन् (विज्ञाप्य) ऐसा बनने
के कारणे निम्न शब्द को अनर्थी विनक्ति के स्थाना पति पण्टो विनक्ति
का यह पक्षर मान् हो गया पया (सिध+मान्) इति स्थि परवन् ।

सा पूर्व सूत्रा से तीन रूपों का एक हो मर्त्य है जिस पर्याय तीन हैं जैसे कि—

जो कर्मादि शत्रुओं को दहन करे तथा सर्वत्र सर्वदुर्गों से परमार्थिक भवितु —

जिन की पुनरावृत्ति ससार चक्र में न होये मर्त्यात् जो जन्म मरण से रहित हो सो मर्त्यदहन, जिस उक्त दो मर्त्य शोण हैं तथा जो सब का पुण्यमोक्ष या सर्व का माना सर्वोत्तम है सो मर्त्यदहन क्योंकि सब का मुक्त्यर्थ यहो है । तथा मन्मथाला वृत्ति में हमबन्दाधार्य मर्त्य शत्रु विषय वसे मो विनश्वर हैं, तथा च पाठा—

अहंनि चतुर्निशदनिशयान्मुरेन्द्र कृतामशोक
षष्ठमहाप्रानिहाय्य रूपापूजांनिशाअहंन् अहंयोग
ह्ये अहंमहपूजा वा अहंप्रशसायामिनि शत्रुप्रारब्ध
उनिदयामिनिनुम अर्न्तो अहन्न इत्यादि ॥

अहंन् मुरनरवगदिमेशाहनि अहंपूजायां उम्मा
दाहलकान तृम्वहिवमिभामोत्थादि नाशाशिवर्षे
सचिज्जन्म इत्यनादेशेअर्न्त इत्यदतोपिगर्हनेति
पचायतिष्टपादगदिन्वा न्मुमागमेअहंमिति ॥

॥ इति मर्त्यदहन एव की साधनिका ॥

॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

मन्मथाला वृत्ति में हमबन्दाधार्य मर्त्य शत्रु विषय वसे मो विनश्वर हैं, तथा च पाठा—
॥ इति मर्त्यदहन एव की साधनिका ॥
॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

टा आमोर्ण ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० ३ सू० ६ ।

इस सूत्र से प्रत्यय भ्रम प्रत्यय को णकारदेश हुआ यथा(सिद्ध + ण) किर —

जस् शम् ढसितो दोदामि दीर्घ ॥ प्रा० व्या०
अ० ८ पा० ३ सू० १२ ॥

इस से सूत्र प्रागत् सिद्ध शब्द का मकार दीर्घ हो गया जैसे (सिद्धा + ण) पदयात ।

क्षत्राम्यादेरणम्बोर्वा ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २७ ॥

इस सूत्र से णकार को विरुद्ध से अनुस्वार हो गया तब पठि पठरूप (नमा सिद्धाण) या (नमा निद्धाण) ऐसे सिद्ध हुए ।

अपित् “मिद्ध” शब्द पि गो शास्त्रे माहृत्ये च
इस घातम मा चन चान हे किंन जय विधिरिधान पूरन् ही हे ॥

॥ इति सिद्धाण पदका साधनेका ॥

॥ अथ आचार्य शब्द की साधनिका ॥

नमस् शब्द पूर्ण हो सिद्ध होता है अथ आचार्य शब्द मात्र उपपन्न मर्यादा युक्त अथ में आ व्यवहृत है मा पूर्य दाने से पुनः अर्गति मन्मथा धान को हृदय का वचन प्रत्यय करने से आचार्य शब्द बनता है जैसे कि (मा + चर्) येने रूप दे पत :—

एण ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० ३ सू० ६ ॥

न्यन् प्रत्ययो भवति ॥

इ से अर्क शब्द चर् पत को ध्यन् प्रत्यय हो गया, फिर अर्क शब्द अर्क शब्द की इसका दाने स दिन का दोष

है अस्तिहस्त को भी इत्थम् हानी है तत्र (भाङ्+वृत्+
१२५) एव इत्थम् (भाङ्+वृत्+य) ऐसे रूप देख रहा फिर —

जित्यस्या । आ० अ० ४ पा० १ सू० २३० ॥

धाना रुपान्त्यस्यान् आद्भवति । जितिणिनि च
प्रत्ययेपरे ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि जिस प्रत्यय का भ्म् शेष हो
गया होतो धातु के रूपान्तर (अन्तरात्मकेष्वन्तरात्मम्) भन् का वात हो
जाय इस लिये धातुसार उदात्त प्रकार के भग को भातू हुआ जैसे —

(आ+वाङ्+य) पुन (अनङ्कशब्दरूपपर वर्ण
माधयेत्) ॥

इस वाक्य में इस उदात्त रूपान्तर, यथा (भाङ्+य) फिर —

अन्तर्गत रूपान्तर करने से तथा अन्तरात्मकेष्वन्तरात्मम् में अन्तर्गत विधिक
का बहु बचनान्न होय न इस सिद्ध हुआ (अन्+भाङ्+वृत्+य) इति ॥

अब धातु में इस वं रूपान्तर दिखाने हैं अन्तर्गत धातु,
प्रत्यय धातु में सर्व धातु में ॥ १ अस्ति भाङ्+वृत्+य वं प्रकार के
वाक्य धातु के रूपान्तर में यह सूत्र अति वादव दिदा गया है
जैसे कि —

आनार्थचोच्च ॥ आ० अ० ८ पा० १ सू० ७३ ॥

आनार्थ शब्दे चस्यान् इत्थम् अग्नचभवति ॥

अन्तर्गत भाङ्+वृत्+य प्रकार के भग इस धातु में अन्तर्गत
होने है इति —

ऐस रूप हुए यथा (भाङ्+वृत्) अन्तर्गत धातु —

क-ग-च-व-न-द-प-य-वा प्राणालुर् ॥

आ० अ० ८ पा० १ सू० १७७ ॥

स्वरात्परेषामनादि भूतानामसयुक्तानां कम् च
जतदपयवाना प्रायोलुग् भवति ॥

इस सूत्र से (भाचर्य) ऐसे रूप के भा वकार का लोप होगया,
जैसे (भाचर्य) (भाचर्य) फिर —

अवर्णोयध्रुति ॥ प्रा० ङ्या० अ० ८ पा० १ सू०
१८० ॥ कम्चजेत्यादिनालुक्सति, शेष
अवर्ण अवर्णात्परा लघुप्रयत्नतरयकार ध्रुति
भवति ॥

इस सूत्र में यह ध्यन है कि जिसके क म च त द प य इत्यादि
लोप हो गए हों। शेष आ मकार रहजाये, जो कम के स्थान पर
यकार भी हो जाता है सा इसी नियम से कम स्थान में शेष मकार के
स्थानोपरि यकारादेश होगया तब ऐसे रूप हुए (भाचर्य) (भाचर्य)
(भाचर्य) पुनः—

स्याद्भयचैत्यचौर्यसमेपुयात् ॥ प्रा० अ० ८ पा०
२ सू० १०७ ॥ स्यादादिपुचौर्य शब्देन समेषु-
चसयुक्तस्य यात् पूर्वइद् भवति ॥

इस सूत्र में यह कथन है कि स्याद् भय चैत्य चौर्य इत्यादि
शब्दों में द्वित्व शब्द से पूर्व इत् हो जाता है इसी न्याय से रेफ यकार
के योग मर्णात् द्वित्व होने से रेफ को हट होने से ऐसे रूप हुआ,
(भाचर्य) पुन चण्टी का बहु ध्वनन माम् प्राचय हुआ, तो (भाच
र्य + माम्) ऐसे रूप हुआ पुन माम् को (टा आ मोर्ण) इस सूत्र
से माम को नकार होजाने से (भाचर्य + ण) हुआ, पश्चात् —

(जस् शम् ङसित्तोदोद्गामि दीर्घ)

इस सूत्र से पूव स्वर दीर्घ होगया, यथा (भाचर्य + ण) पुनः—

(इत्याद्यादेमस्योषी) इस सूत्र से यकार का गिराना से मनु
 स्कार हो गया, फिर परिपठक्य ऐसे हुए (नमो मायटिपाय) या
 (नमो मा मायटिपाय) का (नमो माहटिपाय) तथा (अर्णेव्यश्रुति)
 इस सूत्र से यकार का मकार भी हो जाय है तब (मायटिम) ऐसा
 बन बना, किन्तु —

अनोरिआररिङ्गरीज ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू०
 ६७॥ आङ्चयेअकारात्परस्यर्यस्यरिअ अर रिङ्ग
 रीअइत्येते आदेशा भवन्ति ॥

इस सूत्र का मय प्राप्ति नहीं है और दोष कार्य प्राप्ति हा है ॥

॥ इति मायटिपाय शब्द की साधनिका ॥

॥ अथ उपाध्याय शब्दकी साधनिका ॥

उर और अथि उपपत्ति पूर्वक इह् मकाराने घट्ट को घञ् प्रत्य
 यान्न हो कर उपाध्याय शब्द बनता है जैसे कि (उप+मधि+इह्)
 ऐसे स्थित है पुनः—

इह् । शा० अ० ४ पा० ४ सू० ४॥ इहोऽकृतंरि
 घञ् भवन्ति । अद्याय । उपाध्याय ।

इस सूत्र ॥ इह् मकाराने घञ् को घञ् प्रत्य की प्राप्ति हुई
 त (उप+मधि+इह्+घञ्) ऐसे बना पड़ता है घञ् प्रत्य की
 हस्त्या होने से दोष हुआ और ये—(उप+मधि+इ+म)
 ऐसे हो रहा, किन्तु अकार की हस्त्या होने से—

आरैचोऽश्वादे । शा० अ० २ पा० ३ सू० ८४ ॥ प्रकृ
तेरचा मादरच आ आर् ऐच् इत्येते आदेशा
भवन्ति त्रिणि णिनि च नञिने प्रत्यये परे ॥

इस बात को हटार को हम सूत्र से बेकार हो गया पुनः—

(उप+अधि+दे+म) ऐसे प्रयोग हुआ कि—

एचोऽह्य यवायात्र ॥ शा० अ० २ पा० १ सू० ६९ ।

एच स्थानयथा सख्य अय् भर् आय् आव्
इत्येते आदेशा भवन्ति अचि परे ॥

इस सूत्र से बेकार क स्थान में भाव होने से (उप+अधि+माय्
+म) ऐसा प्रयोग बना तो (मन-ए शब्द रूप पर रण माधयत)

इस पद्यानुसार (उप+अधि+माय) ऐसा रूप बन गया कि—

दीर्घ ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ७७ ॥

अक स्थानेपरेणाचा सहितस्य तदासन्नो दीर्घो
नित्य भवत्यचि परे । यथा दण्ड अग्र दण्डाग्र ॥

हम सूत्र से उप उपमार्ग के पक्षरका मकार मार अधि उपमार्ग
के मारि का मकार उभय मिलकर दीर्घ होने से (उप+अधि+माय) ऐसे
रूप बना पुन—

अस्त्रे । शा० अ० १ पा० १ सू० ३ ॥

इक स्थाने यजादेशो भवति अस्त्रेऽचि परे स च
अथवा इक परोयन् भवति अम्प्रेऽचि परे ।
द्वयत्र ॥

इस सूत्र से हटार को पक्षर हो गया १ व (उप+अधि+माय)
ऐसे रूप बना पुन—

मनस्वशादेति यवन स्ते(उपाध्याय) रूपद्रुमा, पुन मनस्वशार्यं न
(शकार्य वषणूनम स्वस्ति स्वाहा स्वधाहिनै)

शाकटायन व्यकरण के इस सूत्र से चतुर्थी विनन्ति का बहुवचन
इयम् प्रत्यय होने से तथा मनस् मायय पूत्र होनेसे (मना उपाध्या ये
इया) देमा परिपह रूप,ससकृत भाषा में ठा निन्द होगया किन्तु मय
प्राकृत में त्रिप प्रचार रूप बनता ह सो देखिये। यदा (उपाध्याय)
ऐसे स्थित है तब—

ह्रस्व सयोगे ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० ८४ ॥
दीर्घस्य यथादर्शनसयोगे परे ह्रस्वो भवति ॥

इस सूत्र से (उपा) का पछार ह्रस्व होगया तो (उपाध्याय) ऐसे
रूप बना पुनः—

साध्वम ध्य ह्याह्न ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० २६ ॥
साध्वसेसयुक्तम्यध्यह्योश्चक्षोभवति ॥

इस सूत्र से (ध्य) मात्र का ह्र हुमा फिर (उपाध्याय) देमा प्रयोग
बना तो :—

पोव ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २३१ ॥ स्वरात्प-
रस्यासयुक्तस्यानादे पस्यप्रायोवो भवति ॥

इस सूत्र से पछार को पछार हाजाने से (उपाध्याय) ऐसे रूप
बना, पुनः—

अनादौशेषादशयोर्द्वित्वम् ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० ८९
पदस्यानादौवर्तमानस्यशेषस्यादेशस्यचद्वित्वभवति

इस सूत्र में यह वचन है कि यदि निम्न कादेश रूप छछार
के हा रूप होजाने हैं जैसे कि :—(उपाध्याय) पदचान् ।

कगचनदयवाप्रायो लृक् ॥ प्रा० अ० ८ पा० १
 सू० १७७ ॥ स्वरात्परेषामनादिभूतानामसयुक्ता
 ना कगचतदपयवाना प्रायोलृग् भवति ॥

इस सूत्र से ककार का ट्य होने से गेप एकार अणत् (लोप)
 ऐसे प्रयोग हुआ, फिर 'सब छ' द का—

सर्वत्रलव्वरामवन्द्रे ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू०
 ७९ ॥ वन्द्रे शब्दादन्यत्र लव्वरामर्वत्र सयुक्तस्यो
 र्वमधउन्मिथनानालृग् भवति ॥

इस सूत्र से सयुक्त रेफ का लोप हागवा जैसे सब) मपितु
 (अनादौ शेषादर्थान्तिवम, इस सूत्र में गेप एकार द्वित्व हो
 गया यथा—(सब) अणत् (ननालादिसम्ब) रूप बना फिर (राध-
 साधससिद्धो) इस माध धानु वः—

कृवापाजिमिष्वदिमाध्यमभ्य उण् ॥
 शा० उणादि० पा० १ सू० १ ॥ दुष्टृज् करण । वा
 गतिगन्धनयो । पापाने । जि अभिभवे । दुमिज्
 प्रक्षेपणे । प्वद् आस्वादने । साधससिद्धो ।
 मग्नव्याप्तौ । एभ्योऽष्टधातुभ्यउण् प्रत्यय
 स्यात् ॥ माघानिगकार्यमिनिमाघु सञ्जन ॥

० सत्रनिष्ट्वरिष्वलष्व शिवपदप्रहेष्वानन्त्रे ॥
 उणादिश्रुति । पा० १ सू० १५३ ॥ सर्वादयावन
 प्रत्ययान्तानिगात्यनेऽनन्त्रेऽवर्तार सृगता । म-
 निरवगपम् ॥

- १-(नमो अरिहताण) (णमो अरिहनाण)
 (नमो अरिहताण) (णमो अरिहताण)
 (नमो अरुहनाण) (णमो अरुहताण)
 (नमो अरुहताण) (णमो अरुहताण)
 (नमो अरहताण) (णमो अरहनाण)
 (नमो अरहताण) (णमो अरहताण)
-

- २-(नमो सिद्धाण) (णमो सिद्धाण)
 (नमो निद्धाण) (णमो निद्धाण)
-

- ३-(नमो आयरियाण) (णमो आयरियाण)
 (नमो आयरियाण) (णमो आयरियाण)
 (नमो आपरिआण) (णमो आयरिआण)
 (नमो आयरिआण) (णमो आयरिआण)
 (नमो आइरियाण) (णमो आइरियाण)
 (नमो आइरियाण) (णमो आइरियाण)
-

- ४-(नमो उवज्झायाण) (णमो उवज्झायाण)
 (नमो उवज्झायाग) (णमो उवज्झायाण)
-

- ५-(नमो लोएसज्वसाहूण) (णमो लोएसज्वसाहूण)
 (नमो लोएसज्वसाहूण) (णमो लोएसज्वसाहूण)
-

अथ चूलिकापञ्च पदों का माहात्म्य रूप गाथा ।

उमोपच नमाक्रारा, मन्त्रपात्रपणामणा ।

मगलाणच मन्त्रमि, पढम हउड मगल ॥

शशाङ्क — (यसा) (यसः) यह (यस) (यस्य) यच्च (नमोऽकारो)
(नमस्कारः) नमस्कार रूप यह (यस्य) (सस्य) सारे (पात्र) (पात्र)
पात्रों के (पणामणा) (प्रणामना) प्रणामना रूप हैं मयान् पात्रों के
मष्ट वानवाह ह (मगलाण) (मगलाना)मगलाक है (य) (य) और
भाविता शाय्य है (सन्त्रासि) (सर्वश) सर्वस्याना परि पडे हुए(पढम)
(प्रथम) प्रथम अथान् दृष्टादि पदार्थों ॥ १ ॥ (न्यह)(भवति) हाठा
है (मंगल) (मङ्गलम्) मङ्गलोक ॥

भाषार्थ — इस मन्त्र मन्त्र के पात्रच दा नमस्कार रूप यह सर्व
पात्रों के नाश करने वाल है तथा मगलाक और सर्व दयानावर्तिपडन
दिये हुए दृष्टादि पदार्थों से भी पण्डिते मगलोक हैं क्योंकि अनन्त
शुल मुक्त महा मन्त्र है ॥

॥ अथ ओम् शब्द निर्णयः ॥

प्रियम्न मुक्थो — पात्रच पदों का दा बीज रूप ओम् शब्द बनता
है जैसे कि—

॥ गाथा ॥

अरिहंता अमरीरा, जायरिषउपञ्ज्ञाया ।

मुनिणोपचरपर निष्पण्णो ओंकारो पचपरमेही ॥

अर्धान्वय — (अरिहता) (अर्हन्ता) अर्हन् शब्द का आद्यवर्ण
 अकार है (असरीरा) (अगरीरा) अगरीरा शब्द जोकि सिद्ध
 पद का ही वाचक है तिसका भी आद्य वर्ण अकार है पुनः (भाषरिया)
 (भाषाया) भाषाय पद का आद्यवर्ण अकार है तथा (उवाच्याया)
 (उवाच्याया) उवाच्याय पदका आद्यवर्ण उकार है और (मुनिपि)
 (मनिप) मुनि पद का आद्यवर्ण स्वर रहित मयात व्यञ्जन रूप
 अकार है इन पाँचों का एकत्र करना (पञ्चमर) (पञ्चाक्षर) पाँचा
 क्षर जैसे द्वि(अ + म + मा + उ + म) (निष्पन्नी) (निष्पन्न) निष्पन्न
 (मोक्षरा) (माक्षर) आम् शब्द है सो (पञ्च परमेष्ठो) (पञ्च परमेष्ठि)
 पञ्चपरमेष्ठि का ही वाचक है ।

मन्वाद्यः—पाँच पदों में स पूर्व क दो पदों के आद्य वन अक्षर
 हैं तृतीय पद का आद्यवर्ण अक्षर है तथा चतुर्थ पद का आद्य वन
 उक्षर है भार पञ्चम पद का आद्यवर्ण अक्षर है अब पाँचों की एक
 स्थता से —

(अ + म + मा + उ + म) एसा प्रयोग स्थित है पुनः—

दीर्घ ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ७७ ॥
 अरु स्थाने परेणादा सहिनम्य तदासन्नो दीर्घो
 नित्य भवत्यचि परे ॥

इस सूत्र से अक्षर दीर्घ हांगवा तब (अ + मा + उ + म)
 ऐसे का हुआ ता —

ओमादिप ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ८६ ॥
 अवर्णम्य म्याने साच पगेऽनादेशो भवनिओ
 शब्दे आदादेशेचरे ।

इस सूत्र से आचार्य पद का आकार पर रूप होगया तब ओप (आ+उ+म्) ऐसे रहा ॥

इक्चेडर् ॥ शा० अ०१ पा०१ सू०८२ ॥

अवर्णम्यस्यानेपरेणाचामहिनस्यक्रमेण एङ् अर्
इत्यादेशाभवन्ति इकिपरे ॥

इस सूत्र से अण उर्ण एङ्य हाने पर ओकार होगया । तब ऐसे रूप हुआ ।

जैसे कि —(ओ+म्) पुनः —

मम्मोहलिनो ॥ शा० अ० १ पा०१ सू० ११६ ॥

ममागमस्यपदान्तस्यच मकारस्य परस्वोऽनुना-
सिकोऽनुस्वारश्चपर्यायेण भवन्ति हलिपरे ।

इस सूत्र से मकार आ स्वर रहित व्यञ्जन रूप है तिस का अनुस्वार होगया । तब (आ) ऐसे रूप बन गया । पुनः—

आम प्रारम्भे ॥ शा० अ०२ पा०३ सू०२१ ॥

प्रारम्भेवर्तमानस्याम प्लुतोवाभवन्ति ॥

ओ३म् ऋषभपवित्रम् । आ३म् श्री शान्ति
रस्तु सुरमस्तु । प्रारम्भेति रिम् ओम् इत्यादि ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि प्रारम्भ (आदि) में वर्तमान ओम्

● किम्भी २ व्याकरण का यमा भी लेत्र है यथा—

इलोक -अदीर्घोदीर्घनापानि, ताम्निदीर्घम्यदीर्घना ।

पूर्वदीर्घस्वरदृष्ट्वा, परलोपोविधीयते ॥ १ ॥

विश्व में प्रसृत हो जाता है ॥

उक्त शब्दों से 'गाम्' शब्द पश्य पद का ही अर्थ निकल आता है ॥

इस लिये विद्वानों ने 'गाम्' शब्द को पाष पदों का बोध प्रदान किया है।

॥ इति गुणः ॥

॥ इति महामहोपाध्यायः समाप्तः ॥

उल्लोक - ज्ञानप्रदक्षिणीकृत्य, उद्धतनविलम्बितम् ।

अहलिम्फोटनदुर्यान् मामात्रेनिप्रकीर्तिना ॥१॥

चटकोरोत्येकमात्र द्विमात्रौनिवायस ।

त्रिमात्रतुगिम्बीरोति ह्रस्वदीर्घप्लनक्रमात् ॥२॥

॥ इति ॥

ॐ योगशास्त्राय नमः ।

* प्रार्थना *

विद्युत्वायु मणो च सम्पन्न मदिशामय राखणपाथों का उपयोग
 की नैतमय भाषने दाग छे जिन् प्रकार से भाषा है । विद्यु के धारण
 करने से भाषा प्रमाण व मन्दावारी बनाने हैं । जिन् के धारण करने
 से भाषा मन्दावारी व मन्दावारी बनने हैं । विद्यु के धारण करने से
 भाषा प्रमाणों व भाषा प्रमाणों । जिन् के प्रमाण से भाषा मन्दावारी
 बनने मन्दावारी मन्दावारी मन्दावारी व मन्दावारी बनने हैं ॥

[illegible][illegible]

जिन के महान् परिधमका पत्र भाष लोगों की दृष्टि गोचर होगया है। अथि तु शाह से बड़ा पड़ता है जिन भाचार्यों ने भाष लोगों पर इतना परोपकार किया किन्तु भाष लोगों ने उन के भूम्य परिधम का पत्र कुछ भी न दिया शाह ॥

मला कहा भाष लोगों ने उनके नाम की कोई संस्था स्थापन की ? क्या भाष लोगों ने उन भाचार्यों के रचित पुस्तकों को पढ़ा ? या उनका पुनर्प्रचार किया ? कुछ भी नहीं तो क्या यह शाह का स्थान नहीं है ? अथय है ॥

मला भाष दूर की बात जान दीजिये। किन्तु समीप काल की छीजिये। बड़ी भाचार्यों में से एक महान् भाचार्य परम जैनोद्योत करने वाले जिन्हीं ने अनेक हा कष्ट सहन करके इस पवित्र जैन धर्म का स्थान २ प्रकार किया फिर पापक मत्र का पप्रव किया पत्राव द्य ॥ जिन्हीं ने विशेषकरके जनधर्म का प्रचार किया। सत्य मार्ग भव्य सत्तों का मुक्ति पत्रक बनटाया। ऐसे महान् गुणा के धारक भीमद याबाय भमर सिंह जो महाराज हुए हैं। तो मला भाष लोगों ने उनका नाम बिरुपावि बनने का क्या प्रयत्न किया शोक। ऐसे पर मोपकारी महामा का नाम से कोई भी संस्था न हो ॥

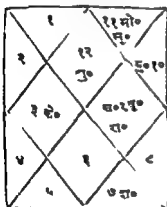
दखिये विशाल हृदय के धारक महान् भाचार्य की दया इस दुहायसणिनी काल के प्रभाव से मिथ्याचारको सदैवशाल हो वृद्धि है इसी कारण से जिनक भ्रष्टात जन यह करने लग गये थे कि गृहस्थी लोगों की सूत्र पढ़ने करने नहीं करपते हैं क्योंकि उन लोगों के मन में यह विचार था कि यदि गृहस्थ लोग भी सूत्र पढ़ने लग आवेंगे तो उस का फल हमारे लिये गुन न होगा इसलिये यह लोग सूत्र के पत्र का गृहस्थ लोगों का निषेध करते थे ॥

अपितु उक्तविशाल हृदय महर्षि ने सत्तों द्वारा यह सिद्ध किया कि मर्दन् धान के धार हो सध भविजारी ह धार ला सध याग्यता धारण करते हुए सूत्रों का पठ सकते हैं। सा दखिये उक्त महर्षि ने कैसे

अथ शुद्धि पत्रम् ।

प्रियसुख जनों ! पृष्ठ ८ ३४ ८६ को जमकुण्डलियों में किञ्चित् मात्र मगुदिये रह गए हैं इस कारण से निम्न लिखित कुण्डलियों को अनुकनता से गुड़ हात करना चाहिये । यथा :—

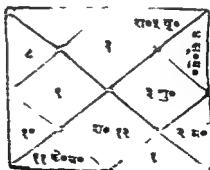
पृष्ठ ८ की



पृष्ठ ३४ की



पृष्ठ ८६ की



पृष्ठ	पङ्क्ति	मनुसूत्रि	गुडि
१	१३	वचना	वरे
२	९	नृपयै	नृपययै
३	१४	माकश	मज ग
३	१५	द्वेनाम्बर	द्वेनाम्बर
३	१७	जममर्गोपर	जमममर्गपर
५	१७	भीमो	भी
६	४	दे	दे
६	६	दे	दे
६	७	गुप्तोमिन	गुप्तोमिन
६	१०	कमल	कमल
७	२१	गणिक	गणिक
७	२३	मनन	मनन
१०	१९	विनयी	विनयी
१०	२२	मन	मन
११	१८	त्रिभक्त	त्रिभक्ते
११	२०	क्षत्री	क्षत्रिय
१२	१	अथ	अथ
१२	१३	वपुः	वपुः
१३	१८	अथ	अथ
१४	६	अथ	अथ
१४	१३	अथ	अथ
१५	१४	विष्णु	विष्णु
१५	१४	दे अथ	दे अथ
१५	१०	अथ	अथ
१५	२१	अथ	अथ

पृष्ठ	पंक्ति	अनुदि	पुदि
११	२	षड्विध	षड्विधं
११	४	सूत्रनसार	सूत्रानुसार
१७	२	ह	हे
१७	४	समे	सहोदर
१८	११	फिरोजपुर	फिरोजपुर
१८	१३	बीमास	बीमास हे
२०	१७	एग्य	एव
२०	२३	मनिष्ठा वरप को	मनिष्ठावरप को
२१	१४	विक्रमाब्द	विक्रमाब्द
२१	२५	क	के
२२	१२	कि	कि
२४	१२	करके	करि कि
२४	१९	सूत्र	सूत्र
२६	२२	हाति हे	•
२७	११	पञ्चम	पञ्चम
२८	२४	परचातु	परचात
२९	४	कधोरी	कधोरी
३०	१३	केशर	केशर
३०	२५	जैन समाचार	जैन समाचार
३	२१	महत्त्व	महति
३	२२	जैसे	जैसे
३१	२६	हट	हट
३३	११	मिष्टपात	मिष्टान्न
३७	२१	जोरा	जोरो
३८	५	चातुसाहार	चतुषहार

पृष्ठ	पंक्ति	मनुसूचि	सूचि
४०	१	कल्पित विनाश के	कल्पित
४०	४	हे	हे
१	१०	आमापि	अद्यापि
११	११	मन्मथरईन	मन्मथरईन
४१	१०	मकटेह	मकटेहैं
४१	११	वधाय	वधाय
१	२१	अम	अममन के
४४	२१	मनकल	मनकल
४५	१	वन्त	वडन
१		मार्मिजि	मार्मिजि
	१०	२	२२
	२३	मन्मथ	मन्मथ
४१	१०	मन्मथ	मार्मिजि
४३	९	१	१
	१३	उन्मथ	उन्मथ
१	१४	विद्वान	विद्वान
	१	मन्मथ	मन्मथ
	११	विद्वानाचार्य के	विद्वानाचार्य के ।
४		मन्मथ	मन्मथ
४१	४	मन्मथ	मन्मथ
४०	२	मन्मथ	मन्मथ
४०	११	मन्मथ	मन्मथ
४	१४	मन्मथ	मन्मथ
४१	११	मन्मथ	मन्मथ
४२	२१	विद्वान	विद्वान

પૃષ્ઠ	પાત્ર	મનુષિ	નુસિ
૫૧	૨૫	દરેલ	દરેલ
૫૭	૭	તરવન	તરવન
"	૧૮	ભાગલાલ	ભાગલાલ
૫૮	૧૫	દરેલ	દરેલ
"	૧૮	સ	સ
"	૧૯	સ	સ
૫૯	૨	દુર્લભ	દુર્લભ
"	૨	દિગ્ગજ	દિગ્ગજ
"	૨૩	સાધુ	સાધુ
"	૨૫	દરેલ	દરેલ
૬૦	૧૧	વજ્ર	વજ્ર
૬૦	૨૪	મનુષ	મનુષ
૬૧	૧	મહિષા	મહિષા
૬૧	૧૦	સાધુ	સાધુ
૬૧	૨૦	વર્ણ	વર્ણ
૬૧	૧૦	વર્ણ	વર્ણ
૬૨	૧૦	વર્ણ	વર્ણ
૬૨	૨૧	દ	દ
૬૨	૨	દ	દ
૬૨	૧	દ	દ
૬૨	૧	દ	દ
૬૨	૨૧	દ	દ
૬૩	૨	દ	દ
૬૩	૧૭	દિગ્ગજ	દિગ્ગજ
૬૩	૨૧	મનુષ	મનુષ

पृष्ठ	पङ्क्ति	मन्त्र	पुनः
५१	२५	दूटेराय	दूटेराय
५७	७	तपमन्त्र	तपमन्त्र
"	१८	भायवाळ	भायवाळ
५८	१५	दूटेराय	दूटेराय
"	१८	स	से
"	१९	जसे	जैसे
५९	२	दुर्ग	दुर्ग
"	२	दित्तनहा	दित्तने हो
"	२३	साधु	साधु
"	२५	बद्धसक्त	बद्धसक्ते
६०	११	पञ्चन	दूजन
६०	२४	भगवान्	भगवान्
६१	१	महिषा	महिषा
६१	१०	सुश्री	सुश्री
६१	२०	पर्व	दुर्ग
६२	१०	पत्न्य	दूज्य
६३	१०	बद्ध	बद्ध
६३	२१	ह	॥
६१	२	दृष्ट	दृष्ट
६१	९	उद्धत	बद्धत
६१	१	यो	यो
६१	२२	यो	यो ।
६७	२	भार	भार
६७	१७	लिखने	लिखते
६७	२१	नमस्कार	नमस्कार

पृष्ठ	पङ्क्ति	अनुलि	गुलि
८१	८	११४	११६
८७	७	१	६
८८	१	जग	जैग
८९	५	लिचिने	लिचिने
८९	२३	आमाम	आमाम
९०	२१	आपहै	आपये
९१	१२	हे	५०
९१	१९	दागगा	दोगये
९२	२	दागगा	दागगा
९२	७	लिचि	लिचि
९३	७	जग	जैग
९४	१७	पदबान	पदबान
९५	१७	पदबान	पदबान
९९	३	जिनह	जिनह
९९	७	होगा	होगा
९९	११	कष्टम् कष्टम्	कष्टम् कष्टम्
१००	३	१	१
१००	१३	धीराम	धीराम
१०१	११	हावेने	हावेने
१०२	५	६	६
१०३	८	करनेस	करनेस
१०४	४	५०	५०
१०४	५	करने	करने
१०४	१६	कद	कद
१०५	१३	कद	कद

पृष्ठ	पंक्ति	अनुलि	नुलि
८१	८	११क	११के
८२	७	१	६
८८	१	उन,	उन
८९	५	टिचिने	टिचने
८९	११	भाभाराम	भाभाराम
९०	११	भापट्टे	भापट्टे
९१	१२	हे	के
९१	१९	होगण	होगणे
९१	३	हावण	हावण
९१	७	लिण	लिण्टे
९१	७	उन	उन
९४	१७	परवण	परवण
९५	१७	परन्	परन्
९९	३	विण्ड	विण्डे
९९	७	होणे	होणे
९९	११	बण्टन् बण्टन्	बण्टन् बण्टन्
१	६	१	१
१००	११	धीहान	धीहान्
१०१	११	होटेण	हावेण
१०१	५	६	६
१०१	८	वरनेसे	वरनेसे
१०४	४	को	को
१०४	५	करन्	करन्
१०४	१६	उन	उन
१०५	११	एण	एणे

पृष्ठ	पंक्ति	अनुच्छिन्न	अनुच्छिन्न
१०७	१२	य	ये
"	१५	ह	है
"	२२	म	मे
१०९	२४	सुघन्मनीले	सुघसतहे
१११	२१	मही	महीं
११२	१	चढचछ	चढचज
"	२७	आर्याय	आयाये
११३	४	सम्मत्यानुसार	सम्मत्यनुसार
११३	४	१९५२	१९५१
"	६	गणावच्छेदिका	प्रवक्षिका
"	२३	कसे	कैसे
११४	११	प परा	परपरा
"	२५	मतिपजा	मतिपजा
११५	२३	महीं है	मही है
११६	६	मोतोरम	मानीराम
११६	२३	१९६१	१९६२
११७	१४	मृति	मृति
११८	४	मे	मे
"	५	से	से
"	१३	योगों	योगों
"	१८	म	म
११९	१९	क	के
१२०	१२	मूर्तियाँ	मूर्तिपाँ
१२२	२०	पजा	पूजा

पृष्ठ	पंक्ति	मनुदि	मुदि
१२२	२	सत्र	सूत्र
"	३	डी	डीके
"	१०	द्यौ	द्यौ
"	१७	मयन	मयात्
"	२०	वय	वैत्य
"	२१	रभ	राभ
"	२१	वरणो	वरनी
"	२३	वय	वैय
"	२३	वरय	वैत्य
	२५	मृनि	मृति
१२३	८	क	क
१२४	४	मनक	मनेक
१२५	३	१०११	१०१३४
"	६	रेपु	रेपु
१२६	२४	तृतीय	तृतीय
१२७	२४	वज्रिदाधार	वज्रिपाखोर
१२८	१	सत्र	सूत्र
१२९	२७	पञ्चा	पञ्चा
१३१	११	राजदे	राजा दे
१३३	१९	जाय	जैय
१४१	८	राज्यवन	राज्यदापन
१३३	२३	वज्र	वज्र
१३७	११	देसे	देसे
१३९	४	टोह	टोह
१४०	२१	मोर	मोर

पृष्ठ	शक्ति	अनुदि	शुदि
१०७	१२	घ	वे
"	१५	ह	है
"	२२	म	मैं
१०९	२४	सुयन्नतोलो	सुयषतले
१११	२१	नही	नहीं
११२	१	चटचज	चटचज
"	२७	मायाय	मायाये
११३	४	सम्मस्यानुसार	सम्मस्यनुसार
११३	४	१९१२	१९५१
"	६	गणावच्छेदिका	प्रशक्तिका
"	२३	कसे	कैसे
११४	११	प परा	परपरा
"	२५	मतिपञ्चा	मतिपञ्चा
११५	२३	नहीं है	नहीं है
११६	६	मोतीरम	मोतीराम
११६	२६	१९६१	१९६२
११७	१४	मृति	मृति
११८	४	मैं	मैं
"	५	ख	खे
"	१३	लोगों	लोगों
"	१८	म	म
११९	१९	क	के
१२०	१२	मूर्तियाँ	मूर्तियाँ
११९	२०	पञ्चा	पञ्चा

પૃષ્ઠ	પત્ર	અનુદિ	નુદિ
૧૨૨	૨	સુત્ર	સુત્ર
"	૩	ઝી	ઝીદે
"	૧૦	ઝી	ઝી
"	૧૭	ઘર્ષાત	ઘર્ષાત્
"	૨૦	ઘર્ષ	ઘર્ષ
"	૨૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ
"	૨૧	ઘર્ષી	ઘર્ષી
"	૨૩	ઘર્ષ	ઘર્ષ
"	૨૩	ઘર્ષ	ઘર્ષ
"	૨૫	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૨૧	૮	ઘ	ઘ
૧૨૪	૪	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૨૫	૩	૧૦૧૧	૧૦૧૧
"	૧	૧૦	૧૦
૧૨૬	૨૪	ઘર્ષી	ઘર્ષી
૧૨૭	૨૪	ઘર્ષી	ઘર્ષી
૧૩૦	૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૧	૨૭	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૨	૧૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૩	૧૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૫	૮	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૬	૧૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૭	૧૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૩૮	૪	ઘર્ષ	ઘર્ષ
૧૪૦	૨૧	ઘર્ષ	ઘર્ષ

पृष्ठ	पंक्ति	अनुलि	गुलि
१०७	१२	व	वे
"	१५	ह	हे
"	२२	म	मे
१०९	२४	सुयन्ननीले	सुयषठने
१११	२१	नदी	नदी
११२	१	घटवज	घटवज
"	२७	आपाय	आपाय
११३	४	सम्प्रदानुमार	सम्प्रदानुस
११३	४	१९५२	१९५१
"	६	गणावच्छेदिका	प्रवत्तिहा
"	२१	कसे	कैसे
११४	११	प परा	परपरा
"	२५	मतिपना	मतिपजा
११५	२१	नहीं है	नदी है
११६	६	मोतीरम	मोतीराम
११६	२१	१९६१	१९६२
११७	१४	मूति	मूति
११८	४	मै	मै
"	५	घ	से
"	१३	होगी	होगी
"	१८	म	म
११९	१९	क	के
१२०	१२	मूर्तिवा	मूर्तिवा
११२	२०	पजा	पजा

पृष्ठ	पङ्क्ति	मनुजि	शुद्धि
१२१	२	सत्र	सूत्र
"	३	जी	जीके
"	१०	झो	झो
"	१७	मघात	मघात्
"	२०	साय	सैय
"	२१	राह	राह
"	२१	बाघो	बागो
"	२३	सन्ध	सैय
"	२३	सत्य	सैय
"	२५	मूनि	मूनि
१२३	८	ह	ह
१२४	४	अनक	अनक
१२५	३	१०११	१०११४
"	६	रेपु	रेपु
१२६	१४	तुतीव	तुनीप
१२७	२४	ब्रह्मिण्यार	ब्रह्मिण्योर
१२८	१	सत्र	सूत्र
१२९	२७	पत्र	पत्र
१३१	११	राह	राह
१३३	११	जी	जी
१३४	८	राह	राह
१३५	११	राह	राह
१३६	४	राह	राह
१३७	११	राह	राह

